

लाचम(नाह्य वामाहित विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् व विमयम्(नाह्य वामाहित विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमयम्(नाह्य वामाहित्य विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् विमय्याम् व्यामान निक्त के में मान के मा



(मेळाल्ड्याभनीरुमेजानाअयूर्जर्द्दिनान(यनम्यान्डा-१०४) विस्तान्छिर्हभनिक्षाम्डी १००१ (माक्षेत्रो प्रक्षाभनीरुमेजानाअयूर्जर्दिनाना प्रकार्विकान्छिर प्रकारिक विस्तान्छित्र ।

उनागंत्रव्यथानः गृन्द्रवाम गुम्भ्यायवामित्र विकात विक कर्याय्तिः गण्याकात्राह्मित्रात्वेष्मार्गेष्ये वर्षे (योग लोहें वास स्त्री भिन्नाकमकी क्करोण विखा: गर्ड भिन्द्र खिक्जा स्थेय मन भा साहे ज साह मा कर भेथा शो भेभ शम् विख्योभर कि। भगिवनमञ्जी अञ्चल शियानि ।

विकालनाम् श्रुम्पत् प्रवेषाः । वर्षाः न्यतः प्रकालः म केन्द्रः म्यराम् अभिकालादः व्यव्याम अविष्यामहात् । विद्वित १००१ । १००१ । १००१ । १००१ । १००१ ।

य्विस्त्र भूवास्व के भाषामन् श्राच्य वम् श्रविष्ठ ने गृत्वाहिकारा विकास मान्य विषय ग्राम्य विषय विकास करिया विकास रिभेरावान्यप्रभूशिकारूनियः म्याञ्चाक्षाविशेज्र रूपमा उत्काउभर्न भार्यभाखिलक्षियापिवृध्वि यह श्रमा नरावा भी श्रम रहा वन माना नियम् क्र भवेदण्य श्रानक्क वि किस्टिन वक्ष भरिषि र किस्टिन क्षे पानित्रश्राञ्च नम् माध्वाम् वर्गामालः भन्तेवान्ये विश्ववाज । भन्ने क्षिण एक विरुव वर्ग यप् वर्ग या वर्ग

न्त्रीनश्रद्यो १२१ माहिन्द् के महत्वण्य १-आञाका त्रक्णाह मध्यकणण्यकार्तिकाचि १४० । अनुभाष्यंतः अनुष्यतः आवस्त के प्रकृतिकार्या वस्ता १८०

क्राः विश्वित्रमां ग्रूमीनं र्याना ज्यारे शिख्वं येने विद्या ग्रेम भावित्र विद्या में क्या में क्या निविद्या में विद्या में क्या में क्या निविद्या में क्या में क्या निविद्या र्ज्यथानाके विश्वष्ये ज्यामीना श्रक्तमातीनी एप्टर्ना में महत्य प्राप्त कि स्वामा श्वानि है इंड वह मनः प्रार्थिय के क श्रुकानि (नर्द्र क्रायः मम् वया विकास्त्राज्य वत्रवाकीः अप्रज्ञन । श्रीयेयाद्न क्लभ मांचायादान्त्रीत्वाकाला क्रों व्यक्तिक त्रां शिक्षिक विश्व विश्व विश्व के मानेन भाषित्वाजाना जनभाष्मनः स्वानी रक्तान्या योजानी र्जवान्ताज्यमेक्तें: गमरुभे रामिने र्यार स्विमेक्ष्वार्शकि विलाश्लेष्ठ मेक्ना कि विल्ला प्रतिक में प्राचित्र के

न्भेण्याक्त्र विभावता विभावता विभावता विभावता विभावता क्ष्या क्ष्या विभावता विभावत

मैमामभारतिम ६ त्यायः

क्रिकीर्जिन इसी यत्नाहा (मार्नाहिकार्जीर्जि म् त्नी हा या अञ्जितिया कि ने वस्तानीप्रश्वाता में श्रुवानी विकास मार्गिया अभावित मार्गिया अभावित मार्गिया । उत्सिन् व त्रेम् इ श्रेष्ठ्या व भाषाव प्रकार की त्रे त्र स्व त्र स्व त्र का का का स्व य प्रवास म्मिन्यारिक वियायेणम्य स्व भवाष्यार । योग्राह्य क्वान्य मन्यु वहन अवार । ज्यात्व विकाहित ষাপ্রনা প্রনিকার্য্যা মেপজবিষ্ণতি শুক্টবাচ শ र्तिः भव्यान्त्रक्रिकिश्मित्रिक्षित्रिक्षित्र मिनं क्षित्र मिन्द्रक्षियामाङ्ग्यादि व्यमीक्ष्र भिक्षा मिनक्ष

निन्दाबाद्या (म्ब्स्टा श्रमार्ग श्रमार्ग में गरे १०

रकानिमिमा व मिनवरमं ज्ञाय प्रमाम विखे (में (का क्या निमित्र): निका वर्ड (ले तक प्रक्या मानव कर ज्ञानिव निक्र क्या कि काने कि कि काने कि काने

मिल्भेः वितं भेजमाने महेला में प्रेश्वां वानं प्रधानम्भाता महत्त्र मान्य महिल्यं भेज वित्र क्षेत्र महिल्यं भेजमान क्षेत्र महिल्यं भेजमान

भवगर्यायान्यीतिहरूभात्रि अवनेकाश्चेत्वतीभ्वात्र्यक्ष्मण्याविषाञ्चातिहरूमानिहरूमान्त्रीमाम्नेत्वाभिनाभविष्याय्येककायने नानीहरूपे प्रकृतिकिद्यात्राताय १००५ नेभवानि भारि १६ । तिर्नम् विक्री विक्रिक्षमार ति विक्रिक्षमा विक्रिक्ष वि गात्राक्त मेर्यायाका के निक्त वर्या कि प्रक् नणातिकनेय (येविकिनगेष्ठिण संयोदिक नित्वेविक्निक्षिण किन्ते के स्विक्षिण किन्ते विक्षिण किन्ति स्विक्षिण किन्ति सिन्ति सिन्ति सिक्षिण किन्ति सिन्ति सिन्ति सिन्ति सिन्ति सिन्ति सिन्ति सिन्ति सिनि (ठउ९ किम शिक्ष ने ग्रा ठिस्म भेरा भेरा भी विकासिय भ निविधान्य । एक अध्यान्य । भन्मा यो हिन्य यन श्रम् विश्वभानः भक्त ने जाया का किया वा मक ने पित्य स निविकावाक्र क्या भन्न अवस्या भन्न या विकार महानी सभीव (विगान् गेन् विज्ञाक निव क्षमाया विचिष्ठ समि समो स्याने युवा गोन् गोजा विस्व जिला गांचिर कि मिर्मार मा अतिर्गाहर अवक अस्तिर्गिष्ठिय व क्ष्मीणवर्षभाता २ (वाकी विति) के - गत्रविविध्याविक विकाल । स्वित् इंशकाहर आर् विश्वेष पृष्ठ व विविध्याति । के - गत्रविविध्याविक विकाल । स्वित् इंशकाहर आर् विश्वेष पृष्ठ विकाल । स्वित् विकाल । स्वित विकाल । स्वित् विकाल । स्वित विकाल । स शाकन का कि १०० । नव विक्तिति र र विक्ति के विक

ज्यना श्रामिक मिल्यू । नन् श्रामिक किल्पा वान नर्शा निक्तियानी वानिकि किन्या निक्ति । निर्मा निक्ति किन्य किन्य विकास किन्य क

(शाकिः । वृक्ष (यां वृक्ष (यां वृक्ष (यां वृक्ष विकार विकार । वृक्ष (यां वृक्ष विकार वृक्ष विकार विका

মিতিবিশেষ: १८४१ নিটি : শুরুপনি: শুরুজন: বিষ্ণু কুছ্রিমা ॥৪৯ শুঃ শুরুজ্মীপর্মানন্দ্রে বিনিছিমিশিরা বির্বিত শীমাদ্রা গাঁৱত পদ্রা বার্ম দিশি আ মাণ্ট্র শুরুজ কি শুরুজ্ম কি শুরুজ্জ স্থানিত প্রকৃতি স্থানিত প্রকৃত স্থানিত স্থানিত স্থানিত প্রকৃত স্থানিত স্থানি

(हमानेवासीम्मान्येः व्यर्थवाम्य व्यान्ते निर्णामत्व शादवास्मित्र क्षेत्र प्रत्य क्षेत्र क्

तिनेम्बरीण १८० १मभावनी विनी वार्गाक्त्र भाविति विक्थ्यकाः महाना एउ विश्व विक्था श्रम् । महाया श्रम् का क्ष्य विक्था विक्था के विक्या के विक्था के विक्या के विक्था के विक्या के विक्था के विक्या के विक्था के विक्य के विक्था के विक्था के विक्था के विक्या के विक्था के विक्था के विक्या के

अध्याल मार्यविवण्याली मार्या भिवा मित्रा के हथायन मर्वनिव र्यामीन का मयकि (मर्क्याण्यवाण के न्यंबोण्याकण नियमी अकिकाना मर्वनिक भववान यम्मानियानण निव विविधिक अक्षेत्र ने अविश्व की व्यक्ति के कि कि मिला मिनावा भिक्त करियां में विविधिक प्रश्ना मिन्य के प्रश्ना कि का कि का मिला कि का कि क

पर्भात्यकीर्र्भियान्यमभकात्वर्गकात्वर्भावमान्यत्वाहितामाञ्चात्वर्गमान्यत्वर्गनार १ भगवन्त्वन्नामाञ्च विकास । १ भगवन्त्रामान्य विकास । १ भगवन्त्रामान्य विकास । १ भगवन्त्रामान्य विकास । १ भगवन्त्रामान्य विकास । १ भगवन्त्र । १ भ

भूकिरीविक्टातिवर्ष भूक्तारिक रिक्ट ति निवा के श्वह भार्तिवा भार्तिक रें नुबा ना रहित के स्वी भार्ति भूक में राहिती हैं राहित के राहित के

शामिकप्रमेण्येक्षाले । यहाक्ष्यमेन महावादी कार्याक्षी कार्याक्षा । विकास महावादी कार्याक्षी विकास । विकास कार्याक्षी कार्याक्ष्य कार्याक्षी कार्याक्

महारामित प्रशासक निर्मा के निर्मा कि निर्मा के कि निर्मा कि निर्मा के कि निर्मा कि निर्मा के कि निर्म के कि निर्म

(मीटानंदलाहित्कः त्रमूळ्टे विवेकः अभिक्षिक्षभेत्रः म्हमभूक्षिकार्वकारे वर्षः न्हमभूके द्वारायनः नहानि विवेदिका निर्माण कर्ताहित क्ष्रमार्थिक मान्यावा कर्ताहित कर्ताहित कर्ताहित कर्ताहित कर्मा क्ष्रमार्थिक । भारति कर्ताहित करित कर्ताहित कर कर्ताहित कर कर्ताहित कर

क्व मन्छ भंगो (त्रक्षेत्रक गेहिवा मं निवामं का निवासं क

्यलानेलय्याक्याक्यात्राक्षणेत्रे जित्रकामं वृक्षानिय । यहार्माल । यहार्माल (यन् वाक्षणेत्र वाक्षणेत्र वाक्षणेत्र वाक्षणेत्र । यहार्माल (यन् वाक्षणेत्र वा क्रिक्ष के मिल्यिक्ष के क्रिक्ष के क्षिण के क्षिण के क्षिण क्षिण के क्ष्ण के क्ष्ण के क्षण के के क्षण के क्षण के क्षण के के क्षण के क्षण के के क्षण के क्षण के क्षण के क्षण के क्षण के के क्षण के क्षण के के क्षण के के क्षण क थन प्रतिमक्षे के भिष्म के वर्ष के महाविषे नाकी कि रिष्यक के भरताकी वासी के बो मिन ने मिषिय (में माज विकास माज नियम के मिल के मिल के कि रह मि॰ १२ न ताला विधावि १ (४ १ २०) वर्ण । १२ ने मिन विधावन केर यो १ (न दे का तार ता प्र में में न कि कि कि भेजः भेतः स्मान त्रीन माकाष्ट्र गेव स्च वायणः गुभ्रिष्ट्र य स्वाक किर्म्य विशिष्ठीय हुन एक विकार नामा कार्य के परे विकी मुख्ये ए भरा श्वार्गम्यभग्क् (क विजी (यार्थायः गृः ग्युक्डेवोद्यायये मक्छ। गार्भिं रानः भवेमर्गाचनः गुम् किनिक्न कर्मकर्मिक प्यर्गावर्श्य मिर्ने शामन्त्रीन नियोताइगेर्गाम्य प्राचित्र क्तृत्य पिक्ठे श्रवमा भवजा क्वालान श्रम् का निवास माजन कर खियः प क्रिणानकनेत्रत्रोत्र अवकावनताज्यः श्ववावावायः भूत्रो ग्लोनेन्त् वरः न्यू किः । अध्यक्षिका निना नो खाय अवस्ति । अक्षुञ्जार्भात भवकालके नितारमान विवाद के अग्रामायभागा निवास भेता निर्णा निवास के विवाद के वि विर्शाश्चित्रनाभागानाइत्मिनीतिश्वावीग्रेश्वेदे त्यायम् विचि १०११६ १रेशिनेतिशिवश्चायः । १३विभिनेतिकति तिर्शिवश्चित्र विद्यापिते । १५ १रे । १६ १रे | १८ १रे | -अन्याम्बाद्यादिका मिनान्यकीनावीवायनाष्ट्रास्त्र मान्यकार्मात्र विद्यानिकार्यका निक्र विद्यानिक विकासिन विकासि कूर्गनीनाके वामिक्न उत्थी मनिन्द्रिकी श्वाम्याम्या भारित्रानिक दिल्लानिक नामा भयो नार्य कुर्निम क्रिक्न करोगिता दिन मिलाय में कि दिल्लानिक नामा भयो नार्य क्रिक्न करोगिता दिन मिलाय में कि अश्चेक्तीक्षावेश्यू: 18 म्मेश्यू क्यू एक मोतिकविकाना अस्थानिना काला मार्था अस्थानिक अभाग निमानिक कि

भग्नेभगीलायः विक्री । श्विममानिमाञातिक हिन्द्रमितिस्य वाजातिन विद्यान्य क्ष्मोविति । महिन्द्र विद्यान क्ष्मोवित वाजाति । स्वर्ण विक्रिय । स्वर्ण विक्र्य । स्वर्ण विक्रिय । स्वर्ण विक्र्य । स्वर्य । स्वर्ण विक्र्य । स्वर्य । स्

श्रावर्णीति स्वाप्त के के स्वाप्त के के स्वाप्त के स्वप्त के स्वाप्त के स्वा

उभाग्रेलागेवाण्मवा (भेनम एको प्तर्था प्रक्षिण क्षण निवार कार्यः क्ष्योः क्ष्या विवार गृथा विवार क्ष्य क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्या क्ष्या क्ष्या

অপামশার্মিক ক্রান্ত্রসমাজ্যত প্রিচক্র্যমানানিক পূর্ণ বিষ্ট্রবানিমাই তিন্ত্রমজ্যক ক্রান্ত্রমানানিক ক্রিক ক্রান্ত্রমানানিক ক্রিক ক্রান্ত্রমানানিক ক্রেক ক্রান্ত্রমানানিক ক্রেক ক্রান্ত্রমানানিক ক্রেক ক্রান্ত্রমানানিক ক্রেক ক্রান্ত্রমানানিক ক্রেক ক্রান্ত্রমানানিক ক্রেক ক্রেক ক্রান্ত্রমানানিক ক্রেক ক্রেক

शाम्यम्यानिमाध्नामश्र्वक्रशः कायमात्कत्रिक्यात्ति । प्रमानिकाः क्रियः क्रियः क्रियं क

क्षितिक मर्भ मक्षत्विहित्वनामीनार्भिया कृष्व भविभित्र क्षिमी होते. १४ १विमायन छे १००४ विम्ने क्षित्र क्षित

विश्वभाम्यात्रात्रात्रात्र्वे विद्यात्र्वात्रात् भरा देलक्षेत्रीत्नक्ष्ण्यात्रिक क्षण्यात्र्वात्र्वे विद्यात्र भूष्णभ्यात्र्वात्रात्रात्रात्रात्र्वे भूकात्त्रवे प्रतिभागित्रात्र्वे स्वत्रक्षेत्रक्

मक्रीक्षित्राय का नक्ष्यात के कर विकास कर कर कि स्वार कर का निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा कि का निर्मा के का निर्मा के का निर्म के कि का निर्मा के का निर्म के का निर्मा के का निर्मा के का निर्म के का निर्मा के का निर्मा के का निर्म के

मधामय(मनाय महिद्वि । तारात्य विम्हृह्वा (क्रतात्रिजा (यो प्राप्त क्षिण क्षेत्र क्षेत्

या विश्वित के स्ववाहिक्टेंद्र मिल प्राप्त के मिलिश मित्र मिलिश मिलिश के मिलिश के मिलिश मि

मिन त्रमान्न विवाद श्राम विकाद मान विकाद में मान विकाद में मान विकाद में मान विकाद मा

क्छिद्रभुग्नाहरायकण्यायम् विद्यार्थित्वार्यक्षेत्रमान्यः नाम्य द्र्यहिष्ययान् नामितः हिन्द्र किल्लितामानिकान्य किल्लिता विद्यानिकार्यक किल्लिता कि

हुउतेज कारोपीविज्ञां कर्म विकास विकास के क्रिक्ट के क्रिक के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रि

भागितः शति स्थायक्षत्भित्र प्रामित्र श्री प्रामित्र भी स्थायक्षेत्र स

शा भागतारिय्यामर्थर्ग ने ने महार्थित के प्रति क

कारमार्थ्य १० - इन्यक रिनाम :- १४ मिनमीनक मीनामिनिक स्उन्यो स्पक्षाक्य मीनामिनिक स्वन्या १ भारताने मार्थिक स्वन्य मार्थिक स्वन्य स्वाप्त स्वन्य स्वाप्त रेकि १७

श्रवित्राक्री: एउठिवित्र वृद्धियो एउने निर्मा भिर्णित क्रा । एक्ष्रियो एक्ष्र क्रा क्रिक्ष क्रिक्ष क्रा क्रा क्रिक्ष क

व्याप्रकारिम् (मा क्षीतरम् अन्याप्रकारिका का विकास कि वि

दार्ष्य स्थानिय भेगायि स्व प्राव क्ष्म वा कि स्व द्वा वा क्ष्म क्

(कर्मभर भव्यक् मक्ष्यः क्छात्वि "प्यामेनिष्मा हामारिक्षक १८० १% रिष्मिनिष्णार्गवाल भावभर्षणा विभागिका भनेम कत् क्छा कात्र करिया का प्राप्त कर्म कर्मिक क्षा कार्य का विभागिका कर्म कर्मिक क्षा का प्राप्त करिया करिय

शादहर्भकाक्रम लिक्क्राच्या विकास महानाभट दिस्त्रमणेतान क्ष्यात्र केर्यात्र महानेता विचार महानेता विचार महानेता केर्या क्ष्या क्ष्य क्ष्य क्ष्या क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्या क्ष्य क्ष्य

गेश्वातिने क्त्राचविष्टे किणामित्रः श्रत्व हामानिने अक्षेत्रकानाविवा निक्त हात्र गेल्य विवाद हिंदि क्रिया क्रिया हिंदि हिंदि क्रिया है क्रिया हिंदि हिंदि क्रिया है क्रिय है क्रिया है क्रिय है क्रिया है क्रिया है क्रिया है क्रिय है क्रिया है क्रिया है क्रिय है क्रिया है क्रिय है क्रिय है क्रिय है क्रिय है क्रिय है

नाभक्र निर्द्रवादार्गेक्या निर्द्रात्र १० । अवभवित्रिकः रूपेर्दिवीवारं यहणानात्रकि । अवश्वामकामेनीवर्वः द्रव्यात्मावाक्राणामभाव्यक्षेत्रात्र वित्रविक मुन् ११ (द्रभद्याणो भव्यक्ष्य

व्येतः प्राराज्यवारविनामेळ्यनावावतारुमा परिमित्नभेति वित्ये पेहित्मभीविजनेळ्य विषयोगित्रमा वित्ये भ्राराज्य भ्राप्य भ्राराज्य भ्राराज्य भ्राराज्य भ्राराज्य भ्राराज्य भ्राराज्य भ

मन्त्र (जननेखना प्रकार । मंश्रामिक श्रीम किर्मित किर्मिक जिल्ला में निवास किर्मिक के निवास किर्मिक किर

-्रावित्वविभिन्नद्रश्चितिलोशवाम्बूत्र-वावभीमवेव श्मेण्य्नेखनमेश्चितिन्द्रलेव द्वास्त्रान्ति मन्नाव्यक्ते न्यान्ववि १२ १नवित्वविभाः द्वास्त्रान्याः प्रश्नित्व

र भन्य भने ने श्री श्री के श्री के श्री निष्य भिन्न के श्री क

न्तिन्योत्तित्व त्रवाष्ण्य विश्वाण्य १२० व्यक्ष्यः विश्वः अवः व्यक्ष्य विश्वाण्या विश्व विश्वाणान्य विश्वाणाय विश्वाणान्य विश्वाणाय विश्वा

भीतितालें काणिन स्वकामनः आर्थानाचे विकास कि पूर्वो महिनानियः कृति वाहकविश्वान्यावर वाहिताः वाह्य आरोधी वर्णने ने महाः विकास विकास विकास कि पूर्वे विकास के विकास कि प्रतिकार कि प् विभाग्धरिकारिनकिकाः पविष्यिक्षेत्रविक्ष्यक्षेत्रकानिनः प्रश्रिक्षान् वर्गेरक्षिव्यक्षिणः प्राणिताः वभागेर्ता ज्यातात्रीयनेत्रान्यः।वालाश्रीकांक्किश्विवायांत्र्य (राष्ट्रवे विभागान दूर्ययोक्य देशकेने महिना कि लिन विश्व भिल्क्सिक अर्थ नेकिन हुउयः प्रविधि स्विके काम् स्रे भे त्याचीक निक्रातेषामाथीः अश्विमिनिक्यनिक्र केन्द्रियाञ्चराः भिनि मिश्रोष्ट्रभाक्यमाः पनेमानय अवनयाम् की वितिष्ठ की तान क्ष्यनरे (या थेवराव तिने कि का विविध्य में स्वामा कि विका गरम्बिमाहर्गिलेनिकः विकालिन भूत्राणः भाषाया विक्रिमानि गानि गर्मित्र विक्रियानि गर्मित्र विक्रियानि गर्मित्र विकालिन मिन्निक विकालिन स्वापित्र स्व भी भाउनम्बर्यभूजन्द्र ने ने वानिका केन माना मानका के मानिका कि स्थान के कि मानिका मानिका के कि स्थान के कि स्थान

अणि मुक्यिदिणा रिठा (भानकाने भागे विश्वार यह । भिन्य भार्य त्वार शक्ति विश्वार क्षिरिवर्तके स्वरूपेय अभाग ए (हिन्मी: गर्मेजो॰ विषिधमा (हस बीवामार्गिक्ववः क्षियायः स्थिय यसिक्य (नारानीसिक्वविष् सिसंया निम्दानिध्यम् अयस्य के भः । कं । रेकिसी मुख्या ग्रेनिया व्यागित्र का का वार्या निक्ष वा का निक्ष वा निक्ष व जेलि(नेजार्गामा मरामना क्याप्यं विशान (वम्जान श्राकः श्रहि त्तंक्तः । वाहियद्वाद्वन्थयने जातं क्यांचेज्याते ग्रात्यामाम विधिनां भिराम्बार्कन उँभारगार्थ हुनो॰ नियू छ झामा जिस्ययः भेभ नक्षण । जिना जिन् मध तुरित्रा वर्षा ठ इन्छा थुता हुण निवस्थान

तास्माय विनेतिक कामून क्रम्मन्य विनेतिक क्रिक्त क्र

त्भार विनो क्लेल एत्का वा का क्षेत्र क्षेत्र

न्या मेर्याक्षिणः अवस्ति में भारत स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्

एका स्वामार् म्रिके मेळान क्राप्त के वर्ष १४ १ द्वानिया मन एक्याचीन्य ने एक दमा माना के व्यक्त माना १० १० वर्ष रामा १० वर्ष रामा १० १० वर

कि। महीयविविद्ये दे जित्र विवान व्यान महिन दे वान महते प्रमान कर पृष्ठा क्रिया विद्या दे विद्या के विद्या के व अम्बिक्ष क्रिया विद्या कि। हवा हते थे। हिन्दी के विद्या क्षित के विद्या के विद्या के क्षित्र के विद्या क

भागी छ प्रश्नित्या मित्रा विक् विकाश से बुद्धा वर्ष मित्र के क्या निर्मा कर्ता वर्ष विक्रिये हिन्दे के प्रश्नित के प्रश्न के प्रश्नित के

क्षवः गतिश्वम व रिक्न मान्न भी मान्न भी मान्न मान्न मान्न मान्न वित्र मान्न मान्न मान्न मान्न मान्न मान्न मान्य क्षेत्र मान्न मान्न मान्न मान्न मान्न मान्न मान्न मान्य क्षेत्र मान्न मान्य क्षेत्र मान्न मान्य क्षेत्र क्र क्षेत्र क्षेत्र

-श्रूचिक्षेविशिष्टीमित्रातिक्षेत्रभाकि के विद्यालि । विशेषिति कि विद्यालि कि

भूमाथाँ म्यूर्क्त भव्यभाः । भूमो हा (बादिनी याङाः भम व्यानव्य भविष्ः । वका विहिश्वित मध्यक्ती भूक्यामनी हिडि:18 लीश्रायने योत्रे यिया प्रतिका नाउंदन प्रकार्या क्रिक्षामानी कि मानिकाल लोकि मन्ने अपनिमानिक क्रा प्राप्त का विश्व भिर्मा के कार त्या के जार हरा श्रुक्तियाः श्रीर एकाश्रीकाश्रीवात्रश्रीकिकामम् क्लेन्विक्द्रक्षिण्यम्भूयक्कम् कृत्येवः क्लान् क्वायकः मर्ग क्षिकि छ बार्व व्याणाः । क्ष्रिमेव स्व व क्रियेन स्व मिन्द्रिक्षित्रकार्यक्षार्थ्यक्षिय्विम्भभूराजनक ग्राविष्यक्षेत्रगाय्वेत्र स्राविष्यका कर्मः विक्वाद्रवर्षः श्रुव-ममडाक्ष्यर्वियाणिरायोक्तर्भः यागेचेवायाणीवर् गत्रिक्तिरेणमानायाणेत्र्यक्तिराम्

अभारामश्राश्चीतिक्व (भेरवक्तर्वे १४) - अधिवे अधिका नी उक्तर क्षित्र । ११ निम्मिक वक्षाम मुक्तिकार प्रत्यावरे विकास कि विकास विकास के पत्र विकास के विकास कि वि विकास कि वि विकास कि वि

वभागभाषमानिक १०११ क्षानाम् अनिवृद्ध निक्ष को माणिका मुद्द ने असूक्ष कि मूक्ष मिक १०० १ के साम स्थापन के स्

तिसं हर्ने विश्व क्रियं क्रिय

काः सिक्षा-ग्रनास्व देशिक कार्यात्र में ती नार्खिया (यमे व प्रव कन एगो एगो तिक्य मामा (वाय्य विकि पृथ प्रवाहिक प्रव कि कार्य कि प्रव प्रवाहिक प्रव कि प्रव कि कार्य कि प्रव प्रवाहिक प्रव कि प्रव कि कार्य कि प्रव प्रवाहिक प्रव कि कार्य कि कि कार कि कार्य कि कार्य

भिष्ठां क्रिया भी भी क्षेत्र क्षेत्र

योः भूजनायाः निय्व्त्राध्यक्षारीयोग्न्यार्गः थानेप्रिम्कतरोत न्यः विद्यीभव्यार्गेयक भराभ्यार्गे श्रीयाणिक भराभ्यार्गेय विद्यार्गिय विद्याय विद्याय विद्याय विद्यार

व्यक्तीतमरहान गर भिकारामामामा १२ भिविष्णमात्रार्श्वाकि काविष्णात्राञ्चानम् अविष्णात्रात्रात्र । भविष्णात्रात्र । भविष्णात्र । भविष्णात्य । भविष्णात्र । भविष्णात

क्लाखानकार स्वर्थात्यानितः सोविद्य मित्र क्रिकेश क्ष्यमानितः अभिक्षेत्र विद्यः अद्यानिक निष्यक्रिकी मुक्क व्यक्षेत्र क्षिक क्ष्ये क्ये क्ष्ये क्ष्ये क्ष्ये क्ष्ये क्ष्ये क्ष्ये क्ष्ये क्ष्ये क्ष्ये

भगातिमभोखबात्विको । हाम्हळाआ क्रिक्टा का का का का महिला का क्रिक्ट के कि प्राप्त के क्रिक्ट के प्राप्त के क्रिक्ट के क्रिक्ट के प्राप्त के क्रिक्ट के क्रिक के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक

क्षित्व ने रहेण्याविद्य निव्य मनिवर्ग विद्य मनिवर्ग विद्य मनिवर्ग निवर्ग क्षित्व क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित क्षित्र क्ष

नमः अभूगमान्यामाने जेन्द्रविशः पश्चने व्यायने त्रमाण्यन् (त्रिक्षक वर्षेत्र में ने वर्षेत्र विश्व वर्षेत्र वर्षेत्र विश्व वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्षेत्य वर्येत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र

गेष्ट्रिक्नोभय क्रिक्टिकियाम मक्रमिन हे व्यक्तिश्वात्राव क्रिक्टिक मानार वण्या वस्त्र महिल्या विक्रिक्त क्रिक्टिक क

अक्स्माम्सिक्तिनामाम्स्रिक्तिनामाम्स्रिक्तिनामामिकि । विक्रिक्ति । विक्रिक्तिनामामिकि । विक्रिक्ति । विक्रिक

প্রামান্ত বিষ্ণালিক বিশ্ব প্রতিষ্ঠিত কিন্ত প্রতিষ্ঠিত কিন্ত প্রতিষ্ঠিত কিন্ত কিন্ত কিন্ত কিন্ত কিন্ত কিন্ত কিন কিন্তি কিন্তি কিন্তি কিন্তি কিন্তি কিন্তি কিন্ত কিন্তি কিন্তি কিন্তি কিন্তি কিন্তি কিন্তি কিন্তি কিন্তি কিন্তি কিন্তু কিন্তু

मधारम् क्रिकिता भिना भिन्न निक्तः महान्य अपिक्र विकित्र महिल्य मिल्य क्रिक्त मिल्य क्र क्रिक्त मिल्य क्र क्रिक्त मिल्य क्र क्रिक्त मिल्य क्रिक्त मिल्य क्र क्रिक्त मिल्य क्र क्र क्र क्र क्र क्र क्र क भाग्यश्रानाम्म्यूर्यक्ति । क्रायम्भवन विश्वः श्रुकः खनभनायम्ण्यस्वित् प्रानिज लोलिवनि जिः भने विद्या प्र वाह्याकेर म्क्रकेर म्याञ्चा प्रवाश्य म्यक्षारि माभानविविज्ञाः निस्वयो मलसीनानामासिवाविक्नाः क्राः प्र र्विवानरुभा मायमामण्युक्र क्लारालः । क्रांने लेक्सिकेषि चिस्विकि पिराजा असे आवार यिवा श्राम्य मण यन कर तो क्री क भोदिकः विस्वामात्रि किलोकिक सामामने भर्मिको क्लोनिक माल्काने भूक्त्राम विद्यातिम् विस्ति का अभीमा का अभी लियः प्रातिक ना विश्व कि नह माक्ति के विश्व के प्रात्ति के विश्व के भे श्रम्कार्चि १४-१वमविद्यवमामर्गम्ब्र्विकमान्निः मण्क्र्लः मिवा अध्य त्या एक्ष्या क्रिकार्यका क्रिकार्यका विद्या কাশ্দিণীপ্রাস্পারোধ্যন দর্শীমাসক্ষ্রমাণেস্পেজাত প্রতিপ্রাস্ক্রসাহ প্রাক্তরে ক্রিক্স ক্রিত্র ক্রিত্র ক্রিক্স ক্রেক্স ক্রিক্স ক্রিক্স ক্রিক্স ক্রিক্স ক্রিক্স ক্রিক্স ক্রিক্স ক্রিক্স ক্রিক্স ক

न्याभागविक्याः प्रश्निक्तीत्। येथ्वक्तीत्। येथ्वक्तीत्। येथ्वक्तीत्। येथ्वक्तीत्। येथ्वक्ति विक्रिक्ति विक्रि

अम्यात्राव्यामाः ।अयामनाभक्षीत्रायात्कीरा महर्तन गम्भुक्रनोजित्याणीकविश्वेक्षणे ।विश्वेक्षणेत्रितात्र निर्मणानिकः गनानक्ष्णानिकारम् मध्यकः ।

भिष्येत्रिताचेत्राहिकर्थः १४ गणायात्रितस्थान क्ष्यान क्ष्याहाय मास्यविक्षण मणी विकाय मार्गाते ने मार्गाने प्रक्या सन्ती व्यव्या क्रिक्य के व्यवस्था क्ष्या हिंदी विकाय मार्गाते ने मार्गाने प्रक्या सन्ती व्यवस्था क्ष्या क्या क्ष्या क् क्ष्मक्रुव्नामेक्काम्क्र अर्थेक गोन् पर्वे नित्रक्षां मिलि निर्मित्र विक्र क्ष्मित्र विक्र क्ष्मित्र विक्र क्षित्र विक्र क्ष्मित्र विक्र क्ष्मित्र क्ष्मित् विभिनाः क्षाके ज्ञात्र मिन श्रमान कि श्रे कि भन्न श्रमा न्नीं विश्यमाश्य्यभोद्ययक ग्लानाः मानाः कि नस्यभानका म्हण्यायकीव (भामभाषाभाराका त्याव प्रवास् त्रक्रमावाति। निर्विणे मिलाकारी १ स्नः मणारिन विक्लिक नेत. मार्थ में मार्य ने यार्थ मूम् मिल्लिक क्रिके में विक्रिका क्रिके क्ष्य के क्ष्य क्रिके विक्रिक क्ष्य क्रिके (त्रवः अनात्रवनान (कामिका अवक्र अने ये प्रेमिक्वः गम्बाक्वा निवय्योनन्ताना तो तिव्यम् । निवय्यम् । the transport of the agent relative a confidence of the agent of the second of the second of the second

वर्गेत्वकश्चित्राण्यसम्मिन्न्यार भरिष्ठ मन्त्राण्यायमान्त्री विम्तरण्यार्थिक्षण्यि। भर्तनायनकार्यप्य म्याप्रे किमिन्निर्माणेक्षण्यार्थिक क्ष्रियम् । विम्तर्भाष्ट्र स्थाप्रे में विम्तर्भाष्ट्र स्थाप्रे स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स

स्त्रवामिकि । भर विकान निर्मा कि । निरम्प्य भागवान निरम्य भागवान निरम्प भागवान निरम्य भागवान

मर्वापिष्ठक्रिमीण क्रिक्षित्र मेन्स् । एक्ष्णा भारति वीक्राह्मीव निर्मा हिन्द माउ विचित्र क्रिक्षा हिन्द माउ विचित्र क्रिक्षा हिन्द माउ विचित्र क्रिक्ष क्ष्मि क्रिक्ष क्ष्मि क्रिक्ष क्ष्मि क

अनिमेन नाईप्राधिनकात १२ । (त्रात्वावरेलाम्यः जनभेडियतम् एवः अर्ण्यस्यानीलामिन । कानिमानेकानिके । क्रियो क्रियान विश्व (वार्यभागितिक्ष के व्यव क्ष्यां मार्थितिका क्रिक्ष क्ष्यां प्राप्त क्ष्य क्ष शूर्वयात्रकार्मेयवीयरात्ति । श्वायत्रमात्रमात्रमात्री स्रवेद्यां महिन्द्रमात्र । स्रवेद्यां स्टिशान्य । स्टिशाय । स्टिशा

विधाभाशास्त्र-विकार्ण शिक्षां स्वाप्त कर्ण मिन्न क्ष्यां भर्गा विभाव विक्रमाती किक्रम अविध्य म्यो मन् रक्ष भवी श्रे विधा विधा विकार का विधा मन् क्ष्य क्ष्य

वर्गमार्थनान्त्रवृद्धियमः वर्गायाध्यम् विष्ठिति क्रिक्ति क्रिक्ति

हीयाक्वर्किमारः भार्याजम् श्रिवभमानक्ष्यम् रूक्तिविक्वावार्यारेः विम्वादायोगित्रे विक्ताहित्य वामनः क्यीव (द्रास्त्रक्षमा । यम्स्या (यन यव प्रवीय के प्रविवाय वर्गवा विवाय क्रिक्न । यह व्यव प्रभामा कि विविध मिन्नाहरू विकासिन विकासिन के निर्माण कि ती थी। भीर (गीर्यनान्द्राम्याय (यात्रे क्रमान् मार्मानः क्रमान्ये विकित्रवायाण्या शिकायाण्यवस्थाः । (विक्षवीण्यस्यता नाया भ्रायायरभयो विवः १०४१ मार्श्यास्य मे विलोगों भा (वाशा(बार मालक वश्रम् अर रितन शम्यामी श्रम् भावता १० वर्ग था (विविध्य मालक श्रातिक मानक । क्रि "तीशमानमाराह"रवि भामोग्राजालेष । विक्ताज्ये वाह क्ष्णानमः किमे(वार्ष्यमन् स्यम्पव मार्गम्य प्रात्मित्रो

-गायला र्मिकृषिकितिकित्राण १२१ निविष्म मिक्ट्रिक्ट व उठ जे मेल्की पह अक्षार स्मृदिंश के द्रुष्म मिक्ट्रिकि मिक्ट्रिकि विश्वित कि स्मृद्धि के द्रुष्म मिक्ट्रिकि विश्वित कि स्मृद्धि के स्

भेग्ने क्यान्य क्यान्य क्यान्य कर्ति क्रिक्षे क्यान्य क्या

विभास्यायम् । अप मारा रिया त्र विश्व क्रिया त्र विश्व क्रिया त्र विश्व क्रिया क्रिय क्रिया क

राणानश्यक्षित्रभूष्ठभक्षित्रकः वेष्यः व्यवस्थातिकाः वेष्युक्षणावराष्ट्रकाणिकाण्यातिक विवादिकानित्रवाः स्वरेशिक विवादिक विवादि

अभार शामकदेशिक्ताव १२ मध्यन मारुवायीयक परस्कावार ईलोनदाममूक (यार्केत शामकन क्षिक किला क प्रत्यवादियोगत्वाभागत्वाभागाः भाग के वर्षायिक है से भारवाभित । कि मि हमार्ग किला

हमान्य नियक स्वित्र में स्वानियानीय गीठा कि पात हिला कि प्रानियानीय गीठा कि प्रानियानी कि प्रानियानीय कि प्रान

लिराजिन प्रभात । व्यक्तिम्भेना मिनाश्र सार्ग अत्य ग्रम्थणोयः निकारक नवनीयम्बल्यम् नव विश्व मिन्य भेना ने मिन्य भेना क्ष्मी प्रथम विश्व अत्य अत्य प्रथम विश्व अत्य अत्य प्रथम विश्व अत्य अत्य प्रथम विश्व अत्य अत्य प्रथम विश्व अत्य अत्य प्रथम विश्व अत्य विश्व अत

भरागाणे त्रिली मण्या खन रविं नग प्रिणाती नात्र विस्ता र स्था ना त्रांच दिन के प्राय निवास के प्राय विस्ता के विस्ता

मिन्यक्रवावामान्यम्बक्तित्याः स्तर्मिनास्ति । १३१ स्तित्यक्तात्राव्यक्ति । १३१ स्ति । १३१ स्थाप्ति । १३१ स्याप्ति । १३१ स्थाप्ति । १३१ स

जनार्कमाथोककभायोककमायावयाक्ति १० १ क्र मूर्गा व हालामव्यू गेर १४४ १ नरिक व्याक्त क्रिक्ट मार्थ अन्ति । व विकास वितास विकास वितास विकास वित

उत्भवनिक्षियक्ष महिन्ति में शिक्ष प्राणिति हो स्वाप्ति विक्षेत्र विक्षेत्र

विज्ञानन छियुन्य विचित्र विभाव माया विभाव विचाय द्वापिय । आयो विचीयी मारि १०० विकास नामिति ए दिना ए दिना विभाव नामिता विकास विभाव नामिता विभाव नामिता विकास विभाव नामिता विभाव नामिता विकास विभाव नामिता नामिता विभाव नामिता नामिता नामिता नामिता विभाव नामिता नामिता

मलीभम्बर्ग १८१ म्वर्गा स्वण्ड्खि १०१२म नूरारा माम्या माम्या ने अर्थन मिल्या माम्या ने प्राप्त स्वर्ग मिल्या विश्व माम्य क्रिक्य माम्या क्रिक्य क्रिक्य

নবাদ্যবাদ্যকার সন্তিরাম্ভির মিল্লু বিত্ত ক্ষিত্র প্রতিষ্ঠান ক্ষিত্র ক্ষার্থ কি ক্ষিত্র ক্ষিত্

विनाल्य स्थाविभानानामश्रीक १भ मधरकेर्य मञ्चात्री जाताहरू य व्यक्षात्र व्यक्ति १३: विकासकार्य विकास वित्र विकास वित गुरुक्षरक्ष एर्क्विम् कथाया भागविष्यः, अवाको मुक्त निष्ट्रकृत्यक् किर्नेनम् लिको गर्वानात्मना (भन् कृक -वाष्ट्राभितिभूमात्मान्नक्ष्वतंभितिविक्षिमाविकि । विक्षिप्ति विक्षिपिति विक्षिप्ति विक्षिप्ति विक्षिप्ति विक्षिप्ति विक्षिप्ति विक्र व्याष्ट्री विकास मार्थिय कि कि कि कि कि कि कि वार्ष विगेरिक रूमे (सनामी कि त्यिक में गून करे वाह गुक्न श्रीत्र हातीय्या श्रूप्रधीयन मात्रीको गर्कनारमाने वान त (श्रमन्तिशा भाषाप्रकारी ग्रायाकनी भित्वा श्रीया उम्बिनिकाविवरुविविक्षा भाषा म्याहरू भाषा मिविकिनेवा कर्वा स्वादि । भाषा स्वादिक विकास । अभू से व भावत्मग्राण्यक्याक्रकेरीर्यार १)। याचिमार्रकक्रीयम वात्तर्विधा महत्त्वात्मक्रामिकमः त्यार्थन्यत्विक भेष्यामिक १२१मिन वात्रक्रीत्मक्षेत्रक्रीत्मक्षेत्रम् व्याप्ति । জীইভি 12- |শপতিসভাতি ইতি মার্মাইস্পান্তির সিতা দিনা সম্প্রসাদেন স্থাংদনকৃতি স্থাণি স্থাণিক লেন বর্ণ সম্পর্ক করি তার করি বিজ্ঞান করিছি তি জিভিস্ক করিছি তি স্থান করিছি স্থান করিছিল স্থান করিছি স্থান করিছি স্থান করিছিল স্থান করিছিল

म्यू ति क्षेत्र क्षेत

জিক্তিভিত্য সন্থিব ক্ষেত্র বিশ্বাস প্রের্থি সম্প্রির্থিক প্রের্থিক ক্ষিত্র ক্ষিত্র

विक्रविकार्यास्थीत्यान्ये विक्रियान्य क्ष्यियान्। न्य । अन्तर्याक्ष्यात् भारतिक्ष्येत्रात्यात्रिकार्यात् । अविक्रियान्य । अविक्रियाय्य । अविक्रियय्य नद्यानिम्बिनः भेवभीक्ष प्रभू स्थिकिकविद्याक्षीं जाना निष्ठिक्ष क्यों कि विश्वासक कि भीविद्यक एक थ म्बिषाविवर् अध्यास्कः मर्गाम् विर प्रमु ग्रेष्ट्यात्याञ्जिक्ति श्रामिक के प्रमित करिका मान्य प्रविक्ता मान्य प हिंक गे: गरे विभाग्र स्थाश्र सिरिंग मितिन वर्षण १४ म्तिमाण्येव प्रश्वात मार्थतः मम्त्रानिनः गुने छि किर्गाछिउ -उब्देशकां दा कि मिक्षिण १४९ मा हैना प्रभ क्याना क् गन् हत्ति शिरो कि भिर्कः किताने एक तमा वार्षः अवित्र भवामा की वाक की वी में तिल्या कि का मिन दिन की मिन के वित्र कि वाक की निर्मा कि वाक की अप्रश्लीद्यानमः श्रुत्ती म्नविवाभनमात्मा विकानीतः स्वर्भामि १ क । अस्ति । श्रुवकार्णकार्णानिवं मः भार्यनं । भत्काच निर्मा निर्मा क्रिक्श विश्व क्षा क्रिक्श क्षेत्र क्

नमः श्रेबम्बन्धानं नमं त्ये वित्रवेभक्षतं ग्राम्य (द्वार्यमे स्वार्यमे स्वर्यमे स्वार्यमे स्वर्यमे स्वार्यमे स्वार्यमे स्वार्यमे स्वार्यमे स्वार्यमे स्वार्यमे स्वार्यमे स्वार्

क्रमात्मकामङः आभागतिनित्रारम्भिवर्षः भ्रम्पन्न निव्यान प्रतिन भिर्मा मिनि भ्रमानित्र । १०० विकिन् प्राप्तिन प्राप्ति । विकिन् निव्यान प्रतिन प्रतिन । १३ । विकिन् विकिन् निव्यान प्रतिन प्रतिन । विकिन् निव्यान प्रतिन । विकिन् । विकिन् निव्यान प्रतिन । विकिन् । विकिन् निव्यान प्रतिन । विकिन् । विकिन् निव्यान । विकिन् । वि

व्यक्षक्षभगात्मानिक्षिक्षिक्षावयः वर्षाने किलेतः यक्षाः भवभाशः हावनेक्ष्यः व्यक्तिनिक्षभाग्यः विक्रिते वर्षाने वर्षान

क्ष्मेय निम्न निम्न कर्ण विद्र निष्ट्र निष्ट्

काश्राद्धि प्राप्ति मेक्र प्रातास्त्रीयवाम भव्कं(वाचित्रम ११ फनार लोकी छविन । एकाचित्र क्यानादिन छाएकाचित्र नहीं वेस्मान (यकाख क्यानिक अमर्यर वन्निकिस रववन्त्री के दि

खक्छवाहार्याच्यारवित्कार्वभाविकश्रायपश्चाहरानः यतः ग्राधार्यन्य भागान्य प्राप्ति स्थित्ववा गाः गरेनियमतहरू वस् याभारकाया गुल्नवाम्यायाणकवाव गार्शायाननसम्याद्यायाक्षेत्र (याश्वेत्र विविद्य विविद्य याम मुद्रम् विद्वायन्त्रया गुण्नेकाव गण्या का प्रमुक्त विरुक्त का रूपा माह भागि शिक्तिया महत्र्यभगाष्ट्रा निर्वि <u>जवाः गुश्रावानाष इवतितारा चित्रकानेश्व मुश्रानेश्व</u> जामकार्गन्थ्रक्यावेश्री हम्मे विश्व निविद्य के कार्य ने बाले किन्न प्राप्त किन किन किन किन किन किन किन किन किन मः १७१ दे प्रयोग विकर्ष के माथा वर्ष स्था माथा के गविताक नम् धर्म यूम्ता विक्रमा हर गुन गांगी विखि छि। व्ययमा १० । इस्त वार्याण्योक्तिमा मार्थिण्यत विभवित्र निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा के विस्त निर्मा निर्मा निर्मा के विस्त निर्मा निर्मा

दिलोक्या निर्णित्या दिली मन का विश्व विद्या निर्णाय के प्राप्त के

म् । नाम ११४ विस्तुका विक्ता निकाल मानिकाल प्रक्रिक १४० विक्ति वि

वायरामिक्कान भाविमायिक स्तायमावेमायेमायेमायेमायाक विम्हित्सिमाधाक्य क्रियायिक विक्रियायक विम्हिता विक्रिया विक्रिय विक्रिया विक्रिया विक्रिया विक्रिय विक्रिय विक्रिय विक्रिया विक्रिया विक्रिय वि

ठमिखनिशी कार विश्व विश्व कि अध्यान कार्यान विश्व के प्रति के प्रत

याममार्गीनर्मिखोग्नम् द्वाविभेद्रानम्बर्द्धो मुस्याल प्रकेशिक्ष्मम् यामीन ।स्राक्ष्मद्विमामम् प्रमानिकामम् प्रमानिकामम् । स्वाद्यामम् प्रमानिकामम् प्रमानिकामम् ।

-अग्यू दीनामस्त्रिमाण्याकाम्स्त्रीम्स्मिनामस्त्रोम्स्मिनामस्त्राम्भानम्भिन्नामम् विकासम्भः विकासम्भः विकासम्भः

द्रिंशह अह अह के कि साहित्री आह्वा अवस्थित के में कि का कि में मिलिया श्रेम् हिंदा वाअल्लाक नव अविकास के एक लिया के प्रकार निवास के प्रकार निव

नेति प्रानः यात्वात्रीणित्रीना मुद्राञान म्वानेनाः गणोयना नित्र क्रक्र मणोण द्रम्म मस्तः न् इमे (वार्षिणे मस्तायम् मर्पे वित्र त्याद्रितः गुरुष् त्याद्र मान्य वित्र त्याद्र मान्य वित्र वित्र

याज्ञाविष्य्वेक्गामिना १६ ग्रामान विश्वामन रामितिः सिकिनो म्रकेलो मिनिक कारका व्यवक्रामानिक रिकाः व्यवक्रिम र प्रवेदि छ। पर प्रथमनिक रिवा

थानीमक्षीर्मण्याक्षित्राचेत्रीत्मकाष्ट्रणः नाम्बाः शिलाने विवानका नामिकान्य किंग नियात्या नियात्य किंग नियात्य श्रादेशिनकाम्बद्दल्यानेमः । अभियवमनिर्धाम विद्याम निर्माव मुक्तमाधामाञ्चमण्य भ्यापेत्वा निर्माण निर्माण किंग मार्थना निर्माण निर्माण निर्माण किंग निर्माण निर्

भीतिश्री महिन्द्र विश्वाहर्गः प्रतिलेशिक विश्वाहर्गः प्रतिलेशिक विश्वाहर्गः प्रतिलेशिक विश्वाहर्गः प्रतिलेशिक विश्वाहर्गः प्रति विश्वाहर्यः विश्वाहर्गः प्रति विश्वाहर्गः विश्वाहर्गः विश्वाहर्यः विश्वाहर्गः विश्वाहर्गः विश्वाहर्

बांभजाहितियाण्यववामण् १२१ । व्यवसाय्वत्याः दीवणेवक्त्रयान्द्रणेविलोधव ११६ । भमीकित्यस्य । १०। आवारः मेरको अत्योग्ध अञ्चानमार्वे व्यवस्थान

स्वित्रिक्षण प्रतिविद्यानि स्वानिक विन्यानि विन्यानि विक्रित क्षेत्र क्षेत्र

्णनिविक्षिणः स्मारुष्ट्रस्मानिनम् विक्रेशिक्षिण्यां विक्रमान्य प्रमान्य विक्रियां स्मारुष्ट्रस्य माथ्यदाने से माथ्यदाने माथ्यदाने से माथ्यदाने माथ्यदाने से माथ्यदाने से माथ्यदाने से माथ्यदाने से माथ्यदाने से माथ्यदाने माथ्यदाने से माथ्यदाने माथ्यदाने से माथ्यदाने माथ्यदाने से माथ्यदाने से माथ्यदाने माथ्यदाने से माथ्यदान से माथ्यदाने से माथ् विकाति विशामित विश्वानियः । भगवयक विषयः स्या निय अञ्चराभ्याभ्या भ्या भ्या प्रमाण्य विकास कर्मा कर्मा प्रमाण विकास करिया क्षिनिम् विम् विक्कि कना निम् विभी धना भी थे - जिलाम् कथ्य प्रभानचा भ्वः रूपार् नियः मवले वर्गाम्यः । ्जी विस्त ल्यू जि. शेंडा युक्ते वृत्री म (वे क्वें) कर्ज गुरुष् अथवाभ (मी म्यनानेक् अथा दिया द्वामन भवन श्वित्य १०३ माल समा मिश्य क्षिता थे: क्षे क मामा का कि मः प्यारिगेल वेश्रीय को स्विध्यका मवः यारे व्यादि (स्वि) क्षेत्र विक्वि के कि जाने वृद्व भी महा कि भी মারিক্ষণিজতে কুপাণনবিশ্বতিক্ষাবেলি শুস্থাকেসিওত্ত অস্কুকিছিল অসুক্রতি দুখেলসাবি প্রতিষ্ঠাক বিভিন্ন স্থানিক স্ धार्तन कर्षे ने मुख्तियर प्रतिवादिक विश्वेष्ट विकार कर्यका निक्षिक प्रतिक प्रत

वर्षान्यवर्ष्व वितर्भ महिना ग्राह्म वर्षित्र प्राप्त कार्म प्राप्त प्राप्त कार्म का

क्षीत्कावार्ष्यकः श्रिक्षः भर् ११ । विद्याभावः क्रिक्षामावः क्रामिक्षियेवः । १० किरोवानाय वक्षणाभावत्वभागिवित्वताक्ष्रियाक्ष्यः । ताकृतभग्नव्येः ले भूक्षभागा । विव्यवस्थिति । विविव्यवस्थिति । विव्यवस्थिति । विव्यवस्यति । विव्यवस्यवस्थिति । विव्यवस्यति । विव्यवस्यति । विव्यवस्यति । विव्यवस्यति । विव्यवस्य

20

क्वान्तिकार ने अन्यव बकातः क्रकार यादमधनी अस्ता (ऐन १५ १ मूठरास्त्रे स्वान बिनिः भूग निविध्य अनक्ष कि स्थान कि विकित्य का विविध्य कि स्थान कि स्था

रेजिकनार्थः रुवाः जितित्र महास्त्र में अपूर्वित्र महाने विदेश महाने वार्था स्वाद्य क्षेत्र ने प्रति के प्रति अपूर्वित के प्रति क

वेत प्रविष्ठ कारण्यानम् इत्ति विकास निवास नामानि । भू विवास नामानि । भू विकास नामान

डें दिशामिन श्राप्त विवास के त्रिक्ट हैं कि मां असित कि मां कि म

निर्मान्यस्थान्यः १०४। स्थित्यस्थाः मानाम्प्रजात्यामानितित्वकात्रमानि स्वीत्याद्विमितित्वम्या २ हिवामानेयः चीर्व्छक्यमितित्वम्याति विकामकाति । कार्यावके विकामका विकामकाति । कार्यावके विकामका विकामक वाकगो जिकाज्या किति (का ९ मव भन्नि न्यान् प्रमान्या स्वीति का का ना निवास्या मरी ने का ना निवास का ना विकास का रिमाक्रणे गर्ताः भिग्धिक्वा श्र द्याष्ट्रिया शक्ति । १०१ कि विश्व अन्य कार्य मासिनः श्वां बताना ग्रम्थायमाः कावामियरम्भयन क्षेत्रका भारी माळा वस्या कर देन के के प्रमान के माल कर के का लिया - अतिरिया मानामधीक्षानेक्वीन्तमाय मिश्व मध्यमिकाची म्यूयो गूरिका मार्थः भवागा मिल्यनः गुरुके वाहान देशे किना सामवामवामवास्था स्वाय किनि विचित्र प्रेतिक विचित्र प्रेतिक मिना किन्य मिना किन्य किना किन्य किना किन विनोधाद्यक्रथ्यस्य । अत्रिक्ष्यक्ष्यमित्रदः परिक्षिरुक्षेयत्याः मेराभामाओगण्यत्य भामाने श्वामाने । अत्याद्य भामाने विकाश क्ष्याद्य । अत्याद्य भामाने । अत्याद्य । अत्याद

भूग भी भू स्टिन्ड्ड का गरनआमात ने वना गरत वर् विकास के १०० शनकात्रा स्थानिना नार्में इंड ह लोग का कि के के हिन में इंड ताहन का का का का कि मार्थ (कार्नाम्बवनाक्ताः प्रकृष्णवान् गेवान् क्छाम्बवन मार्च्यप्तर पृह्नीहिकी (मात्रालान कत्रमात्वृत्रंगीत प्रन् ज्लाजिकाययानिकम् मार्गिद्वी क्रमी में इसि यभग किन क्रमा गृहार्गि के वामिकमा श्रामा विभिन्ने विभिन्ने विभागित् निर्मिणाविशः १०३१ एए निवम् विश् विशिष्ट के याणे अवेष मार् भ्रेत्रामार्थार्थित भित्रामायायायायायात्रीत्र भ्रम् (कान्यकार्काकावानविनियस्यो १०२ १ श्रीना रिक्षालोचिक मण्डिक मेरिकाचि अवी आजागय शिली है में (अविक्रिज भी ने निर्मिण विविक्षेत्र मिक्रोण मिल्लोकमाण गुळी जीवा जिस्सा: यक्षा रक्त विक्रिक रिक्रों भू वा आक्रावमः श्र न्डितः गगी लिः ग्रुगो वा श्र वे वा श्रवा श्र (वे यह विया जय कि स्वति ते थे। के विव के विव वे श्र विक्निका म्यात्ने रेखित में समार कर विक्रिय निर्मा मिलिय कि मिलय कि मिलिय कि मिलिय कि मिलिय कि मिलिय कि मिलिय कि मिलिय कि मिलय कि मिलय

भिल पूर्व शिक्ष श्रामिश्व श्रामिश्व श्रामिश्व प्रामिश्व प्रामिश्व प्रामिश्व श्रामिश्व श्रामिश्य श्रामिश्व श्रामिश्व श्रामिश्व श्रामिश्व श्रामिश्य

(बराधिक कि १०६ आर्थ मन्यक्षेत्रायत रिकट नेतिन ने वता कि विकार के श्रिक में कि श्रेष्ट ने विकार के लिए के विकार के लिए के

चमाक्षिक्षाम् म्हिन क्ष्या क्षा भित्रक्षमा विम्याम-न्त्री स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वत भाषि भाषम् किन क्ष्या क्षा भित्रक्षमा विमयाम-न्त्री स्वित्र स्वित्र स्वत्र स्वित्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र णः ग्राक्षीयार्रं गृह्मम्म् काताक्ष्रक्रक्ष्णितिक्षे वात्रे ग्रम् मार्त्रविक्ष्णित्र हैं लिशिक्षक्ष्याः भेरक्षियार् (मानिन्भेत्र क्रियन्न थ्वा पेन्न (मक्रित्र विवास) विवास प्रति विवास विवा थ्यः मध्याम् वामवायाध्याक्षानम् कृताक्षितिस्यः

१९ श्वन बेर विशेष्ट्रा नितः म्यागं राष्ट्रा विश्व । भारती विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व

क्यारेक्द्र गर गमन् भेय भावर्ग निमार्गियम स्वानी।

मिर्यमार्च वार्डा एस्ट्रेश्वादिस्थात्राजनिस्स्य वहा

- अ भरावाग्यग्वाग्यलायमं गुम्रक्रमभौनीक्षर्ययमि

देश्याकि विश्वपति में के मानि विश्वपति । अध्याक्षातः समित्रक्षीत्रात्रविक्षाद्रभादिकातः । अपित्रविक्षात्रविक्ष देश्य विकास क्षेत्रकाति । विश्वपति । विश्वपति । विश्वपति । विश्वपति । अपित्रविक्षात्र । अपित्रविक्षात्र । विश्वपति । वि

प्राह्मकः अन्येष्वक्षित्र विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व क्षित्र क्षेत्र क्

क्षमः मार्यवाः कि कि पूर्व के वर्ष के वर्ष कि वर्ष के वर्ष कि वर्ष के वर्ष कि वर्ष के वर्ष के

वीशका भागा १ लागाएअ स्थित भाग अभवाधिक नावे ना भेजाबिक भवी कुत्र त्याहिति त्याहित विवास भवाधिक महिताहित । ११ कुति के विवास के विवास के विवास भवाधिक महिताहित । ११ कुति के विवास के विवा

ताया श्राह्य विशेष कर्ण वा मूर्य भागा (वन १०) माना भागा (वा (वा वर्षान् वर्ष मव (लाय) भाग्य) जिनक देव हा मानि निक्कः (स्व वर्षा भाग्यः) भे । जो में के प्रवास माना हा । जा वर्षा वर्षा

नम्ह (यन महायात्रम् : डेक्मा अना क्रीमा नेवानिव (व्यन्द्र विकास) विकास द्रामा क्रिया निव्य क्ष्या महाया क्ष्या विकास विकास क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या

खर्मभादः अर्थमण्डका विकास मिन्निक विकाश ग्रीवाल्यायनभाद्र गोवद्वि १ श्रीवाक्ता अल्याक मुम्बन्ध विकास विकास के विकास वितास विकास वितास विकास वितास विकास वित

श्रय (माणानिएवर) विकल्यवेमा मीर देशांनिण्यां कि क्रिक्टियां वर्षि क्रिक्टियां में वर्षिय क्रिक्टियां में क्रि

याच्याच्यार्नेश्यविभक्षेयव्यक्षभव्यविभव्यक्षित्रायिक्षित्रम्यातिव्यक्षितिक्षितिक्षित्रम्यत्रेश्येत्रभविभविक्षक्षित्रम्यत्रेभित्रक्षेयव्यक्षभव्यक्षित्रम्यत्रेभित्रक्षित्

श्री निर्मा करें निर्मा करें निर्मा कर्म निर्मा निर्मा क्रिके क्

23

राज्यस्वामभाभित्मात्। सङ्ख्यकः श्वाभानां भव्य मिनः श्वीक्ष्यकः ग्वमात्मभाने विश्व भव्यभाग भन्नीननिवर् (नन्यानभत्म हक्षणात्व कर्षेश्वाकः जात्व विश्व क्ष्यां स्वाप्त कर्षेश्वाकः जात्व विश्व क्ष्यां स्वाप्त क्ष्यां स्वाप्त क्ष्यां स्वाप्त क्ष्यां स्वाप्त क्ष्यां क्ष्या

म्त्रार्शिवरभान् भवस्थान । भवस्य । इव्याद्य स्थान । स

अम्हरीयामको द्वामा देव स्वाह नर्व (त्व ह्वम् अहव अरोग) ९ पर भेसू उप्योग वर्ग के द्वाप प्राचित ह्वाप प्राचित हिय अर्थ के वर्ग के वर्य के वर्ग

क्षणानिक्वन नेत्राव के विश्व के प्रति के प्रति कि (वा विश्व के प्रति के प्

नीनीः ब्युमल्यों मीर् । प्रव्यात्रमार्वे (मार्के प्रवास विभान क्ष्मां क्ष्मां क्ष्मां क्ष्मां क्षमां क्षमां क्षमां क्षमां क्ष्मां क्षमां क्षमां क्षमां क्षमां क्षमां क्षमां क्ष्मां क्ष्मा

वः अभिन्याकेले व्यानिक्तिम्विक्त्रिक्ति व्यानिक्ति विश्व क्षेत्र क्

यग्रमाठानायण्यावरित्रावः कृत्रेख्यः अन्यावाकार्यमाञ्चकार्य (प्रतिवन्यस्थितिविष्ण्य (तस्यः न्यतेवामाग्रस्थितिव क्षित्र विष्ण्य क्षित्र क्षित्य क्षित्र क्षत्र क्ष

त्र या रश्चे त्य कृति मार्थ त्य रश्चे विश्व विश

रीमान्यूनिमान्यातान्य नान (मश्यू किछ्या निर्मिक कर्ण महार्थिक कर्ण कि विश्व कि क्षेत्र कि स्वाप निर्मिक मान्य कि प्राप्त कि प्राप्त

श्वाविक्तिने विक्रमायाः निश्चित्र भेति विक्रमायाः निश्चित्र भेति विक्रमायाः निश्चित्र भेति विक्रमायाः निश्चित्र भेति विश्व क्ष्माने विक्रमायाः निश्चावित्र विक्रमायाः निश्चावित्र भेति विश्व क्ष्माने विक्रमायाः निश्चावित्र भेति विश्व क्ष्माने विक्रमायाः निश्चावित्र भेति विश्व क्ष्माने क्षाने क्ष्माने क्

क्रियां हुन महिल्या म

जोध्यास्तान्धितं श्रीताद्वास्याये विनानितात् । विनिने ताजि विनिन् ति स्व विनिन् ति विनिन् ति । विनिन् विनिन् ति । विनिन् विनिन

शालनान्विकान्छ भेवात्त्वे में के अध्याप्त विनाविको नव विनाविको नव विनाविको नव विनाविको निक्य कि अधिकान्छ भेवात्त्व अधिक अधिकार्य के विनाविको निक्य कि अधिकान्छ अधिकार्य के विनाविको निक्य कि अधिकान्छ अधिकार्य के विनाविको निक्य कि अधिकार्य के विनाविक विनाविक कि अधिकार्य के विनाविक के विना

र्मिर्लिनिन्द्रनाना हैनानि (तर्वने ने मिन्द्रवे के नित्र विकास क्षित्र क्षित्

20

स्थित्यक्षाण्डामी भागित्यक्षाक्षाक्षाक्षाक्षाक्षाक्षाक्षाक्ष्य स्वर्धित स्वर्य स

श्रात्यः श्राणिः श्राणिनवरायीण श्रमभिववभाववे वे पाद्यः श्रम्य क्षिणाव्यः श्रम्य क्षिणाव स्थापित स्

न्तिविश्वा म्हानि । महिन्द्र । स्व विश्व विश्व

जन्मात्राच्यात्र्

93

मार्शकः मध्य गर्भाना गर्थितापः भरोमा यम्मार्थाय मेन्या प्रमानिक मुन्द्रिण भरोमानमः नवा भागते व भागते व भागत मार्थित स्व विकार में विकार

-अणिहरू के क्यार्थ द्यार्थ द्यार्थ द्यार्थ द्यार्थ द्यार्थ द्यार्थ के विश्व के क्यार्थ के क्यार्थ द्यार्थ द्या द्यार्थ द्यार्

কুলনিমই ভিল্ফিটনে প্ৰসন্ধিৰাহগান এই ভিনৱপেনন সামিনাভ্ৰ কিবশ্বিপ্ৰছলি পুল গুলামিল বাজিমানপৰিসজ্ঞাহ সক্তানীতিই ছি পুল্পাই সান্ধ সমানি নাই জান বৰ্নাম সামিল প্ৰতি কুলা নাই কিবলৈ কিবলৈ

त्स्व॰दाङ्ख् गृष्ठ-

नीयि निर्वाभिनाहिं । भव विश्वादिः लिमादः किमादः नीइन कि मनक ग्राक ठके जिस्कार जिस्वर स्वेन् र चिम्मखावानामव्यम्भाषायः गुरु न्वाम्वायानिकवाह्य भेज उर्हाज । विनायतिः (भाउव कि मैक्टे भवना मि जिः गृंश) ने ज्या निर्मा वयः द्वाराष्ट्र वर्व वर्व वर्ष के अः १६१० माध्याव प्रमीत्यम् वृष्णाणाति ग्रेष्टिः श्वात्मावनानिणः १०४० म् व्यत्रक्त शेनिकेमाविनाचिर् क्रामः म काइकारोवन°विम•

मार्सियामित्रेशाना निर्मेशालियम्बः प्रेंश्विमेशियाशास्त्र व्यात्र व्याप्ति व्यापति व्याप

उद्यानियानिया विकास में त्रिया के स्वर्ध के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य कि कार्य के कार के कार्य के कार के कार्य के कार के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार कार के कार के कार कार के क

नेनीड भन्भार स्वाधिक्याः नर्भः क्ला याः मम्रोववरता देते वीत्रिम्प्रोत्मक्त्रन्थि रिवृत्रप्र नय्क (भावस्त्रविक्रमा शो श्वाधेना कि भवस्थि महत्विक्र मिन अपि मिन स्विधि स्वाधि स्वा

क्ष्या क्षित्र क्षेत्र क्षेत्

े मीनन्त्र्वासीर्जा १११ क्या विकास वार्तिक वार्ताका वार्तिक व

বুমর্মতঃপ্রমর্শনাথ প্রেমনোগুণজি গোলের্বত শুদ্দ দ্বার্থানিক ৮ শৃত্রদর্শনিবীক্ষরক্র শনোদ্ধিক্রমন্ত্রত ক্ষ্পুরোমানেসনিক্রণজিল নাম ক্রাপিকিণজেনক্তাক্র সংগ্রাহ্ব শ্বন্ধিক ক্রিক্র ক্রেন্ত্রত ক্রিক্রান্তর ক্রিক্র ক্রেন্ত্রত ক্রিক্র ক্রিক্র ক্রেন্ত্রত ক্রিক্র ক্রিক্র ক্রেন্ত্রত ক্রিক্র ক্রিক্র ক্রিক্র ক্রিক্র ক্রেন্ত্রত ক্রিক্র ক্রিক্ वानाताम् । वे प्रभाव के वाक ने ने प्रवेशिया के ने विश्व कि विश्व के विश्व विश् युज्य स्मानः हतारे वे वसम्बर्गामाय मिला विवालन्ड वारायक्रमानियक्थः । १९१० (राजभी (भवववाभ विकिन्ने) मा (मार्गर्किक कर्णमात्र १२० १० मे पार्वर निम उडव्या लो रियोन तोक्ठीर्येशायक्यामियक्यास्येर्थेर्थक्काक्यायायमे श्रिकारी अवसी अक्षेत्रिक वें(निर्मिन्यर लन घाल (मेंद्र ११ प्र लन्म भी निर्मिन के अभूना राहिए) में के विद्यारा शिय भीक्रानेन । श्रकेन्द्रक्तिगणा एर्भानेजाय रेखानानेकमरेकान् दिन्छानिनगरः १० । श्रायमक्षेत्रेनी उने वीक्षेत्र्रेनी

विश्व हिनः अवस्वः गरण्या पर मुजनमेण्य क्राव्या कर हा व्या प्रकाश का आप का मक्ष्य क्राव्य के क्राव्य क्राव्य के क्राव्य क्राव्य के क

विभिन्निक श्रू वर्ग ने मा मत् व्यान प्राप्त प्राप्त वा मा का मन के कि कि का निम् के वा कि कि का निम् वा वा विभाव व

वनाम दन दन्द

कानो ने प्रवासिन सिर्फ: १४१ के मेरक्कि देन निष्ट प्रशास्त्रानिक्ट वास्त्राक्रियो कि क्या निक्ष्य प्राप्ति भाग । ११ १ के मेरक्कि प्राप्ति के विकास कि वास्त्र व

Total Control

भित्रः गर्योठ र स्को ती ती नान र गर्का धनी ने नवः गक्रिकि प्यक्त ति भ मिक्स महितः गुरुक र नाम गर्ने ति ति ति विक्रिक्ष महिता नि भ मिक्स महितः भ भ मिक्स महिता महिता नि महिता नि महिता महिता महिता नि महिता महिता नि महिता महि

क्लि १४ भूजानानि मण्यानानाण शक्कि विकारके प्रिक्ति । जिल्ला विकास क्लोक कर भूजी के विकास निवास करा का का का का

भगाम्न १श ।आम्न अस्य ।स । एो।क्यु अस्त त्र्य क्यु क्यु वर्ष मामा वर्ष निष्मा का विकास का विकास का वर्ष मामा मामा का विकास का वर्ष निष्मा कर्ष निष्मा का विकास का वर्ष निष्मा कर्ष निष्मा कर्ष निष्मा का विकास का वर्ष निष्मा कर्ष निष्मा कर्य निष्मा कर निष्मा कर्ष निष्मा कर निष्मा कर्ष निष्मा कर निष्मा कर निष्मा कर निष्मा कर्ष निष्मा कर्य निष्मा कर्य निष्मा कर्य निष्मा कर्य निष्मा कर्य निष्मा कर्य निष्मा कर निष्मा कर निष्मा कर्य निष्मा कर निष्मा कर्य निष्मा कर्य निष्मा कर निष्मा क

नानाम् सन्भागेन मार्थमा । रिलेक मेने (त्रकर्न सिर्व्यान प्रव्यान स्वान स्वान

एक गमर्जितावक को मुका हर्यो मा प्राप्त में भी मूर्ज गरिय मूर्भ भी भी पर भाववण्य भी । अस्ति। विवद्ध माजवाद का विवस माजवाद के मा

or the contraction of the second of the seco

भुटनेनाजकानः १११ चिन्न्यक्षिनभवरमत्न न्यस्त्रेना स्वान्ध्वन्यात्रिक भारता १२१ मान्यानं देश्विक स्वान्ध्य क्षेत्र शक्तान्धार्भा में पूरीवां भेम् रिवामियिकेशानिनां ने हिक्सिर शेताको एवं वामिकके निक्ष महनारहा मरावाता विभाता मर्हिताः । त्रीनि गर् कल्लियन् जर्मः मठाना (भाभिकान्य न्या वनकानीनत्या क्रा के वित्र देश दर्श जाने हिक्लितिमति न्येत् १३० व्यक्ति भिर्देश मिल्यामिल्यक श्रेशियशी भिरे १५५: १५५: मरावारिकि विचारेव परिणानेज कियार जारे विकास मर्विमन्त्रक्ताङ्ग्रज्वाक्तवाः क्षाञ्छानाभकाः क्षादामम्हत् रुखक्रवाभक्षाज्यायिक्रेण्याय म्याबावायम्बन भनीनमा ग्यरीव भन्नाक विभाव विदिशीय वेवाज म् भने कन विद्या कि निवास विदेश विदेश का नार्यो वितिवने भेत १० (पिकि रेश्मर किसी निर्माण विश्वाम्य गर्म देश प्रकार्याणि क्ये विश्वामि व्यव विश्व विश्व भेजान क প্রিক্তন কর্মান ক্রিক্তি সপ্সক্রাদান পাঠা র্যোধেন প্রি একাশ্রমক্ষণ কর্মান প্রিক্তন কর্মান প্রক্রিক্তি সপ্সক্রাদান পাঠা র্যোধেন প্রি একাশ্রমক্ষর ক্রিক্তান কর্মান প্রক্রিক্তন কর্মান ক্রিক্তান ক্রেক্তান ক্রিক্তান ক্রিক্তান ক্রিক্তান ক্রিক্তান ক্রিক্তান ক্রিক্তান ক্রিক্তান ক্রেক্তান ক্রিক্তান ক্রেক্তান ক্রিক্তান ক্রিক্তান ক্রিক্তান ক্রিক্তান ক্রিক্

भू शास्त्रमान क्रिकेट जात्रमाभू र अवः रूपेटाभिति । शास्त्रभान भेज भान शास्त्रमा अवस्थित । श्रीमान भव कि शास्त्रमान भव कि श्रीमान भव कि श्रीमान भव कि श्रीमान भव कि श्रीमान कि श्रीमान भव कि श्रीमान कि श् युन् युक्त्विन । प्रोमी त्रामात हिन्द्र का द्या विक्र के का विक्र के का विक्र का निम्त का निम्त्र का निम्त का निम्त्र का निम्त्र का निम्त्र का निम्त्र का निम्त्र का ्यम्। मानशेयोय्यियम् शेजनेर् श्रेनिमाः यगाः १९१विम स्विति याद्वास्य भावत्वनाव मिक्तः । वियत्वेवीत्रगीय स्थापिन नम्भामनाकावः क्छाः रुह्यमेथिक्स्जलिङकाम् - ज्यानिश्काशिकारगिविशाष्ट्रिकाश्वासी: गुनिधिर् देगाए वभता ग्रीभेड चि स्थार्भ भागमने कामः श्रवस्था विशा विवरुधाय विशेष(भाषि ये भक्तर ने भन्ड वनशारिख ११० विन्या ति वित्राण कि मुख्य विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष में শ্রীভিভিশ্বনাধান বিন্যোদ পালবিক্ত সামাদেও পৃতিক্ত পার্সাধানত কটা জাদুর্থনিক্ত সাংগ্রাক্ত লাভাছিত পূর্ণ কর্মক স্কুল ক্রিক্ত সামাদ্ধ বিজ্ঞান প্রায়েশ প্রায়ে

हतं कि प्रासीतामंद्र लंदाका लामि मिलाखर्त प्रमोगाय कि लोको का निर्माण कि लोकि के निर्माण कि लोक कि

का भन्नी जिल्ला नाभे के लिया ने महाना महाने के का निवास के का किया के निवास के निवा

अर्थकान अर्थक मानिए निर्मित्र किया ने म्या भारतिने निरम् भार्य मान्य द्वा भार्य देश १२१ विक्लेख मी व्यवस्था मान्य निर्मान मह्या छ । व भार्थ भार्य छ अर्थ भार्य विकास की नार् ज्यामः । अग्लिय्तियमानी म्यिज क्ष्यु व्यक्तियाने एक विष्युक्तिकार् ने म्यायस्तान के भाग स्टब्स्यायक य्याक्तीनि श्रामिश्रेनानिश्रेमानिविश्रेष्ठः। गार्गिग्रोम्य्रमम्ब्याक्षिनिविष्ण्यानायय्वम् मिश्रेक्टमाम्यप्रोतिवामे श्रेष्ठिया श्रीन् शक्तिः शक्तिक मध्यक्ति । श्री भक्षानभा श्री जी । श्री वारक्छ निवीर्भ्ने नक्फ नार्यमास ग्रामिक म्रापि क्रितः मात्रकः पोरिक्तिना थियक (मश्लेष्ट्रकेड्डाः शृत्र)

क्याः रूथेयक्याने म् रूक्षान्त्र भिं इत्ना म् उत्क्षिति होः ग्रूक्या शिवितिकानने । मीन् वीक्र उत्म म् भया विश्व

लीत्थीन् ककमन (मार्गिन निवनस्क्रिप्तोस्मिक्विता

· आर्तिप्रवस्थाप्रवास्मानिनश्चन्त्राक्षेत्रवार्थन मत्रीत्रवण्यक्षेत्रक्षेत्रवारः निक्ष्यक्षेत्रवार्थित्रव्यक्ष्यक्षेत्रवार्थित्रव्यक्ष्यक्षेत्रवार्थित्रव्यक्ष्यक्षेत्रवार्थित्रव्यक्षेत्रवार्थित्रव्यक्षेत्रवार्थित्रव्यक्षेत्रवार्थित्रव्यक्षेत्रवार्थित्रवार्थित्रव्यक्षेत्रवार्थित्रव्यक्षेत्रवार्थित्रव्यक्षेत्रवार्थित्रवार्थित्रव्यक्षेत्रवार्थित्रवार्थित्रवार्थित्रवार्थित्रवार्थित्रवार्थित्रवार्थित्रवार्थित्

धूमिनार्युअर्देश्त । शिव्युक्ष मार्थिक क्षार्यातीन ह्लाम्स (सङ्ग्रेन) १ भिष्यात्मा एक एक स्थान । १ भिष्य क्षार्थ । १ भिष न्त्रिक सम्माया मिन्निमें में किन्य कम्तिम् ता वि मुक्त्य भर्मिष्ठ कर्मा का निक्ति का किन्य मिन्निम किन्ति सम्बाह्य मात्री सम्बाह्य कर् वियमभी: श्रेयभी श्री शा पक्षिमिजाल स्राम्बरमा का भी स्राम्ब वयस्य विस्तानि लेखः भेगाति विशेषि पर्यानि मानाम्मानियाः पर्याखना (अ क्रगानीनिक संगरिक विक् - अविह्याम्याम्ययम् भनः गर्भानानम्य (या दियो (गोत्रीनन्त्र यात्रांगेमाः प्रिनात्रास्म नेगीक्षक जावा हात्रिक कर गुभ्ग विद्वितिम् विद्वित्रन् भनास्यास्य भवद्वितः गुक्याने स्थान्य म् कार् द्वार्थान्य स्थान्य विद्याने विद्याने क्ष्यः ग निक्य्यं (गी क्नांकीनाः क्ष्य हर्निननानमाः अध्याद्याकाठवार् वीक्रकावानाथ (वायनः स्थर्थ कि कित्वावा ह अधाव (कार् रेन्द्रां भीमत्थवा का नाम कारो दिना किर्मा दिनिक की सम्मित करिया प्रकार विद्या का सम्मित्र विद्या का निक्त किर 4: १३ १मेल्स्मी क्रं मेल (महानिष्क्र) मिन्न मिनिपक्र नाकी ने प्रमानिक्त विभाव क्रिक्त क्रिक्त

65

वर्गाति।भ गोर्देक्तोक्षिम् अवस्थान्य वर्गान्य कर्णाका कर्णाकिः भामस्थित्या अवस्थान्य क्ष्मान्य क्ष्मान्य

क्षोताक्ष्यग्राणम्बारम् । १० विन्यानिकाभागान्वभाविभागान्वभागान्वभाविभागान्वभाविभागान्वभाविभागान्वभाविभागान्वभाविभागान्वभाविभागान्वभाविभागान्वभाविभागान्वभाविभागान्वभाविभागान्वभाविभागान्वभा

जोवान् तामः क्छाव्याविक पर परे भे व्यागिन मन्छा छि निती क्षण म्यी म्यात भाव पर भिन्न भाव पर कि भाव हिला का छा यम में भे मती में असमान कि वास पर कि मति के पर कि के पर क

দ্বসভ্যানিজ্ঞানিস্পাদিমস্ত্রসাভিষ্ঠানিস্পেমস্থ সচসচ সচশং গ্রিক্টিভনত মধ্তসূর্ণ পরিসমাক্সতিকানা বিমানি মুকা ছমির্মি জিনু শুদ্রি শুধ্রি স্কৃত্রি বিশ্ব মতি ক্রিক্সিণ্ড এই বিশ্ব মণে বস্ত্রতান্দির মস্পতিশৃত্র বার প্রাম স্টেত্তত সামুক্তি স্থ্রে নিক্রাক্তিয়াত তথা বিশ্ব স্থানিক স্থ

ति १०० १ छान विकास निर्मा के ति विकास के अपने मी विकास में मिल्या में मिल्या के निर्मा के प्रतास के प्रता

89

वित्रक्षिण्य विश्वास्त्र विद्या प्राप्त विश्व के स्वास्त्र के स्व क्ष्य क्ष्य के स्व क्ष्य क्ष्य के स्व क्ष्य क्ष्य के स्व क्ष्य के स्

कार्तः भेनित्य रामं प्रतिनिः स्टान मि निङ्क प्रस्के विद्रामित रूपर क्योगमान्य प्रक्रित स्वादेश स्वादित स्वादित क्यार न प्रतिका भेना मुक्क न दे कल्लो में स्वाद्य स्वाद स्वाद्य स्वाद्य स्वाद स्वा

कः अस्थावाम्मिन (म्यार्भियायः भद्र मक्ति विश्व विश्व विश्व माम्बन्ध विश्व क्षित्र कालि नामां क्रिया विश्व विश्व विश्व क्षित्र क्षत्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षत्र क

प्रमासीर्धमन्त्रवः गण्यवात्वा क्रण्णाना भेक्षाना व्यवस्थित । १०० गण्या श्रा श्रिक्य विश्व विश्व

महा (भावित्रिक काम्य नुमित्रकाम्ये कि । १०१ मुम्बे वायमा स्माप्य कार्यायिक (मार्थाय मिलाका १०० में देखानियम निर्मेक के मिलार (मार्गिये हि । यमिल्यक वेमक्थक विकास १०० में विविधिय (भावा मिना शतिय कार्याय कार्याय विविधिय । विविधिय कार्याय विविधिय । अन्व प्रति । प्रस्कारण भिन्न (ममर्वकार्य) शिष्ट्यकामत् श्रद्धान मक्षणे (माय्यो महिले । हेने नक्षणे हिन्न भार स्वीति महिले हिल्दि क्ष्यित प्रति । स्वाप्ति । स्वित् । स्वाप्ति । हेने नक्षणे हिन्न । स्वित् । स्वाप्ति । स्व

सिविजित्यमान विकायति वनीत् १२०० हातने जिन्न विकाय कि वि

नोरस्थानार्यम्भिनिनानाः शानिनाः रहानार्यस्थाने यवल शार्मारख वणीन् मकतारक्षण सामिन्यस्थान्य क्रमानिक क्रमानिक किर्यामिन क्रियार्थम् क्रियार्थम् क्रमानिक क्र

निक्षिणः व्यक्ष्यार्गण्यव्यार्गण्यव्यार्गः श्रमक्षि कानिमक स्थमक्षि क्रिकात्रोक्ष्यभिविष्य मानवस्थका १० । विश्वास्याप्रश्चमक्ष्य स्थमक्ष्यां क्रिकात्र क्रि

मान्यत्वीक्रिंगोक्क अम्लेक्ष्यां निक्यां मान्यत्वां मानिश्वां विश्वां विश्वां क्षेत्र में स्वां क्षेत्र में स्व विश्वां क्षेत्र मानिक्ष में स्वां क्षेत्र मानिक्ष मानिक स्वां क्षेत्र मानिक मा

लाहनक्षभेष्ट्रस्थानिकार्यानिकार्यानिकार्याम् । १८ विश्वास्थित्या । १८ विश्वास्थित । १८ विश्वास । १८ विश्वा

यानिकालिङः ऐत्रेक्तिकेः १६६६ मानीः अच्यानेन्वच्यानेन्वच्यानेन्वच्यानेन्वच्यानेन्वया विक्रिकेशः (मानीको मानविक् यः क्षित्रभू : गोम्डच्याने विक्रिकेश्याने मानविक्षेत्र अपनिक्षिः अपनिक्षिः अपनिक्षाना । स्विक्षित्र विक्रिकेशः

अक्षमालोक्त प्रतिकार विभिन्न मारवाद्भ न विद्या १३ मार्गानी क्षेत्र भागमा मार्गानी न स्वक्ष अक्षा क्ष्या क्ष्या (विभवादिको विक्षा क्ष्या क्षित्र क्षित्र क्षेत्र क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्य (विभवादिको विक्षा क्ष्या क्षित्र क्ष्या क्ष्ये विभिन्न क्ष्ये क्ष्या क्ष्ये क्ष्ये क्ष्ये क्ष्ये क्ष्ये क्ष्ये - यादावितीत्रीक विवास्त्र में व्यव विवास विक्रिया विक्रिय

अविकारिक १०११कविया है। १२१ महनक्षा महत्रामा श्रमक्षितामा श्रमक । अविकारिक । अविकारिक । १३१ विकारिक । १४१ विकारिक ।

अत्ये अव्यव्याक्तिः भ्यान्य्या अञ्च्या अञ्च्या वृत्या वृत्या का विश्वा विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व

५३नि प्रकृतकाक मेक्कथर्वाक्रिक प्रकृति क्ष्म क्ष्म हार्क्ष में ग्रायक वाम त्रिक्ष क्ष्म क्ष्म क्षिक क्ष्म क्षिक क्ष्म क

एका मर्थित मिल्या । भग्नी त्या विभाषा मिला मानिया आक्षा मानिया मानिया मानिया के क्षित्र कार्या मिला मानिया मानिया

म्निङ्ग्थनिमान्ति । निन्धि । निर्मिष्य के विक्रित के विक्रिय के प्रति । निर्मिष्य के प्रति ।

अवनिष्ठविष्यं नामित्रव्यां निर्मा नाम्य स्व नर्वाः विष्ठ विष्ठ निर्मा क्षित्र मान्य निर्मा क्षित्र क्षित्र

वृत्राकाकार्यभार्यिकेनाच्येनः शास्त्र मर्मातिव दक्कामिक्ष्यवक्षात्वान म्हिना । १० म्मिनेक्ष्य १० में विक्रिके में विक्रिके मिन्द्र । १० में विक्रिके मिन्द्र | १० में विक्रिके निर्वारितीयाः यविक्रिवाचा मने प्रांत्र प्रविक्रिकेन वर्षे क्ष्यानियाचि यूने कि क्ष्येन ने विक्रियानिक स्थम वियान एक गरे प्रेमार्थियन (यनिश्राण दियाः गर्म निर्द्राः ।वा ववस्वने भार्याः नेने भः भार्यभार्यिक । अदिविधनश्वव (शाम मार्शाम् भागः । अपवास्वाय विक्वाम् गुर्मिक मुली लिश्यको।वा कृत वातिवी:गास्त्र व सेव क्यां विक्सिन्द ने तास्त्र न गेयात पर रिका कारते मिरिका कि निर्मि (का ब्रेसिवार्वन पर्मिका के विकित्य का ने कि कि का का कि ने कि के कि कि कि क्छांनाम्यक्त्री काराविणीनविद्विणियेतागेवाणीिक १६१८ तिख्येत्रीक्तिली क्षिति विक्रिंगेवाणामिय ने लाक मैं असूड: नम्प्रावके भवके एयु ववक्र वित्रो नकः १० पृष्ट् वाविकेः १२ प्रवाद वाडवर्गिर्यास्त्र वनवित्र वित्र र्शक्रीयाः गुश्रवास्थानाः मुल्के तास्थानाः १४८ क्रिक्ष कृष्टिन स्वतं स्वतं अभिनित्तं विश्व क्षितं क्ष्यान् विश्व क्ष्यान् स्वतं अभिनित्तं क्ष्यान् विश्व क्ष्य क्ष्यान् विश्व क्ष्यान् विश्व क्ष्यान् विश्व क्ष्यान् विश्व क्ष्य क्ष्यान् विश्व क्ष्य क्ष्यान् विश्व क्ष्य क्ष्य क्ष्यान् विश्व क्ष्य क्यान्य क्ष्य क्

यभीतारिक किंगतार्थिक में निकार किंगति किंगता किंगति किंगत

रुषामुर्मिक्यतमेर देशमा निक तिराद्र असरे सिर्मा विवनी राज्ञानम् (माहर्मिति । भारति राष्ट्री विशानिताः एक । दिल्यानिताः एक । विवास मानित्र । विवास । व

भेगामभूकार्विः १) (दमलीत्मात्ममानम्मान्दे संबद्धाः वर्षेनन्द्राह्मेश्चर्धाः वर्षेनन्द्राह्मेश्चर्धाः वर्षेनन्द्राह्मेश्चर्धाः वर्षेनन्द्राह्मेश्चर्धाः वर्षेनन्द्राह्मेश्चर्थाः वर्षेन वर्षे । वर्षेन वर्षेन्य वर्षेन वर्षेन वर्षेन वर्षेन वर्षेन्य वर्षेन वर्य वर्षेन वर्षेन वर्षेन वर्षेन वर्षेन वर्षेन वर्षेन वर्षेन वर्षे

उर्वनमद्भिः अवर्षक्षाद्वत्व । आवित्रना वायुना ११ विश्वव ताम्यात्रिनाक्ष्यं कालोक्षेत्रकालोक्ष्यं विश्ववित्र । विश्ववित्र ।

व क्ष्यानीति (रंभागाः वर्षादे वृद्ध वनि क्रिम्न मक्षः विश्व क्रिम्मिक्ष किर्मा क्ष्यानीति (रंभागाः वर्षादे वृद्ध वनि क्रिम्मिक्ष क्रिम्मिक्ष क्ष्या विश्व क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष (स्थाणिभव्यम्भ्येष्टि: क्षेकानी॰ स्रम्भू न्यानिनामन्द्राने॰(वे रिवासीनभजानग्राणा) । जन्यतिक मः मसिनववातिनिधवया प्रवि ्चर्किरिव क्षेत्रेश्व भार्विनि विवया गेराभविद्धिः भण्डोकः निन्द्र क्षेत्रेश्व निर्मिश्व क्षेत्राणि निक्षिक कामाक अने मुख्यो गूर ग्रियातीयन्त्राह्यमः १४०१मार्गावस्यः मिन्नान्द्रतिन्दे नायमः निवायावर्षभावास्टिक्मभावाविकार्यः व्यक्तिस्यभावाकमाने क्वन्त्र्राभाध्य विथ्वन्य नामास्माः भाष्यान्यः माम्यः श्रक क्राः ग्नायक्यभानाः स्व (पाष्ट्रिकः हात्नेन हो इवा ग्रहण्ता (कार्याताणिक र्वानः कार्यामाना विक्या भ्वाबा स्वाबा स्वाय्या । भग्रामाना स्वाय्या स्वाय्या निर्वाधिनः गर्रार्य्य

उमाननेविधिविक् जिन्न न्या १२ (मान्यनीना वर्ष रिश्म मिवक् स्व विक् मार्य विक् मार्य विक् मार्य विक मार्य मार्य विक मार्य विक मार्य मार्य विक मार्य मार्य विक मार्य विक

य्गाप्तिभीणमें अतिकावश्यिति कृता सहाका श्रेष्ट्रा विकाय का नृत्ति का निवाय का निवाय

नालिए गमत्कानी भिद्धल तोतिः महर्मितिः ग्नीष्ता मिति भिति प्रिम्पि हिन्दि मिति एक ने व्यापित प्रमान विभिन्द निवासि । विभिन्द विभिन्द । विभिन्द

.અર્

- ज्यास्नानाश्मायम् वर्गाक्ष्यां वर्गाक्ष्यां वर्गाक्ष्यां वर्णाक्ष्यां वर्णाक्यां वर्णाक्ष्यां वर्णाक्यां वर्णाक्यां वर्णाक्यां वर्णाक्यां वर्णाक्यां वर्णाक्या

ाः की डावनेय ि वर्षन मिडिश्य विविद्य के प्रतिक्षा वर्षनि श्रित्य मिडा अभवन पर्ले उभावनवाजी मर्मू इतः मर्म्य वाम इति गतितः ने का मान्य ना मार्य ना मार्थ ना मार्य ना मार्थ ना

केरेलि क्यो ममानाः श्वरावेः भ्रमेचि विविद्य किल्मानि वनाम् को श्रामाः किल्वावार्य नार्मेन किल्यावना किल्या कार्य कार कार्य का

क्ष्या विश्वान त्या गीतिया त्या निविधिक । विश्व विश्व में भिने के स्थित क्ष्या क्या क्ष्या क

-अविन्द्रन ति विक्रियम् अविविक्र प्रमान विश्व क्षेत्र क्षेत्र

गोर्थनातिह वाटार्श मित्तन् मेत्र विकाल प्रशेष विकाल के पित्र किल्लियः प्रश्निक प्रति के प्रश्निक विकाल के प्रश्निक के प्रिक के प्रश्निक क

शिमानक (वार्यने व्यक्त (या क्रियाण्यू मन्देव (एकर्य) १००१ मेवमा विभगायम्का यन्त्रिन व्यक्त क्रिया क्रिया विश्व विभाग विश्व व

. शिक्तित्यः (दमिन्ने बक्तावनः श्वः हीर्यिन्त्रगीमिनिविधानिकः । श्विक्ष्णेनिकः । श्विक्ष्णेनिविधानिकः । श्विक्षणेनिकः । श्विक्षणोनिकः । श्विक्षणेनिकः । श्विक्षणोनिकः । श्विक्षणोनिकः । श्विक्षणोनिकः । श्विक्षणोनिकः । श्विकः । श्

सूर् (ति दि के भार ने मार्थ में मार्थ ने मार्थ ने मार्थ ने कि कि ने मार्थ में मार्थ ने मार्थ

देि १३ ग्विसिक्छ अन्तरः कालन हिला या एक शख्य अवने आता का अक्षात्र का कृष्ट के प्रति विकास के प्रति के प्रति के विकास के कि प्रति के कि स्वार्थ के कि स्वर्थ के कि स्वार्थ के कि स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के कि स्वर्थ के कि स्वर्थ के कि स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्य के स्वर्थ के स्वर्य के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्थ के स्वर्य के

क्रमिति क्रिम्म्याआण् पृह्टि हिन्ध्यमामीना विचा कि मीना किर्मे स्ट मह मह मह मह भे भारत भी निम्मे आएक जा क्रिया के क्रिया के मिन्ने क्रिया के क्रि

काविल्मातीकमानाव्यव्यवनेतीनमा विवल्त्यातीमप्रत्व्यायक्रमानामिनीर्श्वालामामिनर्गनीर्वित्र । भरामामाक्रामिनर्थायं ते क्रवन सिक्षम्नेकमिन स्वयन्ति। जार नाय गण्यमः १ के गर्क गर्क गणा । तर विश्व जिक्ता था । विश्व विश्व प्रमान विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व नम् (गोर्नभ्य ज्यामित्रिक्षिक्ष क्रिक्ट (में क्रिक्ट प्रेर्निक्ष क्रिक्ट प्रेर्निक्स क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्र क्रिक क्र े शुजाक्य के मानिकाः भग्यव मान ह ज्यक्य जमाया क्रिका हु मः १३ म रामी म मान है द्यान में भूगः ने निः १८ १८ १ म्यू लाय लोकोः खित्र (यान्यात्क वार्वः । रुख स्टिन्य मान्यः वानिका प्या अमरेश म नशा कता किताने लेजी विकिशे श्रव वर्ष प्रामाण मिंक करनी म (का विकान मिन ति स्ति विकास का

१२०१२ अस्ति हिन्द्र में क्षेत्र क्

२० मिल्र भिन्न मन्द्र के १४-१ राह्य रहार कर्म मार्कि लावर्ष तिश्व रिमाण मार्कि क्रिका मन्द्र मार्मिन मन्द्र के प्रति क्रिका मन्द्र क्रिका मन्द्र के प्रति क्रिका मन्द्र क्रिका मन्द्र के प्रति क्रिका क

आह्र गोत्रीयत्र अत्यानित्रिक । अत्यानित्र अत्यानित्र अत्यानित्र अत्यानित्र में अत्यानित्र प्रतित्र भेजीन नित्र अत्याने में अत्यानित्र प्रतित्र में भी भी भी भी में अत्यानित्र में अत्य

क्रीनेण्डक्रक्षक्रात्मभावक्रिक्षनीयः माकाप्यक प्रतेष्ठ्ठक्ष्यत्मः प्रवः अध्यावक स्ट्रिम्प्रार्क्षत्र । १०० इटमक प्रवेश क्रिक्षां भूम विद्याचेका हिना विशेषा ने प्रति । १०० इति ।

(यार्ग स्वार्य न्यार्थ वाणे उठा कुठ छ दर्भ निन्ध मान्यामां वामां वामां के भी भी कर्य मनवं वाणे वामां वामां के विश्व में क

विमिन्न अभाग्य भाग्य भाग्य भाग्य विमिन्न के किया निर्मा के मिन्न के किया क्रिन पृत्र्यानक्षिकामिन (मत्याक्त्वेत्रेन प्रेचीलंगानकागीन नेतार्थिक क्रीविणान प्राञ्चिकामिक महत्वावाव्यविनः। भ अर्थायाण्यक्षिम मर्व्याप्रेकीविना प्रकृतराख्यक्ष्याप्तिविष्रभीयां किनायिनः पृथ्यम्भिक्त् क्रायाप्यनक्ने हास्यि व्यामनमान्तिकारो हो मान्यिक विक्ति क्या में किन्य भोक के प्रित्र नामियारिय क्या निव्या विविध्या के विक्ति में भी -39 विध्यवातक्षवेहक्तव्यम्(नार्कावः प्ठक्रोण्नव्ययाचीनां भाषे नय्यूनां गेडः नेज्यगीः नीययिवानेः प्रवृद्धाः योजनाः विवाः न ्राचान्नेव्यक्तानेमः रामक्षाद् नेयू इत्व प्रम्यं कारेनेव (त्रामकावेष्टः नेयु वर्ग प्रव्यवामाव नामेका क्षेत्र व मयूनाच्छाकः १२ गमानिकामः यूर्वतमक न् की क्र गृहमामाथीव्याकामात्रा निर्माण असी देशके विभू कि मानिकाम । १३ विम्ल विभाग महिला विभाग विभू मानका

भक्षीजाव गी कथा-भावाग्यीज विशाः भावाग्याद्वाद्वाः । गर्यीजव्यिभाय्वविभव्यक्षात्रात्वात्र भावाग्यात्र । भावाग्य अवनाभिक्षां भावाभिक्षेत्र विशेष्ट । भावाग्याद्वा । भावाभिक्षां भावाभिक्षां । भावाभिकष्ठ । भावाभिक्षां । भावाभिकष्ठ । भावाभिकष्ठ

विनामका; क्रिका: श्रेका: श्रेका: विनामका विवासक द्वाप्त्रीमा भागे विवासक क्रिका क्रिका: वर्ग क्र

त्र श्रविष्मत्र (कार्यमिन प्रकाम के वाका भागा वार्य के विषय भागाः १९ (तो किकी कार्यिक विषय कि विषय के कि विषय के व क्रिंगार्गेज पत्राक्षेत्रिका मन्यानि विक्ताम्य किंगारिया गरीता नार्गामीक निर्मेश कि कि गिरि के भाषा जाने यन भे जी चार भार उनित्रीनायाण्ड्कानीनाः खनण्डाः गन्या दिकामकी (नीनीति निर्माणके के गुनामां (विद्यानित्र के विद्यानित्र के विद्य मित्राहा:अस्वामाम्ब्रक्टीिकिविक्वा: स्विविवा:१३-१मद्रस्थातातातां मर् १३१० दिमोत्रिक मनवाद्य मर्मातां म्रह्मातां म्रह्मातां महर्मातां महर विकिश्तिन्त्रभागेश १० विकामार्थक स्वर्धन । भक्तः मामूका विभारमेश मामूका विभाव । भाषा वाल्याकाः मह्याप्त्रभागे । भाषा वाल्याका विभाव विभाव विकास के विभाव । भाषा वाल्याका । भाषा वाल्याका विभाव विभाव

प्रेक्डवाह १२ प्रेट्डिक्डिलिक्टिलिलिक्टिक

मामानिकालः १४ विकास आवैभाव द्वीत्मामी माने व्यान व्यक्ति क्षेत्र कार्त र कार्य माने अञ्चलक स्थान विकास के विकास कार्य के विकास के वित्र के विकास क

केत्रक्षेभाममिशालिक शाकान मः श्वामारम्यः यक भावरेष्ठ भव्यक्षित्रकाकारमन्त्रेशवाद्यांता १० विकास १० वि क्रिक्ट इन्निक्षित्वितिकार् जिन्नानिक्षित्वेन्ने महम्बद्धिकार्य विकास्य विकास्य विकास्य विकास्य विकास्य विकास्य द्धवन्त स्यातः न्यावेद्धात्य प्रायाम् वृद्ध नेत्रां निकालनात्या मुक्किममञ्चन्त्रन् गरा एद् चित्रनिष्ठ्यः निर्वामञ्चाविन्ना नीर्याष्ट्र(यवेन् विचार भूगान्यः ग्ताक् न्द्रामायात्रिंगातिकारी मीयाध्यावनी विविक्त मनि विविक्त मनिया विविद्या विविद् वीमाम् एक प्रमानिक्षी जाम द्वारी यक्ष माला वर्ग मिर् एक माता मिस्याना मिनि वामा भवा स्मेर विवास की मिना विवास की बनार प्रकाशिक्षितियोजियां कार्यार व्यक्षेता प्रवादिक्षा किन प्रकाशिक प्रकाशिक विकाशिक विकाशिक विकाशिक विकाशिक ख्यात्रिम्बर्ययभार्त्तर (केलिनियाक् मिलिक्स के किल्पान्य कृष्टि (नाय स्थान रिभिक्स मायकामाति किल्पान केलिक एक्स निया निवास किलिक है। विश्व किलिक किलि वित्यिवर्द्रात्वात्रेश्वभावभागित्रात्राम्यात्राम्यात्र्वात्रम्थात्व्यात्र्वात्र्वात्रम्थात्र्वात्रम्थात्र्वात् । अविद्यात्रम्यात्रम्थात्रम्या

जिन्द्रः वियण्मेताः मन्यपित नित्रगीः ग्निविश्वमानाः मेठिकित्रां दिवित्रक्तिः प्रतिः प्रति क्षेत्र विद्यन्त के नित्र के

भःआस्कित्यः (नाहनद्रातिक्याद्य) यहिद म्रेथेक्यामेन्यः १५ क्विकित्या २०इउमः याद्य व्यक्षिमा विकित्य क्वित्य म्याक्यात्रे विकासी व

मिमामात्माण मनाममः १०० क्रांकीत्मात्राणीवार्गिकाका करोवर्गिमिकारगेन देवान्य म १०० १ ववन्त्रवर्ष कार्यिक भागी कि १०० १ वहाइत कर मार्गिनाम मार्गिवाम मार्गिका प्राप्ति । १३ वि

भीमान्नितिला हे निक्यों खर्जाः ग्राथित्र अस्ति। (कंक्लिंगांगेन्ये दिन्दि । क्रिकें हिन हो न्या है निक्यों कि निक्यों क्रिकें निक्यों क्रिकें निक्यों क्रिकें निक्यों क्रिकें निक्यों क्रिकें क्रिकें निक्यों क्रिकें क्रिकें

भामकार्गमहत्र अश्वात्रेशायमञ्ज्या (वेमाभिकालम्यं नक्त्म यत्माविल्लो १कामा- १३ विकिश्वित्रोत्रेश मिनेश्वायां प्रत्येत में विकिश्वायां विकिश्व का विक्रियां विक्रियं वि

विष १२० विस्तृत्रम्याः मामा प्रथमः १६० (तर्मा कि विष्त्रम्य विष्यम्य को व्यवस्था विष्यम्य का विषयम् विषयम्

यम्भात्रयम् पृक्ष प्रतिविद्यानि । विक्रम्यानि । विक्रम्य । विक्रम

्रमाङ्गाओं अमित्रभान मर्ट्याच नेवक्ति विक्रिमाची । नक्षानम्मन देलार हर्ष्याङ्गाश्चिष्ट । क्षिण १०० विक्रिक निक्रामा के विक्रित क्षिण क्षेण क्षिण क्षेण क्षिण क्षेण क्षिण क्षेण क्षिण क्षेण क्षे

সাহেত্ত নাংপতা ক্রাইতিতাবাস্থ্রত প্রামন্ত্রম: প্রদৃতত: হিদত আহত মিতিত মিত্রত গাহিত দেয়ানাংত দেব সাহত বুজিপম সভিপত্তী বিভাগিন ক্রাপ নিজ মিতা মিরি মার্ক নিজ মিরি মার্ক প্রামনি বিভাগিন কর্মা বিভাগিন ক্রাপ মার্ক মার্ক

गेवानित्यां सर्वाक श्रील्यकाः प्रविद्यक्तिकानां भी ने जीव ने नेवाः प्रविक्षक व्यवस्थात्र प्रविक्षक विक्षेत्र प्रविक्षक विक्षक विक्षेत्र प्रविक्षक विक्षेत्र प्रविक्षक विक्षेत्र प्रविक्षक विक्षेत्र प्रविक्षक विक्षेत्र प्रविक्षक विक्षेत्र प्रविक्षक विक्षक विक्षेत्र प्रविक्षक विक्षक विक्षेत्र प्रविक्षक विक्षेत्र प्रविक्षक विक्षेत्र प्रविक्षक विक्षेत्र प्रविक्षक विक्षेत्र प्रविक्षक विक्र प्रविक्षक विक्षेत्र प्रविक्षक विक्षक वि

माना श्रमणिविन मिळ्या मारुशी एत्रवर्ग वहनत्वा व्यान्छ विक्षा १३ में श्रेये थाम एविष्ण स्वविष्ठ मिणिविन मिळ्या मी श्रेये प्रमान स्वीष्ठा र की में स्वविष्ठ मी श्रेये प्रमान स्वापित स्वापित हिन्दि । ११ व्यापित स्वापित स्व

हउरिल्भित्यक्रभिक्षकार्विद्यिः १क्काळवर्षमामाम (भाव क्रिम्मोश्चर्य भेशक्रामोर्विक निक्षा प्रत्यक्ष १ भवनम् । विश्वास निक्षा क्रिम्मोश्चर्य । विश्वास निक्षा प्रत्यक निक्षा प्रत्यक निक्षा क्रिम्म । विश्वास निक्षा क्रिम्म । विश्वास क्रिम्म क्रिम क्रिम्म क्रिम्म क्रिम क्रिम्म क्रिम्म क्रिम्म क्रिम क्रिम्म क्रिम्म क्रिम्म क्रिम क्रिम्म क्रिम क्रिम्म क्रिम क्रिम क्रिम्म क्रिम क्रिम क्रिम्म क्रिम क्

वेस्टिपूर्विश्वान्यमे वेर्यिक्याशास्त्र विद्या क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया

कायवन मिलि।: तामे आजि: भवमण्यने॰ अवीन नितः रूल्लोनान तास्मनीन तोहामनी नी मिलितन्य अमह ११११६ वह वर्गे हन मार्थ कर्मिता है हानध् हि १२ मुम्माममे॰ वनीने नेद्र हम्वाजा म्ला: मार्वाः मेक एम महमूक्ति निक्ष समिति हि । विकास कि । विकास कि १०० मिलिस वामी स्थान । দশ্রসাহর্ত্বনীশেন ওত্তি বুর্ণাতি ক্ষরাহত ইই তিমার্জে: সম্প্রামাধীন বাণ্ডিনক নামিনেতেই: १% দতস্মাত ক্ষ্যান্ত নিকল প্রথাত ক্রমার্ক ক্রিনিক ক্রমানিক ক্

-अभवाहान वर्द्धामिने निख्न में निन्ने सिख्यमें अध्यक्ष मिनिन्न मिनिन्न में प्राण्या किया में किया में विद्या में किया म

ह्वां क्वीवां क्वीवां क्वां वा वा निर्ध्य अवन्य विक्ष मानिन प्रक्ष मा

.

90

वाद्रअयर वर्षि १९१ अन्य क्रिया वर्षिया में मिक्सि अक्षोणे अय १६ १ मयकारे द्वा पे निर्मे क्ष्य क्रिया विश्व वर्षा वर्षा अप्ति वर्षा अप्ति वर्षा वर्षा

जामिशः १००१ रखा में अपने कार्न शिविद्याल गेण हे. १ तिला मिलिक नर् रशीव निर्माहा व रखा है १०० १० त्या में शिक जिला गर हिस्स निर्माहा है १०० १० तिला में में स्टिक जिला गर हिस्स निर्माहा है । १०० १० तिला में स्टिक जिला गर हिस्स निर्माहा है । १०० विल्ला में स्टिक में स

देखाः प्रकाशिकाः अवर्षिकः अवर्षिकः किर्वाहित्यः कर्वाद्वाहित्यः विश्वाहित्यः विश्वाह

भक्षाः गरुष्ठे मध्नीभिक्तिः रमामेजीविनः प्रभूतिकामेक्ति। १२१ भन्ना स्थाना १२० १ मूर्म्यामाविम्हानक्त्रामाः व्यन्तेषनादेश र्थः १२८ १ वक्षा ।

यामान्याने विच्छित्वा १४ १० भे विविधित विक्रिया विक्रिय विक्रिया विक्रिय वि

नन् रहिताः प्राप्तिका व्य क्ष्वित्रक्ष्य विकास कर्णात्र ने विकास प्राप्ति विकास क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र हित्र क्ष्यां भाविका व्यवस्था कर्णात्र क्ष्यां क्ष्यं क्ष्यां क्ष्य -अश्रीक्षंश्राजभीविषानि भोवक्तं तां क्रवनी पिक्नोनिक्शानिको प्रकार में अप न्तर्थका पिक्षाक्र प्रतिक्र नेति विक्रिक्त विक्रिक्त विक्रिक्त प्रतिक्रिक्त विक्रिक्त विक्र

प्रः महानिवः पुञ्च त्र प्र्याः निक्व विश्वा निक्व विश्व विश्व प्रति । निक्व विश्व विष्व विश्व व

मात्म्य लीत्मेश्व क्रमे क्रमेरिक अस्ते द्वे क्रिक क्रिक्ट वित्र क्रमेरिक क

धुनिः अमेनिश्वनोर्द्ध समीछ्वाम् छि मीमः भावने अधिमानः भावः भविष्य महास्मिन प्रशासिक्य स्वानिश्व स्वानिश्व स्वा ध भाविष्य विर्देश प्रान्त मुश्री छे अव ता कार्या मीना में स्वित्र स्थानार्द्ध कर्षा विव्य मिन शामिन विष्य मिन स्वानिश्व स्वान काः गृथ्रिकानम् भानद्देः क्ष्किको विषयाः गृथ्पात्वव्ये विश्वक्षाव्याव्या विश्वान्य नितः भीन्तर्भानम् विषयात्ये वर्षक व्यान्त्र म्यान्य प्रेतिका क्षित्र (वंशे भवतानीता कि नोक्षित्र भावित (क्ष्णोक भर्भान्य (स्व भन्वित्र वी यार्थे (स्वार्गवार्थे प्रेति वस्तोशिमश्चामः विष्विल्लोकायः गृक्षायाम् वायिकवाष्ट्राश्च त्यावस्तिक्ति द्वातिकामा विष्यामा विष्या विष्या विषय ननः गुनेम्लेनिनाम्त्यात्वन कितीए नार्क्वक्ता १० १ इसकान क्षा म्यान म्यान पर पविविक्त पर प्राणि मिना की किंग कार -आ(वामा क्रब्डम्श्रामिक्क मः निर्माति। क्रिमेन्सेन्सिन्स्क वाका पृथ्वित्रक्ष मन्द्र वर्षामनीक क्रिमेन्स विभागानाकी हिनम् (प्रास्कः विम् का भाषाना साध्यकि अभामित्र गेर्लिश् स्लोख अधिनानी ध्या स्म क्या तालिश्तानी व्यक्ष नावा सर्गका व्यक्षित्र विश्व स्व

(क प्यवण्यभावस्त्रिम् भीतित्वस्त प्रवर्गाच्यः कितास्त्राम् एस्ति स्त्राम् वर्गाच्यः वर्गाच्यः स्त्राम् स्त्राम्याम् स्त्राम् स्त्राम्

বিণিদিভিগোৰদানাম্বণ-সপৰিক বস কুম্মবন প্ৰকৃতি অৰ্থ্যসূত্ৰীক্ষাস্কৃত্য প্ৰিনিদিভিশা মিছিবিশ্ব বিন মাৰ্চিড্মা দেবেকে বিভিন্ন স্থানি প্ৰামি

क्रण्याश्रीतिका क्रेमीयभाव गरीस्था निम अनुसर्ग में प्रविश्व क्ष्या देखित । अ विद्यानिय विद्या निदि मिस्टिगीवामिका सेवार निस्ति सेवार निस्ति । अ विद्यानिय क्षिति । अ विद्यानिय विद्यानिय विद्यानिय । अ विद्यानिय विद्यानिय विद्यानिय । अ विद्यानिय । the state of the figure by the first of the state of the first of the state of the state of the state of the fig

नीन्यरीका निर्वे अख्या मार्था मार्थन विक्र मार्थन वामर्भन विकार म्यर मेर कि कि क्लि मार्थन मार्यन मार्थन मा (भश्येकीवयावाद्धिश्वितिम्मवी विश्वान्याद्याद्याद्यात्र भाषात्र वातिमधवयोगेकात्रार्यर प्रवा प्रम्य म्योवितिक भवत्याक्षिया ननेनामारिक्योभिमासासिक्षभागिनमध्येति जिल्लाभाभि मन्निष्णास्थ्यमसास्य स्यान्यका भेकक्षक वा किया २ श्वि: क्ष्य मि वस्मनिनी प्रमाना तिकनामक एरी ने कालिन (भेन्नोगन परीका वाविका (त्रम् म्के वेंड्स वर्जितः । भाषाभी भीर्यक्र नागक्छक्छम्थार्माणिन् विन्वील्नवित्रेश्रास्त्र विन्वालाक्नार्यनमनाभीवयमस्य गर्भ वर्यः भेत्रस्थित्यपेर् उनेल एउदाम् उद्योग विद्य (ह्वाना (स्टमायदः किम्द्रिक्न नन्द्राणि सक्ना (माहिन्य) (हान्तिवय । अकी (नामिविन्या हर्

AND CONTRACTOR OF THE CONTRACTOR OF A STATE OF A STATE OF A STATE OF THE STATE OF THE STATE OF A STATE OF A ST THE CONTRACTOR OF THE STATE OF A STATE OF A STATE OF A STATE OF THE STATE OF

The transfer out of the same and are as the contract of the co

मङ्जिम्भिक्वानाण्यम् अस्ति वास्तिव्यक्षाति विश्व क्ष्यात्रम्यकाष्ट्रम्य स्वत्य क्षात्रम्य स्वत्य क्षात्रम्य स्व अधानमण्यम् साम्य वागोत्तित्र व्यवस्थानिय (सर निक्तिणि (तांधा अधारिति मंग्रीन्यात्री सिका स्वत्रोत्री कि विश्व क्षात्र भागोत्री स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्य

याः म्लभोषिम् ध्रञ्जोवान् विविधिम् क्यातो त्रिक्ष स्वान् विश्व क्ष्य क्

देशिक्ष्यवान्यक्रमेश्वान्यक्रियाम्यान्यक्रिमान्यक्रियमिक न्यान्यक्रमान्यक्रिमान्यक्रियम्भित्ति। विद्यान्यक्रियम्भित्ति। विद्यान्यक्रियम्भिति। विद्यानि। विद्यानि। विद्यानि। विद्यानि। विद्यानि। विद्यानि। विद्यानि। विद्यानि। व

अञ्चाविश्विद्धानन्त्रयम्थ्यक्षेत्रमान् प्रवेष्ठकेर्त्तेन्या येतीकीना मन्वप्रदेश तोवक्षत्र व्याम्यान्य विश्व विवादिन विश्व विश्व विवादिन विश्व व असानिका नाम्यो काम्या विनार १ म्यानिय प्रतिनाम प्रतिक्रित क्षेत्र विकास कर्षा विकास कर्षा विकास कर्षा विकास कर हिनेप्तारंभीतः मर्श्यम प्रस्वा द्वापियाद्व मर्येन मर्श्यमः विक्षेत्र किन्यास्तिर्धास्त्र हार्थिके विक्रिः श्वा ह्यां ह्यां कार्या ने वार्य के ने वार्य के वार्य के वार्य के बार के प्राप्त के निर्माण के कार्य के कार कार्य के (रुन मूर्फनाकार्शिवित्रा भूजनीकार क्विनिक क्विला क्विने क्विने में ग्रीवित्रेनीयवासिक विवादिनिक वर्षन प्यक्षेत्र प्यक्षिमानिकः श्खान ग्रानिभित्रवेतः नुआम्। गार्गान्य विचत् वस्ताकावर सम् कित्रकी विस्व द्वातार नान भए। म्ये व राज्य प्रविष्ठ विश्वाम्भूताः कियाः मर्दाः रुवेकाः भेष्यभागनाहिका नियक्षित्वरोः अज्ञानगभाभ (रुविज्युगेवकिष्ण अज्ञानकार्यः ११ म्यानाभा किस्त वर्ष रूप १०१ में हैं हैं विश्वासम्बद्धित्व के स्वत्र मास्त्र के स्वत्र मास्त्र के स्वत्र के स्वत्र के स्वत्र के स्वत्र के स्वत्र के स्व विश्वास नियक्षित्व के स्वत्र मास्त्र के स्वत्र के स

भेन्या १० १ वर्ष्य स्वीम्न स्वितः भेयगालनः किल्हाकारोगेश्वायम् वाक्रक्ताक्ष्णः प्रश्चः स्वितिः मारू (हाितिणात्वमार्यः अधिकित्र क्षित्र स्विति हार्यस्य प्राणेन्य क्ष्यावित्र क्ष्या स्वापेन स्

-जारुआकारुआन्यम्भागम् । अवागाव भीषाः अविवादिकोः अव्हर्शकाः र्वमिन्यति कृतिकाः अवस्थान्य । अवाभव्छणे कारुआक्षान्य । अवस्थान्य । अवस्थान्य

ं क्षेत्रमान्तिः श्राण्ये मुक्तिय क्षेत्र त्राणि विवास प्रति क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क वे भगिति ता प्रति क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र का स्थाप भागित्र क्षेत्र क् क्ष मन्द्रित्वार्गमायाम् भावितः विकार कार्यः दिन्द्रभे वाष्ट्रितिकेने विकार विकार विकार विकार विकार विकार विकार मनम्बद्धान किला किया क्रिया क्रिया क्रिया मानमा निकार किया मिक्क करियों कर वाम इसी भरनारह नाह मिना श्रीवर्य गर्भनाकित्वांश्रमाः भग्नवित्वांभनाकान्त्रनाः १९१६ रत्नि विययकान्ति आर्राचित्राभूर कर्णः । से विविद्यान यात्र किलेका-श्रम्भ किलीका क्षेत्र कार्क नामित प्रकार के विश्व के विश्व किले के विश्व किलीका किलि किली निर्देश वे १० १क्क्र क्रम् विक्रमनीय विक्र एयेक्कर क्रम्य विक्र विक्र विक्र विक्र विक्र क्रम्य विक्र क्रम्य विक्र क्रम विक्र विक्र क्रम विक

शास्त्राचि (कारिन्सिकाक्षती पि कि प्रिटि रेक्सिया वाजनाना गोत्रोक्षती स्वति कार्गिक स्वता स्वति स्वति स्वति स्व ना नजगवान् विकासा भिन इक्ष्य प्राप्त ने निकाय राज्या करे विकास किन महिन प्राप्त का निवास कर्मिन प्राप्त कर्मिन वहार्गिविश्नेतम् श्राणिकिये मन् गुरेग्रेजिमिकेक्यमेवान्य शकाकितिशासिशः । मुर्सिशामामानाक न्या (गोत्रीना का मनः पेतः। न(याखनी श्रीत्यमभादिनाः गुरुग्लिख क्रमकाम् नीलामग्राः क्रथ भगमल खाने मन क सम्बन्ध खाजि: मन कन प्राय कि में न्यो कि नामक्षाः भम् मु हिन्द्रातीत्वाक अभाक्ष्वाके मान्त्र्वा मन्त्राम् वक्ष्य विक्षाः प्रव्य वक्ष्य क्ष्याकिः दूरमाने विष्ठिक्ष्याभावादिशालियाः विश्व क्रिक्ष क्रिक्ष विष्ठ क्रिक्ष विष्ठ क्रिक्ष विष्ठ क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष विष्ठ क्रिक्ष विष्ठ क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष विष्ठ क्रिक्ष क

(कालेनाम्यानितास्यकी: अवार्ष्यमिनि वितास्याम्य पूर्विष्ट्र म्यास्य वित्रम्य वित्रम्य वित्रम्य वित्रम्य वित्रम्य त्रिक्ति वित्रम्य वि नमावाविभितामाण्डिः। भागिकिभामाम्भाकाकमाणिकिकर्मा विकर्षः विकर्षः विकर्षः विकर्णने मान्नीविक्षाक्ष्याक्ष्याक्षाक्षाः महः म्योक्ष्याक्षाक्षाः महः म्योक्ष्याक्षाक्षाः महः म्योक्ष्याक्षाक्षाः महः महिल्याक्ष्यक्षाक्ष्याक्षेत्राक्ष्याक्षेत्राक्षेत्

निह्न कर्लीः प्रितिकाने क्वाला संग्रे वर्षे क्षित्र क्षित्

कार्यनभवभावीत्रात्व १ द्वान भ्रत्रेष्ठः श्रोणाणिनः तिवर्णभेन्य प्रतिमाणित्व विविधि । विविधि । विविधि स्थापिता वे विविधि । विधि । विविधि ।

त्वितिक्षक्षक्षत्विवित्या १४क्रिविवित्रामेराम १ प्रत्यक विभित्यक्षित्वविव्यविव्यविक्षक्षित्र विभिन्न । विविद्वावालन महिन्न निर्मान मिने भर् के त्रानिक्ष क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्ष्य र्यम्बर्यार्यमालिकार्यम् (वांयभोत्तिक्वार्याञ्जलिक्ष्यक्वां प्रम्यार्थिकार्यक्षेत्रम्य वां प्रम्यार्थिकार्यक्षेत्रम्य वां प्रम्यार्थिकार्यक्षेत्रम्य वां प्रम्यात्मा प्रम्यात्मात्मा प्रम्यात्मा प्रम्यात्मा प्रम्यात्मा प्रम्यात्मा प्रम्यात्मात्मा प्रम्यात्मा प्रम्यात्मा प्रम्यात्मा प्रम्यात्मा प्रम्यात्मात श्राहिनरामानीव्काव्ययिकिताम् विन्तिमा १०० पिकिव्य शियमे जिन्द्रामि जिता शिमे हिं कुने न्यमे म् वता प्यति में। (हार्नम्यम्बरुवर्गम्यमार्यामः क्षेष्ट्रमार्थाक्तवामिक्वा (अन्यकार्यक्षण्यर्यस्वितिनी क्ष्रक्रावितिर्मा क्रमिकाक्षिक न्यम् वीवाक्ष्य श्रृक्ति श्रामाव रवोर क्रमेश्वक क्ष्यायि व रवा विवक्षा गूर्व क्रम श्रिका विवस्त श्रम्याः श्रम्योणमार्थात १०२ १ में स्थूजाक्वय शाम्वय वस्त्रमायाम् अक्षेणक हिम्द्रके जनविष्य विवास विवास मान्य भी मिर्नाक्षणे क्ली ज म्यवास्य क्षाया व्या कर्षित्र में मिर्या क्षाया क्षाया क्षेत्र क्षित्र क्षेत्र क्षेत् विक्रमित् १०० विक्रश्राचिमाद्विमद्भाविम् विव्यविक्रोम्निमभ्याद्विकाम् विक्रमित्र मार्गित्र विक्रिश्च विक्रित्र विक्रमित् १०० विक्रश्राचिमाद्विमद्भाविमक्ष्यित्विकाम्निमभ्याद्विकाम् विक्रित्र विक्रा क्षेत्र क ह्यास्वअध्यन्त्राम् मेलम्बिर्माक्रवेतिवामित्रेक्यवि १६ १६वम्यह्र व्हर्ण्य प्राप्ति । विशेषाया विक्रिक्य व

क्षा राष्ट्र के प्रातिकातमकः कि की विकार व्यवकात्र का विकासका निर्मा कि कि कि महिल्ला महिल्ला महिल्ला के कि की विकास के कि की कि

ুৰিহুৰিতপাৰ্বস্থান গিতপাশীৰ্বীবৃষ্ণ ৰসমামাস্থত । প্ৰিম্স্তইক্ষণিত্য হুমানিষ্ণানিষ্ণান্ত ভাষাক্ৰ হোমান্ত ছিলাক্ত কৰ্ম কৰ্ম কৰ্ম কৰি ইন্ত্ৰিস ক্ৰান্ত গ্ৰাণ্ড वीना प्रत्केवा मार्ग विक्विक्वामा कार्यामा विक्विक मार्ग मार्ग मार्ग मार्ग मार्ग मार्ग का कार्य मार्ग माबाम्बिनः वित्यक्राणा कृष्यमे श्रीवित्र एनः प्रमात्र या क्रिश्मिक्षिक (वाम्सिनोक्षेत्र (वाम्सिन) विकास विकास न त्रशः यनि मावित्रा (ग्रीमी विरिये प्रात्रेक प्राञ्च प्रवनानिक विकारीय स्थेरी: प्रातालिक (केडा यकी का अन्य प्रम्य मन्यन) मनाभाम्यायूना १८ वरा प्रभाव शिवव्यक् क्वान (काक्नीवि अनामकन नमेन श्रीयशीखः प्रक्रिका वृ (नाकर् भित्रे मुक्यून वी अवि १८१ मामा प्रतिक्रामान के विक्रमान के रिक्रमान के र क्रामिक मिर्विविद्यानक्त्रभोद्याशाच्य वित्रकृत्याम्निज्याम्अवतातिक्र रितिक्रिक्तिक्रिकार्याम्भिक्तिक्रिकार्याक्र भविष्ठिक्षिक्ष विद्यानिक्षिक्षिक्ष विद्यानिक्षिक्ष विद्यानिक्षिक्ष विद्यानिक्ष विद्यानिक्ष विद्यानिक वि

मकः न्याय वया वि विभिन्न वर्णा व्यापा १०० म्नी ये १०० मेना यू ज वर्ष १०० (भवन १०० विभाव वि क्वाना म्यूयन् मक्विवनी म्यूयन् मक्विवनी म्यूयन् मन्याना । १०१ वर्ग ने मनि मन्याना विक्षित मन्याना विक्षित वर्ग नियम् नियम् नियम् नियम् अरम्भ विक्रीकिने विक्रिक निक्रीकिन कामण्याल्ना न्यक यह श्लेष्त्रि माक्षे न्यानिकान हार्य क्रे के विक्री मेख क्रेना ये क्रे क् मिनावतार गम्याजयक्रकाम्यम्गे वितास्वकः वित्येक्षम नक्षेत्रवाममामाः क्राहोत्मक्रिक्तिक्तिमार्क्तिक्ति श्री हिना के दिना का वित्र के मिन का निम्द्र कि की का का निम्य कि कि का निम्य के निम क्र या विद्रात्री कि जार्का (म्वाय ना मिश्वयः श्व (नाक्णोर्था पूर्व निविष्टिक्व भक्त मार्च वाकार्थ छ।नश्र किय मृतिष्यहतिमानीि ग्रमानिमित्रिक्षित्रिम्भितिवाम्माञिः हिन्त्रात्वम्भितिव शिल्यन्यनिक्षात्रे विकासमित्रात्र्य विकासिक्ष निवासिकः मर्स्या विम्हर्णकार्णियात्रिक्षित्र विक्षित्र विकासिक्ष विकासिक्ष क्षेत्र विकासिक्ष विका

3√3

এপরিগণ্ডব: গাধুনাত্ত্রেক দেশাপন্তিপর্মসন্ত্র: শুমুস্থানেলাক । ক্রিড্রক্সম্বিক্সাত গুর্লুগোর্থিবিক্সম্প্র পদা গর্বিক্সাত শুর্লাকের প্রক্রিক্সালিকার প্রক্রেক্সালিকার প্রক্রিক্সালিকার প্রক্রিক্সা

(माकामः प्रम्प्रिवेषाः प्रम्वस्थितं गेविषार्भिताः प्रम्प्रिक्षेत्र क्षेत्र क्

विनिधित्यकः १८ म्हिक्नोयक्वे विकास मान्यक्ष विकितः पुंचे श्रोमण् पूर्वनायक्ष प्राप्त त्र क्षेत्र विकास क्षेत्र विकास विकास क्षेत्र -परण्यत्विक्त्राव्यक्त कर्ष्य क्ष्यां वित्यक्त त्र वित्य क्ष्य क्ष्यां क्ष्यां वित्यक क्ष्यां क्ष्य

अत ग्रुविभिन्धान्त्र विश्व विश्व विश्व क्ष्य विश्व क्ष्य विश्व क्ष्य विश्व क्ष्य विश्व क्ष्य क्

2

अग्राकार्ककारे िएगेत्रीनार्थनरमर्वेक क्राव्यायः प्रवास्त्र मिन्नाः भिनानिम्न क्रानिव्याः प्रामिकं नामः सेर्क्ति वि ११ प्रकार्यकान्य क्रानिव्याक्ष्याः प्राप्तिकं क्रिक्ति वि ११ प्रकार्यकान्य क्रानिव्याक्ष्याः प्राप्तिकं क्रिक्ति विव्याक्ष्याः विव्याक्षयः विव्याक्ष्याः विव्याक्ष्याः विव्याक्ष्याः विव्याक्ष्याः विव्याक्ष्याः विव्याक्ष्याः विव्याक्षयः विव्याक्यः विव्याक्षयः विव्याक्षयः विव्याक्षयः विव्याक्षयः विव्याक्षयः विव्यावे विव्यावे विव्याक्षयः विव्याक्षयः विव्याक्षयः विव्यावे व

रेगा:काः क्ष्यन मणीयात्त प्रश्रमानयाद्याक्त । मन्यू मेडिमणीखाउपमहिष्यि हेना । १ १ न्वयनमणीयः मेल्वाणना नियाभी । मन्यवन्ति। मण्याद्याप्ति। भण्याद्याप्ति। भण्याद्याप्ति। भण्याप्ति। भण्यापति। भण्

गांवश्रवंदे शेल प्रानाभेवमणे स्था कि प्रियायक प्राणां स्थित के निर्माणां स्था कि निर्माणां कि कि निर्माण कि निर्म

1.12

्ञामिनिशः मृतः एक्ष्यत्म्रकारः । क्षेत्रिश्वाक्षः प्रस्मात्मानाकात्रः वित्रमान्यः । स्वर्णेनिश्च । क्षेत्रकीति । वित्रमानिक व

्धानेमाभागममभे किनीभना क्रिया प्राप्त वामक्ति भेरा कि विकासी क्रिका किन क्रिया विकास किन क्रिका क्र काराधिक्र नाम् वित्यस्य मी वियः गर्भ्यमार्थीविरुमयानिने मानिवेय्कावर्षं गुलोत्रीः नेन्योर्ज्यक्यां जाताकार क्रेशिनः क्र नाव(वारिवाहाकाम्वर्शित्वाह्मित्वाहम्मित्वाहम्मित्वाहम्भित्वावाहमित्वाहम्भित्वाहम्याहम्भित्वाहम्भित्वाहम्भित्वाहम्भित्वाहम्भित्वाहम्भित्वाहम्भित्वाहम्भित्वा वाना(अणिक्ष य र्ग में मार्ग शाकित्यावत १०भगाः (मत्यमात्रान विकि मवर्त्वाकिण परिवाली भी कामयानामाभतिककालियः प्रवातिवादात्रात्राः । ्यभारत्विभिन्नि वित्र क्षेत्रका क्रिक्ति क्षेत्र क् प्रिक्शिक्षेविकार्यम्थित्वार्गिवाकानित्रशा व्याव्यानान्त्रत्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्चान्त्रश्च । विक्रित्रा विक्रित्री क्रितियं विक्रित्र । विक्रित्र विक्रित्र विक्रित्र । विक्रित्र विक्रि मां तुर्थमानाज्यां म्या त्रका प्रविक्तीतिमां तीत्र प्रकृतित्र त्रीत्र मान्य माने प्रकृत्य क्षीर के क्षित्र के विक्ति ती कि काम भागेर स्वानेम मिन्ट्यीय मान्य द्विए विर्वित्यं द्विमें जनाः प्रमाय मियं विर्वित्य मिनिक विर्वे कर्णियान मिनिक विर्वित्य शिक्षिश्याः म्र्रितिमनः कार्याविदि भे कनिम्युकाकात य्निम्य्येतिन य्नतः नायेलमेन विनिद्याद्वां भीन्ति लिनः 30 रितिना मनः राह्म ग्रेष्ठि भिष्मित्रितिकार्मितिकार्कितिर्वनकरान्ति विविद्यात्रिक विविद्यात्य विविद्यात्रिक विविद्यात्रिक विविद्यात्रिक विविद्यात्रिक विविद्य

नेत्रारिभण्यभावतिनिक्वालक एकि मन्ने तम प्रवित्तामक्ष्रिण हि अवयश्याित्रेन कि निक्षित्र निक्षित्र क्ष्रिण कि विकास कि निक्षित्र कि निक्पित्र कि निक्षित्र कि निक्षित्र कि निक्षित्र कि निक्षित्र कि निक्

सारीयम्भगमिनावाअन्याः किमिमानीयस्थ्रक्षावेदि १६ १८ मिनिक विश्वेभाननाय विश्वेभान्याव्यक्षेत्र हिल्लामीयनायः १ वर्षाविद्यान्य विश्वेभाननाय विश्वेद्यान्य विश्वेद्य विश्

प्राणिलिवियानाभेषिदियेशम्(यार्विः प्रथमिक्यानीशिकाः मान्यामामानाम्य गृथ्यामास्य हतानिकतीक्य (एवम्य मान्य गृथ्य प्राणिको रिजा मान्य मान्य प्रथमिक । विकास मान्य प्रथमिक । विकास

विवाबात्में अपने विकार १० विमिन्निया व्यक्ति विकार प्राण्या भी विवाबात्में विकार प्राण्या विकार विकार प्राण्या विकार प्राण्या विकार विकार प्राण्या विकार वि

बार्ण मानिवासी प्रविद्यमानिवन असूर विक्रिमिट प्राम्थियाति विक्रियाव पर्यवार्गिक प्राम्थिय प्राप्ति । विक्रियाव विक्रियाव विक्रियाव विक्रियाव विक्रियाव । विक्रियाव विक्रियाव विक्रियाव विक्रियाव । विक्रियाव विक्रियाव

ज्ञाक्तिः किवे (मार्षिः र कालि विभि कि विवेदिन मित्र के हिंदी हिंदी कि विवेदिन के कि विवेदिन के वि

इस्ति १११ म्या १११ स

(यक्षभक्षां विकासिक विविधः । क्ष्माः विकार क्ष्मप्र प्रमाण क्ष्मिक विविधः । विकार क्ष्मिक विविधः । क्ष्मिक विविधः । विकार विकार विविधः । विविधः । विविधः विविधः । विविधः । विविधः । विविधः विविधः । विधः । विविधः ।

अज्ञक्कण (शार्यक्को: निज्तीय्या । ये(भी निवर्गवास्तान) स्त्रेष्ठ भू स्थ साः गुळ ग्जाला निवर्गय (कि विक्र क्षण्य क् क्षण्य क्षण्य

(कर्वानाङ्गाविः गमा॰ (वायुवाद॰ भेदाक्र॰ असर्वन॰ योवविङ् अवकान्यम् (यमानानो नस्तृतिः अविदान्धिः अवक्ति निविद्ध कि । विद्याः । यो गा॰ अद्वित्ताः । यो गाः । य

किमिन्नम्भन्ति अति विशेषिक्ष विशेषिक्ष विशेषिक्ष विशेषिक्ष विशेषिक विशेषक विष्ठ विशेषक विष्ठ विशेषक विशेषक

जः नमान्यका निन्ता निर्वित्री श्रान्वितः । विरुष्ठ नम्भान् । स्वयानित भरे नेम् १०० १ मेन् मेन् । स्वयानित भरे नेम् १०० १ मेन् । स्वयानित भरे नेम् । स्वयानित भरे । स्वयानित स्वयानित भरे । स्वयानित स्वयानित स्वयानित भरे । स्वयानित स्वयान स्वयानित स्वयान

मर्थिम १००१भरामगीतकलेगस्थिताविनात्मामाना जमाञ्चनां नेनाभिन्ना मन्त्रीतन १०० प्रमेको वतार क्रायविक महत्ति विभागतिक विधामाति विधाम

मम्भून (मन्यव्यक्षिति मिन्याः प्रविश्व युक्ति श्वित्य यो मार्थ मार्थ विश्व प्रति प्रविश्व प्रति विश्व प्रति विश्व

40

र्थितिक्षेत्रिः मध्याः मध्याः मानिवायामान्यः प्रवामनेप्रा वात्मानामवय्नवर्धम् कृत्विविध्वाद्विष्ठाः मध्यानिवायाय विद्याद्विः पर्वे विश्वाद्विष्ठाः मध्यानिवायाय विद्याप्तिः । विश्वाद्विष्ठा विश्वाद्विष्ठाः मध्यानिवायाय विद्याप्ति । विश्वाद्विष्ठा विश्वाद्विष्ठाः विश्वाद्वव्याद्विष्ठाः विश्वाद्वव्याद्विष्ठाः विश्वाद्वव्याद्विष्ठाः विश्वाद्वव्याद्विष्ठाः विश्वाद्वव्याद्वय

विविधित्री विविधित्वा भावति । भावति विधित्व प्राप्ति विधित्व प्राप्ति । भावति । भावति

अमिकामा वस्तः मन्त्रीः १९ १मरा भवत्वानीन भनिति । विभाना भनिना भक्षे भक्षेणाञ्चा स्वित् । विभानी प्रविद्धा स्वाति । विभानी । विभानी प्रविद्धा स्वाति । विभानी । विभानी विभानी विभानी । विभानी विभानी विभानी विभानी । विभानी विभानी विभानी विभानी विभानी । विभानी विभानी

मितः रूपिकोत्तास्त्र प्रभावति विक्र्याभिक अविवासन्तरः । क म्यास्त्र रेगी यहायकार्या का वास्त्र भागिति । स्वास्त्र प्रभावति । स्व

अन्यवनिविश्वतिका विश्वतिका विश्वतिका विश्वतिका प्रति । ११ दिन विश्वतिका विष्वतिका विश्वतिका विष

मान्यक्तिकणः विज्ञानित्र विश्व विश्व मान्यक्षित्र । जिल्ला विश्व विश्व

প্রবিদ্যাকি হল: স্থাকি গতিনাক্ত বেদ্পপ্রাদ্যাক্ত প্রক্রিকালাবামানি ক্ষালাক্তি বিশ্বের প্রক্রের ক্ষালাক্তি ক্ষালাক্তিকালাক্তি ক্ষালাক্তি ক্ষালাক্তিক ক্ষালাক ক্ষালাক ক

क्लारमे प्रांचास्तामेजीशि तिञ्दाणिविञ्चे (मञः प्रम् (भार्क्षण्य स्वाजितः भित्रिष्मानः वात्वाकिः चर्मा जिद्रः कलारमे प्रेमानिकः म्थ्रमविञ्चेष्माना (त्राम्थ्य अविज्यामेज्ञाने । १४ म्च्य क्लारमे प्रमानिकः म्थ्रमविञ्चेष्माना (त्राम्थ्य अविज्यामेज्ञाने । १४ म्च्य कलाश्रवास्का स्वाचित्र क्रिया स्वाचित्र क्र स्वाचित्र क्रिया स्वाचित्

नीः यद्वानिने विक्रिने वालक में त्या ले क्षावृत्रमाञ्चयाः नेति स्थानकाः प्रतास्थान्याः नित्यि देशि स्थानको त्याव व्यवकार्य स्थानका प्रश्नीतिकाय (क्षिक्त) स्थानिक प्रश्नीतिक प्रश्नीतिक स्थानिक स्

विग्रकार्यमान्यकारामा विवादम्भानित्र में वानक मिल्जायः १०० गन्य आणि विशेष्याः आहे किल्पाये विविध्याद्या मान्य विशेष्य विशेष याः स्वाउरमेताच्यान १०५ नाम्य यन् सेन्र स्थाय (मान्जिय अध्याप्या । म्यमानाः यशेष्येन्धान् यान् मान्नान्य कि एमः १० - क्यानाच्छेत्रीत्र स्वान्य (मान्जिः । क्यानिक् (न्यानस्ति । यथ्यान्य । यथ्यान्य । १०५ विक्री कि व्यक्त वर्ष विविद्य विविद्याः , शक्ताविरगरन्से ग्रेमा मन्वे गर्थियः प्वकिने वाच्छे गेविशिष्ठ वणकी मन्त्रिमा मान्ये मेरिता एक दिने शेवः प्राप्ति वामि ज्याध्यमिल्लिकामः प्रायम्बाम् विक्वाम् प्रायक्ति। व्याचामालागिताजाल्लिक्लीः विवास वर्तप्रम् वर्ते म्रिश्मिकायन क्यांमायां मत्यां मारित्य मार्थिक क्यां क

গাহস্পত্তপ্রত্যাপতিইন সোমবিজ্ঞানিমাদিনাত বিচালকালিকাপ্রামান্তর বিভাগিত বিভাগি

भ्येकिक (मां चर्क में नेता गों के मार्म प्रजीयमां ने (मायाय ने (म्रायाय ने (म्राय) ने (म्रायाय ने (म्

त्रभेनाअन्तान्यान्विक्वरेल्यन्वेक्कितिकरः १०० ह्नयाम् यद्वाचि यया गर्के भेवागेया निर्वतन्तर्थाः यदाग्रायाभी निर्वतिकार्याः विवास्य हिन्द्वाच्याः यद्वाप्ति विवासिक्ष । विवासिक्ष विवासिक्ष विवासिक्ष विवासिक्ष । विवासिक्ष विवासिक्ष विवासिक्ष विवासिक्ष । विवासिक्ष विवासिक् विवासिक्ष यार्भण्डेनेर्किश्वतिक्रिश्वतिक्रिम्हिः महीत्यतिक्रोलिनक्तिक्वन १३३ १ मण्डल्यानोल् १३६ मण्डल्यातिक्रोक्तन स्थानाति क्रिमीर्क म्रंभेनानो कः १४० १ वर्ष १०१

वियां अक्ष भम्मानी विविद्यां निर्मा । भाष्ये विविद्यां निर्मा निर्मा निर्मा क्ष्मे क्

अनमन १६ ।मरानिक्शितानिक अध्यानिक अध्यानिक मानिक अध्यानिक । विक्र क्ष्यान मानिक मानिक विक्र

क्स्रिः विनार्वर्ग्य मातानिनास्य वस्त्र मः व

उन्नीम् नाम्ने ने स्वास्ट म्लाई मर्गे व स्वित क्षेत्र

गाः भर्भाभिताः प्राञ्चक र्यामः वानाः मने वियस

ममश्रमित्राक्ष्याद्यान्माकाश्रवः, ग्रामाकार्यः

0/0

नश्राक्षे प्रभावनाप्रकृत्वानक्ष्णेन देवाणितिकापृत्रेम् ग्रेनानि एक्ष्णात्रीक्ष्ण्यात्रिकार्याक्षण्यात्रिकाराम् अस्ति । विश्वाक्षण्यात्रीकार्याक्षण्यात्र । विश्वाक्षण्यात्र । विश्वाकष्ण्यात्र । विश्वाकष्णण्यात्र । विश्वाकष्णण्यात्र । विश्वाकष्ण्यात्र । विश्वाकष्णण्यात्र । विश्वकष्णण्यात्र ।

म्भूखिक्भेयक्वारकाः १०१०म्मिनिभीतित्ताताप्रमान्त्विकामः १विष्ठ्वित्तामाण्यभीतिकात्वाकि। १०१६मेती

ममातानिकिण्योज्ञतिकामिन्दिः १श्वनण्काद्विकाक्षिति विकाश्वि १०१ विन्नेविकाभिक्षेत्रात्विका भाविकाने स्वानिक्षेत्र । १०१० विकाशिक्षेत्र । १०१०

र्जिम्मी मिकिन र्लायक्ष्य में मीयाना क्ष्यता वी कार्य स्था देखि विकास में मानिका कार्य में मानिका कार्य ने मानिका कार्य के मिलिन कार्य के मानिका कार्य कार्य

नीयिकतालावन्यानात्विर्गस्त्वनमीमध्यस्वः व्यानिकतिवनक्षी मञीश्रमाचियन्यरिमस्विर्वरः गुण्यमवनिमानम् मविर्मा कावनाः मान्य कि स्वानिक प्राम्य कि स्वानिक प्राम्य के स्वानिक स्व

(के.किममाने क्रम्भवर्ष । अहित क्रिक्ष क्रिया क्रम्भ महामाने क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया

वर्षमानाआतिक (वर्षव यनम्भेश में आर्क में यो मन्तिकाच्यः रामुमामेत्यः तम्लिण निष्ठा निमानिका निमानिका । वर्षमा निष्ठा । वर्षमा प्रतिका प्रतिका प्रतिका । वर्षमानिका । वर्षमानिका । वर्षमानिका प्रतिका प्रतिका प्रतिका । वर्षमानिका । वर्षमानिका प्रतिका प्रतिका । वर्षमानिका । वर्षमान

ने संख्यानिकाः एकाममाझिनमम् निर्विद्धाः क्यानण्यय्व ने म्हणनीकः ए प्रक्षियम्बनाः प्रेष्णिन् व्यव रामक्ष्रितिक प्रविद्धाः विश्व विश्व प्रविद्धाः प्रविद्धा

प्रकारों मधाना भोवर्षे अविद्या प्रविश्व अविद्या कर तार्थित १६ भो अयुम् । रागित अप (निकित अविद्य अप विद्या विद्य विद्या अप विद्य अप विद्या अप

जिस्कृतानियम्यत्वेजिठेत्त्वकृतानः पृथ्गमतिवृण्जिताहन मधनानतः श्वः स्तर्णवनमानी ग्वन्तमेख्यम् ताश्रूनेखः प्रथम कन् क्ष्यनम् कार्यम् प्रथम कन् क्ष्यनम् कार्यम् कन् क्ष्यनम् कार्यम् क्ष्यम् क्षयम् क्ष्यम् क्ष्यम् क्ष्यम् क्षयम् क्षयम्

Se

अलावरान्त्र ममार्क्ष अतावामारकार अदः अभिविनिव कि देखिन निक्षा निक्ष में कि कि स्विनिव के निक्ष निक्ष निक्ष में कि कि निक्ष निक्ष में कि निक्ष निक्य निक्ष निक्य निक्ष निक्य निक्ष न

द्यमितिस्वमितिमित्रीमित्रिक्षित्रामित्यवित्रीम् ज्ञावमण्यकावृक्ष्वास्थ्याः मेठिकिमिनाः मकः (माएन वित्तामः स्ववणायम् वित्तिक्षित्रे मिन्याभिकाः (मार्गिकामी वित्रे मिन्याभिकाः (मार्गिकामी वित्रे मिन्याभी क्षेत्रे क क्षेत्रे क्ष

रीकित्यः भग्याम्बिकित्वयः प्रतिमानीकानी विचित्ता । प्रतिभित्त क्षेत्र क्षेत्र

सूरः क्या निम्हान देव वक्तः क्षेत्रकाः कान्यव्यवप्रवेशिवन क्ष्र विशिष्ण निम्हान विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व व क्या प्रमेन क्षेत्र क्या क्ष्र क्ष्र क्ष्र क्ष्र क्ष्र विश्व विश्व क्ष्र শ্বন্ধিনস্ক্রিত ন্নাধেন ব্যস্ত: গুজাত্রবাবিদ্রশাস্থাপাটাভেনেবজ্ঞান সচাস্বপৃথ্ শুসুন্ধান্ত বিভাগত দুল্লা বিভাগত কি ক্রিন্ত ক্রেন্ত ক্রিন্ত ক্রেন্ত ক্রিন্ত ক্রেন্ত ক্রিন্ত ক্র

स्विनवीत्त्रानिः न्यमर स्मार्थक्षिणः गुम्न्वभाषेण्य गनिए रूप्याभिता भेता महास्व निर्मालक निर्मालक विकास स्मार्थ स्थानिय । विकास स्मार्थ स्मार

तिर्मा कर्मा के प्राप्त के प्राप

अन्दे मुन्य म् जिल्ला निक्ता ने विनिष्ठमः ने क्षानित गर्यक्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य विश्व विषय विषय क्ष्य क्ष्

अश्यम् विविधित्वना मृथ्यक्त का कर्न महिना मृथ्यी अपूर्ण अपूर्ण क्षित्व विविधित विधित विधित

डेक्चार्डक्नेक्चार्यक्रम्थार्था (भवायमापुन: १४ व्याया व्यविद्याति व्यम्भः स्वति अक्ताहत्मक्षणः करे मिल्कोक्टिक्नि विक्रिक्ने विक्रि

-क्रामियणभिराज्ञण्यमाकिम्याण्याद्वार्वाः अस्यः मान्यास्विमकनविक्वेदिन भागामी, मान्यानिव्याण्यका । (वक्षण्यादेविक्

निश्च मण्याण्मियमाद्यः नाश्च व्याद्य (माविश्व शाविश्व शाविश्व भाष्य माव्यः (माश्च शाविश्व मार्थ प्राप्त मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार

(नर्म अल्बाताम विम्वानिका अर्थानिकाले - न्थ । महर्क हेता महर्मा महर्ग महर्ग के भाग महर्ग के कार्य के विकास माम किया महर्ग निकास के निकास क

वातिन्द्रिकाश । मक्ष्ममानिमिकः विदेशियानावरत्नवाक्ष्मणेत्रम्भत्वो नश्चाद्र अवश्वित्र भवादि विद्यानावरत्नवाक्ष्मणेत्रम्भत्वो निक्षित्र अवश्वित्र विद्यानावरत्नवाक्ष्मणेत्रम्भत्वे । अवश्वित्रम्भवी विद्यानावरत्नवाक्ष्मणेत्रम्भवत्वे । अवश्वित्रम्भवति ।

स्मिनीकाण गानिभः क्रवन्यामी एक जिल्ला का विकास मिना क्रिया क्रिया के विकास क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया

শক্ষাপ্ৰলমন্ত্ৰতঃ মন ধ্ৰতিক্ম: ক্ৰয়েত্বঃ চন্তেজ্বঃ বৃহ দুৰ্বৰ্ধি নাত্ৰত্বনাম্প্ৰশাহিত নোপো দ্যো: হ্পা-আ প্ৰবিশ্বাসমিনা ক্ৰমিনা কৰ্মিনা ক্ৰমিনা ক্ৰমিনা ক্ৰমিনা ক্ৰমিনা ক্ৰমিনা ক্ৰমিনা ক্ৰমিনা ক্ৰমিনা ক্ৰমিনা কৰিছে লাভি ক্ৰমিনা কৰেছে লাভি ক্ৰমিনা কৰেছে লাভি ক্ৰমিনা কৰেছে লাভি ক্ৰমিনা কৰিছে লাভি ক্ৰমিনা কৰিছে লাভি ক্ৰমিনা কৰেছে লাভি ক্

नमालिक्षिम्यस्थाने क्यान्यस्थित्वन्यस्थित्वित् । भूग्यत्वित् भूगान्यस्थानिक्ष्णां स्थिन्यं भित्वित्रायाः विद्यानिक्षित् । भूग्यानिक्षयानिक्ष्यानिक्

-विश्वास्त्रिक्षित्र विश्वास्त्र प्रतिक्ष के स्थान विश्व के स्थान स्थान स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्

अर क्ष्णानिक छ जः शिक्षा अवागि विभागिक छ भूकी निका स्वेन (स्वितिः प्रत्याणिक विभिन्न शिक्षण स्विति । क्ष्या विभिन्न स्विति । विभिन्न स्विति ।

वीक्ष्यकान्तिक्रणे प्रणेक्षाकणे ने ने का निवास का निव

द्यामिन्त्रिक्षित्रक्षित्रक्षित्रम्प्तिवात्रामण्यिक्षित्रम्पत्रिक्षान्य प्रतिविद्यान्य विद्यान्य विद्यान्

क्ष्मामञ्च्यामित्रीति विश्व भीति विश्व अभीति विश्व व

कार्य प्रिमालका: म्लामेमः कृतिवाम क्रिक्त भारति माक्षीर्मे देश आणि मराष्ट्र भारति क्रिक्त विक्रिक्त विक्र

अञ्चलिलान्नानीयार्यम्वारोशिकतेलान् १० तिवर्गान्यकामान्य निवाय अवस्य स्थाय दिन्दित्य द्वात्रमालिक स्ता प्रकारमाध्य कार्यात्र । अञ्चलिलान्य स्थाय विकार विकार स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्थाय

कः गृत्यमानः श्रात त्रीतिश्व विद्रमेश्वतोत्रम् । श्रीति विद्रमेश्वति । श्रीति विद्रमेश्वति । श्रीति विद्रमेश । श्रीति व्यापति । श्रीति विद्रमेश । श्रीति वि

भवत्रः शूर्वि (भवं ब्रह्मानि (वर्गावा विवेद क्षेत्रका महाक्ष्य के क्ष्या के

उर्गवानि (ग्रेनिस्त्रवा (क्निमार्व प्रश्वन्त्रीनम्प्रति विक्रित्र विक्रित्र क्ष्मित्र प्रम्यक्त अर्थन्त विनामक्षित् विक्रित्र क्ष्मित्र क्ष्मित्र

क्षानिनामाश्चानिम्तिक्षान्चनान् ग्रहण्योनाम्स्यम् श्विः जिल्द्वग्रल् अस्यमावर्गस्यभागितस्य निर्मानिस्य निर्मानिस्य

गीयित्तर्वायम् तिश्व मुक्ति निश्व विश्व क्षेत्र में प्राप्त क्षेत्र में प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र में प्राप्त क्षेत्र क्षेत

कानाण्यक्रम्भान्यकार्यं भागां वित्रां विद्यां विद्यां भर्गेषाया भागेष्ठे यो भिन्ने ये भागेष्ठ विद्यां विद्यां

कार्ष्वांभा विवादम विवादम विवादम विवाद हिंद के प्रेर मिन्न कार्य किया कि गर्मिकाणाहिने में मूर्ति क्रिक्स क्षिण विवाद क्षिण क

म्याग्रिम भः अव्यव्यक्षात्र श्रामिक्ष निर्मिक्ष निर्मिक्ष किया कि स्वामिक्ष निर्मिक्ष विश्व कि स्वामिक्ष कि स्व भीति भमत्य कार्य के स्वामिक्ष कि कि स्वामिक्ष कि नम् विमर्गाम्यक्रम् मार्कियम् भट्यात्मक्रितारम् विकार क्वामित्र । त्रिक्षित्र विकार क्षेत्र क्षेत्र विकार क्षेत्र क्षेत्र विकार क्षेत्र क्

स्व (श्राक्त (त्रामाक्तर के निक्न के न

डेम्यर्काहरानीडाभ्या एके । श्विताहरू भित्रहरूने १०० पृथ्वीन श्लोश्वर्ण स्थाय हिन्द्रा भूक्या शिक्ष्य क्षित्रहरू डेम्यर्काहरानीडाभ्या एके । श्विताहरू भित्रहरूने १०० पृथ्वीन श्लोश्वर्ण स्थाय हिन्द्रा भूक्या शिक्ष्य क्षित्रह दः जागेक प्रिश्लोकानीय भूता में स्थाय स्थाय क्ष्ये क्ष्ये क्ष्ये विश्लोक प्रियोग क्ष्ये क्ष्ये

मैस्डिजिंग पृक्ष । अर्त्वम का विमन अर्त्वक (तार्या व्यू प्राण भेतिव अमाव प्रमाण का लास्विभी स्विव का त्या स्व के प्राण के प्रमाण के प्र

अविश्वादिनिस्कण्यन्यत्न भूमणि विश्वपद्याकः भूकण्यद्यम्भेदेवि १२ १ (याभयाकश्वतिः किष्यक् जिन्नादिन स्त्रेण आव्याविक स्त्रिक विश्वपद्याकः भूक प्रति । १२ १० मणि विश्वपद्याकः । १२ १० मणि पद्याकः । १२ १० मणि पद्याकः । १२ भणि विश्वपद्याकः विश्वपद्याकः विश्वपद्याकः विश्वपद्याकः । १२ भणि विश्वपद्याकः । १२ भणि विश्वपद्याकः विश्वपद्याकः । १२ भणि विश्वपद्याकः विश्वपद्याकः । १२ भणि विश्वपद्याकः । १२ भण

क्रियाः १०११ः विविद्योगकाणोयलक्ष्मेमकत्ष्रे द्यानिविद्योक्षायः १३ विद्यानिक्ष्मिक्षिक्षेत्र विद्यानिक्षितिक्षा विक्रूरताक्ष्मक्षेत्र विद्यानिक्षात्र विद्यानिक्षात्र विद्यानिक्षात्र विद्यानिक्षेत्र विद्यानिक्षात्र विद्यानिक्षात्र विद्यानिक्षात्र विद्यानिक्षेत्र विद्यानिक अन्येत्रेत्रेत्र्यमावाचानत्नुनगर्भवाकिः निक्तः भितिष्ठितेष्ठ्रमेष्ठ्रात्रात्रेत्रेत्रिक्षमः वित्रेत्रेत्रक्ष्यां वित्रेत्रक्ष्यां वित्रक्ष्यां वित्रक्ष्यां वित्रक्षयं वित्रक्षयं वित्रवित्रक्ष्यां वित्रक्ष्यां वित्रक्षयं निक्नान के यो निक्षता ता कर ना खिना मू कि कि केन प्राय क्या मेन क्या का वा निक्ता मू क्षित के वा कि कि के कि के हा शक्ति विकार क्षित्र के किल्या के स्त्रिनः ज्योन श्राह्य मात्न ज्ञामाय प्रविभावन नाया श्रामा व्यक्ष जाया विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व श्याः प्राक्ताताः क्राम्य भे मक्ति वस्ति वस्ति विकाशिकाश्य स्तिन क्षाना में स्व दः (मोश्रो हा किने ने मान्य कर व के गान्य री ज्याका मूक्अविर मानिकः ११ (द्वाच (मोक्यार्गक स्थोचभोजागेकः नृष्याचिक्ता प्रकृता प्रकृति विभाव स्थानिक स्थान

क्रीवर्शनीताणाहित यहा भ्रमेल निर्माण क्रिका के त्या क्रिका क्रिक

स्थितः । भनेति ह्वाति निर्धित्व दे । मर्क्य दे । मर्क्य विकार कार्य कर्मना आहार । भनेति । भनेति हिंदि । भनेति । भनेति

वकःभण्युणः वन्भेन्द्र्वानितः अनुवालीने क्वामिकण्यनमिकाः मिन्युनेहीनि मिन्यूनेः भरमञ्जानिक्षेत्रानिकाः प्रभावित प्रतिकार्विक विकाल क्ष्याचित्र विकाल क्ष्याचार्विक क्ष्याचार्विक क्ष्याचार्विक क्ष्याचार्विक क्ष्याचार्विक क्ष्याच्याचार्विक क्ष्याच्याचार्विक क्ष्याच्याचे क्ष्याचे क्ष्याच्याचे क्ष्याच्याचे क्ष्याचे क्षयाचे क्षयाचे क्ष्याचे क्ष्याचे क्ष्याचे क्षयाचे क्षयाचे

त्कन्हानेताः (गावत्त्र देश्ंगेन्निक्वितः । क्तिन्धने किन नेतागिवः मण्यू प्रः विकः । अग्नेविण्यनान्वा (विश्वा नावाताक् नेवाः । (गाय्रिके हः । भाषात्र । महिन्द्वा क्ष्मां भाषात्र । क्ष्मां भाषात्र । क्ष्मां प्रवाद्य । क्ष्मां प्रवाद । क्ष्मां क्ष्मां विद्या । क्ष्मां विद्या । क्ष्मां क्ष्मां क्ष्मां क्ष्मां क्ष्मां विद्या । क्ष्मां क्ष्मां क्ष्मां क्ष्मां क्ष्मां क्ष्मां क्ष्मां क्ष्मां विद्या । क्ष्मां क्ष्मां

3.8

विक्रम् वालेशानियनाम् व ग्वमिताणः कृत्रम् मिति नेन्म् (वार्वितनार भूतरे विक्रिकार भारत्य मृत्यमाएकि । ने त्यर् प्रवेश मित्र प्रवेश मित

अर्थित्वर्शिष्ट्रवर्षात्व विश्व के त्राम्य (विश्व के विश्व के विश अवार्गमनकावनी । भूक्षेवा मान्य खाउर्गवर मिश्व विश्व विश्व मानमार्थः । विश्व व्यक्ष सम्भूव म्यू विश्व विश्व मिश्व प्राप्त विश्व विश् शापुकः मण्याभिकः श्वेषण्याम् केनोत्रास्य अन्यान रूप्त्यः गण्याम् वेष हः स्टिने वनके भवतीत्रा भारत्या मन्ति वन कार्तियक विक्रास्त्र मिन्न कि मारियारियारिय प्रकालिय विक्रा विक्रा में के नियं मानिय की विक्रा के कि माने मानिय शामः त्यान भू भू वी माश्रामित्र ने दे नार्न एव क्यामः अभरतमे के माद्य जाने ने माद्य जाने ने माद्य जाने के पात्र (न प्राक्तीक्रीक्षक प्रक्रिक क्ष्य व्यक्तिका वर्ग भेवा मक्ष्य क्ष्य मक्ष्य मक्ष्य मार्गक प्रकार क्ष्य मक्ष्य मक्ष य्यम् म् क्र त्वन्य क्रिनेव कार्ष्ट्र नेव कार्ष्ट्र नेव कार्या निक्षा नि

्रिंनिर्दिश्चन्त्रम् त्राव्यते । ११ वन्त्रम् । विषयि प्रमान्त्र प्रमान्ति । विषयि । व

्र म्मेश्यात्वात्वहाक्षित्व व्याप्ति व्याप्ति क्षित्व क्षित्व क्षित्व विकाल क्षित्व विकाल क्षित्व विकाल क्षित् ेशियनामक्तर्रियम् विक्रिक्तिम् इ (क्यरनान्धामाणनभूव भूति मार्थिक विक्र मिक्क पिक्स भेरता माणमन क्रिकाम भेरता निमानि में कि स्थान क्रिकाम क्रि अविमेग्मान्थाओं ने लेखांचे माधांच्याल को कि वह कि ने शास्त्र के असून में ना वार्षा र अने वार्षा के वार्षा के अस्ति श्वमाश्वमात्रामेर्गानवियः ग्रम्थ्येथ्यानावकानीयमानियःमलावत्यः य्वायायिनाव्येव प्याःमध्यविश्यम्भेष्क क्षेत्राने के के ने के न नर् मिन्याक्य के वर्गामा का निष्ठ विद्यामिन भर्ग अव्यक्ष वे देन दानी विकास नामा दिन के विद्या माने माराष्मवः वीवमन्डनीम्भन्यक विस्राधनित्वरीय ज्येषिक विस्राह्म कर्णयानाम इन्द्रवेशक क्रिया ने: प्रामावनान्यात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्य त्यनि द्रश्यमाः गामित्राचा (ना जिः क्विविकात्रिकिक्किकामिक्किकान्यिकान्ये श्विवान्योगः मक्तिविकार्या नेशल्यविश्वणिक्तान्त्रहीत्रवण्यकार्क्यभेतिनेह्छ्ण्युक्रवि त्याम्लिएलीयविश्वणील ग्रद्याप्तरे हिन्नीलियालयाण्य लिएले प्रत्याविश्वल प्राप्त के प्रत्याविश्वल प्रत्य प्रत्याविश्वल प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्याविश्वल प्रत्य प्रत निर्मः निर्माद्धिः स्यमान १०० प्रयम्भिता अम्य र्वा विश्व क्षेत्र क्

मळकाह्यमः एउपानिह्यमे त्र्विमामीति त्र त्र्मः एता भज्ञा मूर्य निव्य क्षित्र त्राः एक प्रमुख्यानित्र त्राः एक प्रमुख्य क्षित्र त्र विक्र प्रमुख्य मान भग्ने विक्र प्रमुख्य क्षित्र क्ष्य क

Jas

विभिन्न विश्व विश्व विभिन्न विभिन्न कि विभिन्न कि विभिन्न कि विश्व विभिन्न विश्व विभिन्न विभि

हिंछिः विनिद्धानिकाः प्राक्षात्रम्भव्यकान्नान् १०० १ अध्यत्रीः अस्यामानाः आयात्र्यकीष्ट्व माने विकानिक पूर्वाले: १०० । या सम्यानिक प्राप्तिक विकानिक व र्षकान्यस्थितः । प्रामात्नेष्ठगोकः राष्क्रकान्यकान्यकित्राक्ष्यक्षेत्रकान्यकान्य प्रामान्यसम्भागम्य वाया श्रायक्तिक (कः १०४) यावम् तम् किर्ण यावाय यावाय का निर्वाचन किर्मान किर्म निवक्षं भाविन्द्रविनिक्षति प्रविलोकाभारनी निक्भायकः वियाम्बिक पेजनेवानिनिक्यास्थातामा इयुकार्भ प्रति नेवाय्तिश्वेन द्वानिकीभवनानीनि भव्यक्तानेन्यूक्रीनी यन्त्रीवाय्यन्मनियान् गृक्क्यक्ष्मक्षम् मनात्मावयेगाविकीन अव्यक्षक्षेत्राक्षेत्रमान्यांन्त्वर्थान्त्रित्त्वानिन्दीन्त्रमाग्रीक्ष्माने विधिवर्नाहर्षिण्या निम्केणिन मान्तिज्ञेन हिना मनाजन कारिये म इलिये कार्ता वाम कार्यों ममिकि । को बचेत्विक मे मिर म्यावान क म्यूक प्रार्थिय का मान के विकास

क्रियानिष्: ज्ञान्यारम्बजीबञ्चान्यान्योनिष्ठविकिन व्यक्ष्य वक्षिमिणियात्री क्रियात्री क्रियात्री विक्रामिन प्रमानिष्य मिनिष्यात्री क्रियात्री क जार्गीत्विक्त्रिक्षायां व्याविवामी वर्णवार्थः प्राद्वत्थायमार्गः नेवनः सेमारिर्भरानजाहिर्मनरे वियाणे । मार्विवियाची विव शान्मास्य (मेर्क्वाक्कानीकाम्हाः १०१(मेर्क्युक्नेने विद्वालेनत्वकामायानोल्क्याग्रहीकाः ग्राकार न्वतः भयति वज्ञा भागनीर्भत वित्न स्व श्व के पृथ्व वित्म कि का कि का मार्थ, श्व म्मीर्यत क्षा का वित्य के मार्थित के मार्थित कि 3-9 अधार विश्या (कि विश्वा कि विश्वा । गृञ्जि कि विश्वेष (के नाम क्षेत्र में भाग के पार के वा निवल्यों निवन के विश्वा के र्ममिन्। कान्तिकानम् किम्मिक्तिकानिकार् भी कालाहम् क्रांतातिविना विद्वानिक मुक्कियनाया भी व्यथ्रिक्षिक्षिक्षानात्मवात्यित्वास्कनभागिने निवक्षितिका विकासिकार्भविक्षेत्रम् भागतिका मर्गविवयम न्तिम्भविक्ष मन्द्र मीडिशे १६ १नन्सिम्हिन् मिकान्छिरुभेटार्सभाग निव्यितीयामिकार्यक्ष माक्रात्मा । विव्यविक्षिण विव्यविक्षिण । विव्यविक्षिण विव्यविक्षिण । विविक्षिण । विविक्ष । विविक्षिण । विविक्यविक्षिण । विविक्षिण श्रुकिरेन्द्रान्य मस्त्रिप्राणिकारोहि नहभविषये। १२वर्गिकालानाभाउदिनयाभिन मजुकेश्वित्र भारति । १०वर्गिका भारति । १०वर्गिकालानाभाउदिनयाभिन मजुकेश्वित्र । १०वर्गिकालानाभाउदिनयाभिन । १०वर्गिकालानाभाउदिनयाभाविष्य । १०वर्गिकालानाभाउदिनयाभाविष्य । १०वर्गिकालानाभाविष्य । १०वर्य । १०वर्गिकालानाभाविष्य । १०वर्य वयभावित्वन मेळवायामि विविनायसीमया यन्यम (वनायान विच्छिमकः याम् स्थानारे कियो न्याकू तियमेक भेगे श्राम्य के भेगे विवास कियो नियम कियो निय

मर्शामिकानारम्य के क्रिक्तिक १८ १४ ४४ क्ष्रेयपादार विद्यात्मात्म । क्ष्रिका वित्ते स्वामिक क्ष्रमान अनकातिक क्ष्रमान अनकातिक क्ष्राविक क्ष्रमान अने विद्या क्ष्रमान अने विद्या क्ष्रमान अने विद्या क्ष्रमान अने विद्या क्ष्रमान क्ष

वस्त्रज्ञिष्य्ववाहितिविचनवावरुशास्य प्रवस्त प्रवस्त्रे वाद्यानियानीविभास्त्रा अत्याविभार्तिय प्रवादान प्रवस्त्र निमानीश्वानी निम्निष्नार्थे विशेषित गलिताश्वया हाता निस्तानीय किएमें । भगनमं कात्रेमप्रशासीय निमासि हता यह गर्य गिर्मि निमानिक के न क्रीन(मान्यगांक्रिक्य विद्य (मन्यवन हित्त गनमत्यने वृद्यांम यमार्वाक्वयार्थर विमनायनमञ्ज्या नास्तियवनाय हा -श्रभूत्रामानिकेक्षांभाक्जा॰ भेजतम्बर्भः न मायूवायं क्रायं (मेल वावनीस्क्वायम् १२ ग्नमं स्वीवाय (स्वायं नमः मक्षनायं मन मानवरमादित्नेगत्माव्यायंक्रनर्द्धनमंखकिक् कारित्रेग्रम्जावन् मर्नामाया पार्व्यायमाया विन्त्रमं क्राम् शालक्षेवल्थ भ्रम्भर्यात्वात्वातात्वातायायकानाम् । न्यामिथयक्तिभूष्टः मल्यिगविद्या ग्रंप्यिनिवानावद्यिक्षि आवाविदाक्षामञ्ज्ञनाने । क्रिक्यनो प्रेन्य विवयवामामा १० । महर्षिने वामक्ष्य कृतकार्ने विवय में विवय विवय क्रिक्य विवय क्रिक्य में विवय क्रिक्य क्रिक्य क्रिक्य में विवय क्रिक्य क् त्रिक्षण्यान्यकाञ्चाञ्चित्रम्यक्ष्रीणाद्यम्भेयत्याचीत्र प्रविद्यम्यम् । अत्रिक्षण्यान्यक्ष्रम् । विद्यम्यक्ष्रील्याक्ष्रम् । विद्यम्यक्ष्रील्याक्ष्रम् । विद्यम्यक्ष्रील्याक्ष्रम् । विद्यम्यक्ष्रम् । विद्यम्यक्ष्यम् । विद्यम्यक्ष्यम्यक्ष्यम् । विद्यम्यक्ष्यम् । विद्यम्यक्ष्यम्यक्ष्यम् । विद्यम्यक्ष्यम् । विद्यम्यक्ष्यम्यक्ष्यम्यक्ष्यम् । विद्यम्यक्ष्यम् । विद्यम्यक्ष्यम्यक्ष्यम्यक्

-विकेशिविष्ने (त्र्य्ने व्यक्ति विषक्ति विषक्

द्रमञ्चनयः । र्याहायणे रूप्ति विश्वितात्र में मार्ग मृत्र विश्वितात्र में मार्ग मृत्र विश्वित है से व से विश्वित है से विश्वित

क्षिण्य (मिर्किन आरम्याभुक्ति विस्ताम् तर्वा के क्ष्मानिक प्रियो के स्था कि स्था कि स्था के कि स्था क

नेत्वनक्ष्यं नारः अवस्थितात्व द्विति अवस्थित अवस्थात्व विकामित विकामित क्षेत्र क्षित्व क्ष्रीकृति क्ष्रिक्ष क्ष्रिक्ष क्ष्रिक्ष क्ष्रिक्ष क्ष्रिक्ष क्ष्रिक्ष क्ष्रिक्ष क्ष्रीकृति क्ष्रिक्ष क्ष्रिक क्ष्रिक्ष क्ष्रिक्

उद्भी भन्य अभग क्रिक्न मान्य क्रिक्न मान्य क्रिक्न मार्थ में मार्

र्थान्यः श्रीमन्द्रवेगिकिमर्ग्यामिलिक्स्यः श्रामिक्सिम्यिमिनिश्वामित्रवामिन्य्याण्याण्यः स्वाद्यामिक्स्यामिक्सिम्याभिक्सिम्यामिक्सिम्याभिक्सिम्या

वार्त्रिको वार्त्र व्याः मक्षेणी विर्वः प्रभे वां वार्तिको ति दिन् भे विवादिः प्रभाव विर्वे कर्णा प्रवादा कर्णा प्रवादा विर्वे कर्णा प्रवादा विर्वे कर्णा प्रवादा कर्णा प्रवादा कर्णा प्रवादा कर्णा प्रवादा कर्णा प्रवादा कर्णा प्रवादा कर्णा विर्वे कर्णा प्रवादा कर्णा क

म्यारक्षिविष्णाः अवस्ति । विकार्याक्षेत्र । विकार्याक्षेत्र । विकारित क्षेत्र । विकारित क्षेत्र । विकारित क्षेत्र । विकारित क्षेत्र विकारित क्षेत्र । विकारित क्षेत्र विकारित क्षेत्र । विकारित क्षेत्र क्

म(रम्द्री म्यम्द्रवेदान कर्नार्यक्व का दिर्द्र मार्थित क्रिक्त में द्रिक्त क्रिक्त क्

शार्त्रमाभारतामभन्त्र (दानित्तर्तिक क्षार्था भवभन्न विभिन्न कि भवावध्याभत्वार्वमिन १० । आति । अति । अ

क्षिणः अभितः मध्नाद्यं वृज्ञाति विवासमे त्यनिकल्यम् यश्मित्वदेशिम्छावनायां ज्ञानेम् श्रे वार्यक्षिमाः नूश्मितः अः पूर्विकि १०० विवास वर्ष्य प्रदेशान्ति। अ

ब्रांत निम्ना न

बायकक्षम वायदिलेबः ग्रायमे मनकावं एकता सर्विश्रमत्यः आक्ताने र्याता गुर्व

विश्वांक विशेषीन्त्रेशानिवञ्चानिव्यानिकानिकानिकानिकानिकान्य क्रिये क्रि

भेग्यव (नेक्न्य वा नाक्षा क्रिक्र व ने वा क्ष्र क्ष्

ंश्रीक्षणां करों एकमः मत्कु क्षारक् व्यक्षणेक्षण भिवक्षणां मार्थ भागि का निर्माणां का क्षार्थ का विक्र का विक्र का कि का ति का का कि का कि का ति का कि का कि का कि का कि का कि का ति का कि का कि का कि का ति का कि का क

इमिनिनिमाण्येः १०१ गुअवार्त्यञ्चीव्यक् विक्षेत्रमाणाता निर्दिनामाधि १०४ ग्रिक्यंवन् अपूर्त्वसहरू १ विक्ष्यः व्यान्यक्वान्ये वास्ताय ग्रानाक्ष्य अस्त्र क्रिक्रोण्यस्य विक्रिक्षेत्र विक्रिक्ष्य विक्रिक्षेत्र विक्रि क्षिकिर्गामभर्मकः गृह्णिम्हार्गवर्ष्यभूतार्गम् नन्नाम्यक्ष्यातिलोकायः गृह्णवाह्यात्रम्यान्यम् चीक मेरानेमाथवं विविध्यरी मिवितमेगाका मिविताक म्याप्य (तार्वेजक्राय्तिमेरे रक्षाक्र तिवारुयेयमार्वः ग्रम्थावर्यावक्र वितिमेश्वम् स्वयक्ष्यं किताक्षविक्रोज ग्रमाव्याक्ष्या श्रीयाँ रे अन्दर्श्व न मन्यर्ग मिक्क ना माँस्न (तर्शक मिनि मक्ताविक एंडाजिमेर्ड विकिश्व विकिश्व कि मिन्य कि मिनि मिनि कि मिनि मिनि कि े विल्लोकाय:न्ः चित्रवाविनोक्तम् कार्यमन्थन् याञ्चित् विश्वक्तिन्यम् विश्वक्तिन्यम् विश्वकित्रम् । विश्वकित्रम् शर्विक्षाम अवन्य निक्षा के विकास कि वि

तर्ः १०२ प्नानानकने (वना व्या कार्य वार्ति वित्रज्ञः प्रान्ह्रिण वानगे कि निविष्ठि विविष्ठि वि प्रान्ति विविष्ठ वि प्रान्ति विविष्ठि वि प्रान्ति विविष्ठ वि प्रान्ति वि प्रान्ति विविष्ठ वि प्रान्ति विष्ठ विष्ठ

नीष्वेकानामेक्षनीत्मवादनरिवामिनिक्रमास्यः ममत्मविक्रमानित्य प्रमुक्ताविक्षणांमाचीताविकि १०० विक्रिक्षिक्षण्यामानिकिकानेमाचीताविकि १०० विक्रिक्षानेमानिकिकाने

वीभक्ष्यत्वानीन्त्रीन्द्रानाञ्चवाभिनान्त्रवाभिनान्त्रवाभिन्द्रवाणिदान्द्रवाभिक्षक्रवनिष्टिवृद्धिन् । १००० विक् व

रामाण्यम् । भारति । भ

वाभियम लाजिबुक्रवआक्र वडः स्रीमल्बन क्लो हिन्द्व अध्यवम्यः सर तम्भवद्व विग्रदीयाज दुव देशि ११ शिक्त व्यानीतिक भिर्दि सामान्य स्थानिक स्थानिक विश्व स्थानिक स्

भू मन रामिनण्ड्यबाडेंड देणिनिमाणिकविक्तिम् सूट्या विवृद्धि मन्यु (जवामधाद्वा किवार महिवार किवार किवार महिवार किवार किव नमार्श्यरमिवानाभेवीक्तितः १४ विवालाम् (मान्य स्वत्मावन तर्णन १९ क्याव म्वालिन वार्णन वर्णावना १ मध्यास्त्र भेवतार्णन स्वत्य वर्णन वर नित्री कियानिन क्यार् हिर्दिक्षण स्मिनिम के किए कि माना की इर क्वानि नियाने एक कर किया नेवा लक्षित्राष्मार १वत्यांचा विक विवायांच्यभीमं श्रूक्यक्षे भववव्यायायमाना स्वावायाय श्रेम्पेकः गृक्षेक्षिका स्वावा क्ष्यय्मव्याभ्वाहर् गृत्वेष्पश्चामित्व एर्ट्व्यव्मामाविविक्ष्येन गमाविजात्रींग्र्रामोनः शेन्द्रामाव्यव्मेश प्रिय वैश्रीत्वन तो जिन्नीत या ग्रह्म अध्या थे ने प्राधाः श्रेताना ज्यमे विश्वाक्षेत्र भ्रम् । विश्वाक्षेत्र विश्वाक्षे

विनियानि । १०१ वर्षात्रार्थये देखि व्यर्के स्वि श्रे क्रिके के विक्र के विक्र कर्मा ने विक्र क्ष्य क्रिके क्ष्य क निविधान्न प्रायानेनन्त्रात्यक्टिनाच्यकानिर्वेशवः विकासिक्य विविधानिक विकासिक नम्यनामनाः ग्रमः नित्र्वार्मात्वेत्रात्मार्यम् स्नाविमान्यमे । जलस्त्रम्थास्न्त्रात्मत्यन्विष्या प्रम्यावायमात्यस्यायम् भवाता अवश्रुविषयाञ्चनक्रिवाच्छाः (मार्नकायाः ममाविसेने १००१ विख्याम् अरुः सने एडिसेन्यवि एजारमद्व रेस्ने यूनेयवाया विकाः भूभवनातीभाम् (यात्रीमी खाडावाज मंत्री दर्जाः मेनिति मिले भोयनां उचेकाम ने में भेरी मेनव विभिन्न विक्रिया र्भनिन्याभकान भमान्यता।ताविनाकः म्यांतिनिक्तिन भावता विने प्रोप्याभे ताय न्यां म्यांतिनाकः व्यव्यानिक विने विने क्यांतिन विने क्यांतिन विने क्यांतिन विने क्यांतिन विने क्यांतिन विने क्यांति विने क्यांतिन विने क्यांति क्यांतिन विने क्यांति क्य

नेरहेणनेरहोय (भारत्रकानण १९ १ अस्त्राचिने अन्यासिन अभावियः आनो मन्याने अधिकानी अभावियः अधिकान विकार देशानिय द अभीभका (तर्याने अभिकार्य मेन्स्य स्थाति विकासिन स्थाति स्याति स्थाति स स्वित् । रुख वात्मा वर्त्ताली त्र व्यवाह्क दे वियवः १० मती। त्रित्य क्र क्रियेव वर्षा वात्र वर्षा वात्र वर्षा वर्ष ाण्यकवर्षणीम्यनञ्ची रिक्ज्यार्क्क्यार्क्ष्यम्यन्थीः ग्राम विद्यादिव यूर्ग तिरङ्गकी (तार्राम हन । डे बडेंद्रा रेप्ने दानि छ। वाक्ने किरी किं ग्राप्ट क्रिक्न क्रिके ने व्यवन्थ है। व्स्वितेश्चारिक्त्वामिक्किक्वव्यंत्र भ्रमिक्कामेवाजीलाइ विभिश्वनिद्र्यितः । वश्चा हा खारा में क्वा मित्र एवा निष्य । अपूर्वन व्यानिव मन्यानिव मन्यानिव भन्यानि । अभविषि विभाविष्य । (काजिकार्जिन) पर गिल्डे अजिनिकायायोध्याने (वाकान्त्रेक्जिक्जी जिल्ले क्षाने माना महर्मन १६ म्वाप्या निवस्त्र का दारगेणेज्ञायनं श्रह्मिं अर्थितार्थाने अभिनेत्र अभिनेत्र अधिकार्था । १० १रियेन अभिनेत्र विश्व अद्भुष्ट । १० १रियेन अभिनेत्र विश्व अद्भुष्ट । १० १रियेन अस्त्र । १० १रियेन अस्त्र विश्व अद्भुष्ट । १० १रियेन अस्त्र विश्व अद्भुष्ट । १० १रियेन अस्त्र विश्व अद्भुष्ट । १० १रियेन अस्त्र विश्व अस्त्र अ

श्रमालेन (गोक्य (भावकान्यः गेलकान्य श्रमालान्य ग्रीनिना क्र वाक्षणे प्रया प्रविश्व मामा में अस्य मानः श्रम्भात क्षिया श्रामाली क्षित्र में स्वाप्त मिलकार्य क्षिया है स्वाप्त मिलकार्य क्षिया है स्वाप्त मिलकार्य क्षिया है स्वाप्त मिलकार्य मिलकार मिलकार्य मिलकार्य मिलकार्य मिलकार्य मिलकार्य मिलकार्य मिलकार मिलकार्य मिलकार्य मिलकार्य मिलकार्य मिलकार्य मिलकार्य मिलकार मिलकार्य मिलकार्य मिलकार्य मिलकार्य मिलकार्य मिलकार मिलकार्य मिलकार मिलकार मिलकार मिलकार मिलकार मिलकार मिलकार मिलकार मिलकार मिलकार

236

वानि अर्वेव गरु में श्री विश्व में श्री विश्व में विश्व में प्रति में प्रति में प्रति के भाग कि । भाग मिना में भी भी में भी में में प्रति में में भी विश्व में में भी कि । भने भाग कि । भाग में प्रति में में प्रति में में प्रति में में प्रति में प

१०११ः विक्रिस्नेमकः कृष्टिव्याविष्ताव्याने । विक्रवाविष्तिल्युवाने कृष्टिव्याने । विक्रविक्ष्याने विक्रविक्ष्य । विक्रविक्य । विक्रविक्ष्य । विक्रविक्षय । विक्रविक्ष्य । विक्रविक्य । विक्रविक्ष्य । विक्रविक्ष्य । विक्रविक्ष्य । विक्रविक्ष्य । वि

लोकायः म्हण्यास्वामिकवार भ्रम्भवामम्हर्म्य केल्ला हिनेक्वने । मृद्य क्वान हिन्द्र हिन है । भ्रम्य क्वान में मान केल्ला है । भ्रम्य क्वान में मान केल्ला है । भ्रम्य क्वान में मान केल्ला है । भ्रम्य केल्ल

विल्पानानात्राचाचात्राचिः व्याविकामिकिः १३) कितिनिभर्यद्याद्याः ११ खिक्तः महमहु अस्त्राम्यः १२ १ आस्त्राम्यः १२ १ आस्त्राम्यः १२ १ अस्त्राम्यः १ अस्त्राम्यः १२ १ अस्त्राम्यः १२ १ अस्त्राम्यः १२ १ अस्त्राम्यः १४ १ अस्त्राम्यः १४ १ अस्त्राम्यः १४ १ अस्त्राम्यः १ अस्त्राम्यः १४ १ अस्त्रामः १४ १ अस्त्राम्यः १४ १ अस्त्राम्यः १४ १ अस

ग्राविष्ठात्र मिन्न विष्ठात्र विक्रा प्रति विष्ठात्र क्ष्यात्र क्

272

ज्ञावर्गित्वाचे १३ । अतन्त्रेगिविक्तायाम् देश्याः मन्यामित्रमण्देशियम् विशेष्यम् विशेष्यम्यम् विशेष्यम् विष्यम् विशेष्यम् विशेष्यम् विशेष्यम् विशेष्यम् विशेष्यम् विशेष्यम् विष्यम् विशेष्यम् विष्यम् विष्यम् विष्यम् विष्यम् विष्यम् विष्य

ध्विद्दनयक क बङ्ग भाव भवी साविका दिना वर्ग छ १ हे विद्वा की छा वस्त्र १ १ वया निर्धा वस्त्र में विद्वा कि म्बित्याः निर्मः प्रत्ये शिक्षिति विद्रारं विद्रारं वर्षेत्र (शा गिना वृद्धीना मान्य विद्रारं विद्रारं ग्रम्य विद्रारं विद्रारं वर्षेत्र (शा गिना वृद्धीना मान्य विद्रारं विद क्युमावन्येवातिनी मनः किने दो म्ल्यानितीक्नाण्यानिति क्रिनाक्य स्वाक्यमान्त्रामके किनामानेत्राक्षिकार्नाः भूयर र्वितारीप्रिकिक्षित्रान्त्राः मेश्वर्धानयत्यान्त्रमान्त्रण्याणि स्वत्रवष्याणि निस्वर्विक्षाम् एषिष्वर्र्वनामाणाः सिश्च देववाय्यः गृक्षे प्रदेश भवग्रेव १८ विश्वेष्ठ विश्वेष्ठ स्थाय प्रति भवा भाव भाव भाव भाव भाव । भाव । भाव । भाव । क्र विनक्षीय ने कारियों कि विद्याल्यों ने क्यू मिनक्य विन्य मिन प्र मिक्य विने मिनक क्या कि कर ती कर प्रान मिन में देडिनिम्बासः गेविश्वक्रणम्बिस्व देवनिम्निंगर्था न्रेश्व प्रमाह्य पेन्स्किति क्रिक्त स्थानिक क्रिक्त स्थान

भी हव मह दाविको (एक) प्रमुक्त माहिस होने । हिन प्रभान्यो अञ्चा भाव्यो अञ्चल होने को विकास किया के किया के किया विकास ने क्या मिन्न मही के किया किया किया के किया किया के किया किया के किया के किया के किया के किया के किया के यिकवार ग्रामवर्षिक्रम्कलमें जोवाना श्रम् नः भागमा मीये हान् के श्रीक्ष्णेता विभी मार्थ प्रामिश्री ने जामि व्हिनाम्याः विक्रिक्ववेत्रात्यार्थे विक्रियां ग्रम्थक्त्रीय्यक्त्रीयो जान्या विक्रान्ती वितः विक्रात्रात्या व (क्राज्यमिक इवः भागीविज्ञामने विज्ञेन निवन्धावनी तः गडरमर्वनार्यम् विक्वाचार्याचार्यवक्त्राण्याश्वरिका वेगाने कानानः कार्यतेवारी एर्श्वरूर्भव जिलीय वार्र करा वालनः १९१०वानवनवयूक्त मात्रवाः मक्तिमाविकः के हः भव्यन 273 व्याज्यान्यान्त्रभोवक्रभेनः प्रयान्यव्या वेर्यायाः वाज्यवाममाः । (ययान्य नित्यं क्रवार्याविष्ठिनेत्रीयः भविष्य क्रमायमका की भारती तिन्यमिक्षिति । कहा विक्रमाया की किल्या वो नाखा यो वानी विश्व विक्रमाय क्रमाय क्रमाय क्रमाय

वरुळविमक्य वार्तान वार्तिन्वीत द्वानित्यानीतियः विशामाभाकिन्विम्नाक्ष्मान्य भवाभिक्तान वृक्षेर्वामान्य देवि वा १३६ म् अर्थित्वभागि अर्थ

(याविन्ति विश्वजाः प्रमान्य नी वाहा विश्वी प्रमान ग्राम प्रमित्र विश्व प्रमान ग्राम प्रमान प

क्यू वार्ग अवन्य विक्वी कि भावति मान्य क्या त्या र्थमी कि भण्य मूकि स्वाधिक मान्य कि मान्य कि मान्य कि विक्या विक्

णाञ्चण्याविष्णेयामानाग्र्यी भ्रार्गिर्श्वाद्या निम्याद्य निम्याद्

देनकाला स्वान । महादेल के जिनाम को एक विकास के कि विकास के विकास के अवाका अवक्षा के । विकास के वितास के विकास के वितास के वितास के वितास के वितास के वितास के वितास

Control of the contro

प्रभाषभाभागाः १० व्यविष्ट्रः वस्वाधिक्यस्त्राचा विवृञ्चीक्ष्यविष्ट्रवेष्ट्रविष्ट्रविष्ट्रविष्ट्रविष्ट्रविष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्रविष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्यवेष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्रवेष्ट्यवेष्ट्यवेष्ट्यवेष्ट्यवेष्ट्यवेष्ट्यवेष्ट्रवेष्ट्यवेष्ट्रवेष्ट्यवेष्ट्रवेष्ट्यवेष्ट्यवेष्ट्यवेष्ट्यवेष्ट्यवेष्ट्यवेष्ट्यवेष ग्राक्ष क्रोधावा सम्यण्य निक्रियेष स्थान स्वावन क्रियोगः गाः भानयन् मर्वनः क्रोयण्य विर्वेष्याकि जितिकात् भार्किन बि: गर्गामिश्रीकिने: किम हत्र सम्प्रकाने नावकाना तमभास् भनवातिक्षा प्राप्ति नाम् मवाकिन्त् प्रताभी भका स्थान्य सम्भावति विमन्त्र व्यक्त स्थान्य सम्भारति द्रामित भेवा एक के नार्च के मिलाक ने नाहि । गो मिल किन अनुक कि विमान किला स्था स्था स्था स्था स्था कि के मान कि सान कि ते पाठायहिनो छ ने शिक्षा के प्रमान के प्रमान के प्रमानिन के तह हिन्दु प्रमान के प्रमा मान्गीः नेत्र नेकागेः प्रभाव विकल्पेमाति विकल्पिमानि विकल्प मानि विकल्प मानि

22%

वक्षः यक्षः । वश्वानिर्दित्वानिक्विः आन्पेमिलर्यः । १० १०० स्वितः प्रस्ट त्यस्यस्य । ११ ।

अस्टिःशीस्टिः देश्रेश्रह्म् । स्वायमास्य स्वादिकस्टिः १२१ भार्यभासिक्दिन्दः १२० १

ल्नात विनव्ह नेवित्र लिना श्वर्ण वर्ग विश्व क्षित्र क्ष्म र स्थेला विक्र क्ष्म र स्थेला विक्र क्ष्म र स्थेला क्ष्म र स्थेला क्ष्म र स्थान क्ष

वर्षनीनिन्नात्रामः १०) आम्लाश्च क्रिनेन्न्यक्षा विश्व प्रकारित्रा विश्व वार्षिक्षित्र दिनिन्न विश्व क्षित्र विश्व क्षित्र क्षत्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षत्र क्षित्र क्

माण्यं निष्यं (अवस्थित (भावधियां भेवस्थार्म विकास (भीवयना वित्यं माण्या निष्यां म्थान्त्र क्षित्र (भावस्था निष्यां भावस्था निष्यां निष्यां विषयां भावस्था निष्यां निष

जभेवाङ्गेचिक्वामात्वागो (समाञ्चान मण्यवाम केपूका न १२६ १मोमानाम स्वाम त्योक्षिक (क्षेत्र विमाणेषक्त्रः १ स्टब्स्यक्षि १२० १ समास्वयासी निवास (समायवाम अवास समायवाम स्वाम त्योक्ष । स्वाम त्याप त

श्राष्ट्रभण्यवान् त्याद्रगीय्रवः प्रवर्गविष्याय्या मेन्द्रत्य प्रगाविष्ठः । त्व इक्क्रव्याद्राक्षिष्ठात्य में विक्रव्यः । प्रद्र्ण्याः विक्रव्यः । विक्रव्य

निष्यिशंवभाषी विदेशनक्ष वतीया व्यान्यवार्गा विविद्धास्त्रीयणग्रामेख (विदेश क्षा क्षित १०० विश्व १० विश्व १

वसारकिकामात्मिक १४ १त्रिकाः वृतीः क्र अवसामामानीतानिव देवः देवकालात्मिन्य निर्मानिक विक्रिक्यात्मिक विक्रिक्य विक्

च्यादिशन् प्रम् वृष्णकारम् वृद्धानिक निकान प्रमाणिया म्याया वितिनी वाम्यक्षित् प्रमाणिय विविद्धान वितिन विद्यान वितिन वित्यान वितिन वित्यान वित्यान

-थाताशासित्कन लासिङ नम्थाक्यीत्मक्रियाविङ्गिका नात्मक्ष्याचीत्मक्ष्याचीत्मक्ष्याचीत्रिकाचिनिकाचीत्मक्ष्याचीत्मक्ष्याचीत्रिकाचिनिकाचीत्मक्ष्याचीत्रिकाचित्रिकाचीत्रिकाचीत्रिकाचीत्रिकाचीत्रिकाचीत्रिकाचीत्रिकाचीत्रिकाचीत्रिकाचीत्रिकाचित्रिकाचित्रिकाचित्रिकाचित्रिकाचित्रिकाचीत्रिकाचीत्रिकाचित्रिकाच

(एसभामाहित्यम्बाभक्तिन विक्तनिकिन्द्रक्र केतिवार मान्यमिकिन अविक्र अध्यान अपेनिक्त क्रिया विकास विकास विकास विकास विकास विकास क्रिया विकास विका

१९१४ मार्थिक वित्र वित्र मार्थिक वित्र प्राप्त किल्य किल्य

अभान्द्रिया १४ । प्रात्मक्छ। भेयि भाव (मृंशे प्रथा विमान) मिछ इत्याम्य (स्थिन) माज्यानामायः १४ । भग वाह्यी में किना व्हिष्टिक व्याप्त स्थित विकास विका

अशाश्रीयविविध्रम्मान् गार्थास्त्रीयक्षर्विशे (मिकिर स्तिर्हार्थार्था) ने श्राह्म विश्वास्त्र क्ष्या क्ष्या

मानका एत मिनाइ हो प्रभाव विवाद में महाने विवाद में महाने विवाद कि स्थान के प्रमान के निकाद के

244

लिभावतागीः यद्ध नावव विसे हिंद भी रूप अभे अभिवादिक माने न र स्वामित्र विशेष कर्ण के प्रकार के विभेष अस्य मात्र निवाद कि सिन के प्रकार के प्रकार के सिन क्षेप के सिन के सि

्यन्भान्त्रक्रंभेनात्रेन्त्भूषणमञ्जात्रात्रक्षात्र्वत्र्यामाममाम्त्रभद्यक्षात्रेत्रिक्षक्षनन्त्रभवित्रनः । श्वमक्ष रितं मर्तामिक्त श्रामं प्रमान में तुर्वात मन्त्र मायाः मम्बाक्य प्रत्वायमाका मार्गिक म्याव कितान क्रिक्त में मार्गियार माञ्किनी शी (वाक्सू प्रानः अनक्षाः भिन क्लिकः प्रत्यः प्रत्यः अवश्याः (क्षेप्रमानिनीः । स्त्राः क्षत्रा क्षत्रा भाग्या क्लिं ग्रथम्यल्ता मर्वावयाना भवस्थिति मनियंति मनायाभिक्ता मनल्यान गृत्रमात्नानति द्वि गुनार्थीयक मतिवामिक्ति व श्रेषायें परायो मास्तिनिनायां अवसी श्रवामिन परायां भागिता मार्यो मार्यायां विस्तिनिक्ता प्राय्यायां परित विवासमार्गकः विवास । से क्वाः अक व्याम तामि । से कि के कि विवास के कि विवास के कि विवास के वि the property of the contract o

ग्रेष्ट्याविष्मं रूप्ताविष्मं विष्यात्रात्रीया न्यत्मान्त्रात्र्यः त्यात्राचीतात्र्व प्रशास्त्राच्यात्र क्ष्यात्र प्रशास्त्र प्र प्रशास्त्र प्र प्रशास्त्र प्रशास्त्र प्रशास्त्र प्रस्ते प्रति प्रति प्रति प्रति

व अफन्मेश्री कानित्ति प्रमान स्ट्रां का प्रवाह स्वाह स्व अह ना ति ति स्वाह स्व व मार्च में वा ति स्वाह स्वा

240

-अयुराभन भारावाभाष्ट्राष्ट्रभार्थिककारितः विश्वकार्यामायाविद्याः । कः विभवनायावक तार्थश्राविकाविभित्रके लिए को तार्थली विभिन्न विभिन्

अविष्ताः क्रियाभाभवः १००१ डेर्न तालिक विकास कामानिक विकास कर्यानिक विकास विकास कर्यानिक विकास निवास कर्यानिक व

(तीरम्त्रीः भगार्तिक ने म्हानिक ने कार्ती म्वर्निय के प्रति कि क्षेत्र ने निवास के क्षेत्र के क्षे

शास्त्रिक्त मुख्यार्थिक विक्रिया स्वति विक्रिया स्वार्थिक विक्रिय स्वार्थिक विक्रिया स्वार्थिक विक्रिया स्वार्थिक विक्रिया स्वार्थिक स्वार्थिक

भुगार्त्रनामिककर्मनिमकी १५० गातागीः तिक्लोचर्मन॰ १४८ म्बळाथान्छान्छ आगेभिश्चनिक्षक भेनाव्यक्ष भेनाव्यक्ष भागत्त्व । कि स्थानमावात्यविकास्निव्यक्ष अर्थः लानीन क्रिन्यामें भी विक्तित्वन मिति पश्चित्राया श्रीति विक्तियामें यह निर्दिन काम अद्भित्र विकित्त विकित विकित्त विकित विकित विकित्त विकित नम रिमाठिक वे प्रवामावात्र के वर्षा है इसम्माहित का कि इसमारित के किया कि प्रवास के प् 322 नीनानी अनिती किन्छ । परिषठः जा किन के विनान सिनिनाः कियाः प्राप्त मिति क्रियता क्रियान क्रियान प्राप्तिका मीकमार्गाना भारता विक्तालका गुम्भारण सामकिक का के व्यासावित य (ताया में प्रकारों मरम् सामग्री स्वति का भारती में भे कानविक्याःमा १५ १ हिया मर्गवामितिन माञानी। क्रिनीविकिञ्च क्रिक्ति में निक्य ने निक्य ने निक्य में निक्य मिना क्रिक्ति में निक्य में

मान्यकालीकाः भन्निरिर्शित्वामा भाषो म्हेलाइमित्रमा विवद्धार्थन म्हल्यमान्याव क्याचित्रिक्ती कितारः १० गानित्व विवादी क्याची क्याचित्रमाने कितार कित

देल्कें म्तांताकनं मत्मर्थं नर्दा प्रश्नामा प्रतिभावस्था मान्यत्रीमा स्थानम् विकार मान्यत्रीमा विद्या कि विकार निष्या मान्यत्रीमा विद्या कि विकार निष्या मान्यत्रीमा विद्या कि विकार निष्या कि विकार मान्यत्रीमा विद्या कि विकार मान्यत्रीमा विकार कि विकार कि

अमिनि प्रेंशिक वामानि विन्ति के प्रति विनि कि के कि कि के कि कि के कि मिनि कि में प्रति के मिनि के में प्रति के में प्रति

256

जिन्श्राल्ड्यार्कान्दि लित्रेशी विच्याभागमेन दिनान द्यो विज्ञा भाव जिल्ला के विचार क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र के व वानश्री किंच्यात्र क्षेत्र किंगान कि विचार क्षेत्र क्षेत्र के विचार क्षेत्र के विचार किंगान किंगान कि विचार कि

क्यारीयम् लब्दम्यारिशिर्श्वाकेच प्रमेश्चिमायिकारिकामाळा नातालम्याकान्याकारिकामायिकार्तिकार्तिकार्तिकार्तिकारिकार्याकार्याकारिकार्याकायाव्याकार्याकाया

क्रियोशिक्तीं में प्रकारित में प्रकारित क्ष्मीं मिलि क्ष्मीं क्ष्मीं मिलि क्ष्मीं क्ष्मीं क्ष्मीं क्ष्मीं मिलि क्ष्मीं क्ष्मीं

270

क्रक्तानामिनियम ६ म्रक्तानीका नृक्षः । व्यीमद्वानीवरण भारत्यात् भारत्य । व्यानिकाण क्ष्यानिकाण क्ष्यानिकाण क्ष्यानिकाण क्ष्या विष्या । विष्या विषया विषय

নক্ষ্মিক্সাদ্ধিকি সাদ্ধ্য নিক্ত আৰ্ প্ৰামিকি শীলামতি লাগিনীৰ স্প্ৰমালি সম্ভানিকি ইএমি ৮০ জানাবিক্সোপাল পৰি সক্ত বা হঞ্জত কৰি ক্ৰপ্ত শাৰ্মিক সাদ্ধান্ত সংখ্যা কৰিব লাগিনিক স্থানিক সাদ্ধান্ত নিক্ত সাদ্ধান্ত সাদ্ধান্ত

य्राम्यने प्रमिष्वेजीलास्यां एक्षण्य विराण्याः १० ग्रामेश्व प्रति १ मान्यने १ मान्यने

किञ्चार्ययाप्रिमार्थनार्थनार्थन्य विकास विकास विकास विकास विकास विकास कर कार्य विकास विकास विकास विकास विकास व जिल्लामी भाषा विकास व (इम्बेगिर्क्क्जभर्जनातारभारभित्रमार्ग्वनेमामा नम्भावतिया में प्रतिवादिक्ष माण्यकार्व क्रिया में प्रतिवाद क्षिण क्षेण क्षिण क्षेण क्षिण क्षिण क्षिण क्षिण क्षिण क्षिण क्षिण क्षेण क्षिण क्षेण क्षिण क्षेण क्

253

विद्याः विद्यानिक विद्यान

कृष्णम्य वार्याति वर्षः १११०क विकित्यक वार्ययम् विवाया क्षेत्रे । विवाया क्षेत्रे प्राप्त क्षेत्रे प्राप्त क्षेत्र विवाय क्षेत्रे प्राप्त क्षेत्र विवाय क्य

भूगी: विश्वका अस्त्रति: जान्यम् वामेभे जावित्तमका कर १२ भेजनार्मिक्यार्गद्विकान् मृन्यूनिक्यां क्याची: १३) द्वारमाकि: व्यमः आर्थति: १२ विम्युक्तमका व्यवकी: १२ विम्युक्तिकान् वर्गाः १३ वर्गाः १३ वर्गाः १४ वर्गाः क्ष ग्रम्भाराय्यण्यात्र में मी खाला (मार शक्ताः ग्वाय्तिकानेविकामा मिलिकि मनः प्रमानक्षित्री (राम्कानेवाका मन्यामः । स्यामाञिविविष्णाची न्यामिक विष्णा मान्यामिक विष्णा विष् नीनामिन्त्रा मभाक्षिक्षाक्षान्त्रीन्त्रान्त्रकान्यकान्या निम् गरिनाक्षीक्ष्य स्थलकाक्ष्यकान्य निम् (वाधिक्छाजकीनाम (वाकाकाणाविव (वर्गभराजागोमरात्मक्य युक्कः पर वक्षकार्णियमान्ति।जकीनारक्योवदः वस्मा मायागेलाजर्मायर अर्वेतरक्तः विकिश्वादेवा में मूजक्जीना वित्याशोतिन विभववादिन कि एम योहजानि हर्ष से वा मंग्रिकन मरि गठ भेर्केमन मार्ग क्री किर्या निया । भराप्ताला वाल नाला न श्लार क्यू शान (या आरोभाया क्या (वन अन्तर्साकियोत् त्राहित्याः भाष्यका आविष्ठिभय्य नवभाग्यकात्रो हिन्दित्यः विश्वास्त्र भाष्यकात्र्याक्षित्र निवास हार्ष्ट्र हाम्यकात्र विश्वास्त्र क्ष्यकात्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र हार्ष्ट्र हार्प्ट्र हार्ष्ट्र हार्प्ट्र हार्ष्ट्र हार्ष्ट्र हार्ष्ट्र हार्ष्ट्र हार्ष्ट्र हार्ष्ट्र हार्प्ट्र हार्ट्र हार्प्ट्र हार्ट्ट्र हार्ट्य हार्ट्र हार्ट्य हार्ट्ट्र हार्ट्य हार्ट्य हार्ट्ट्र हार्ट्य हार्ट्य ह

(स्थाया। क्राव्यक्रित्र मिन्न प्रति क्रिक्ष विष्ठ प्रति विक् क्रिक्ष विक्रित्र क्रिक्ष क्

ंग्रुनानिकार्त्राञ्चावर् म्योद्ध् म्थाञानास्थाकि श्राकि विक्षित्रात्र १० जाको । एकि सिंदि तार्गार्ट विविधित । यार्थ विक्रित्र विक्रित्र । यार्थ विक्रित्र विक्रित्र । यार्थ विक्रित्र विक्रित्र विक्रित्र । यार्थ विक्रित्र विक्रित्र विक्रित्र । यार्थ विक्रित्र विक्र विक्रित्र विक्रित्

शास्त्राचित्राः क्षान्त्र में कि स्वार्य के कार्र्य क्षेत्र क्षेत्

279

भूति सिखन लिए एक क्या (मार मान में पिक प्रक्षीवयम रिवर्न रेज्यकी कि १९) व्यक्ति स्व का कि स्व का कि एक क्या के प्रकार के प्रक्षित के स्व के कि प्रकार के का कि स्व के कि प्रकार के कि प्रकार के का कि स्व के कि प्रकार के कि प्रक

शकानियोगम्भाराम्भार्यम्भार्यम्भार्यकान्तिकर्वकार्यक्षिम्भानियाकानियोगः स्वर्गण्याम्भार्यके १२१५२ हार्यक्षिम्भार्यकार्याक्षे १०१६ वर्षकिर्यक्षिण्यका स्वर्णकि हे स्वर्णके स्वर

र्की चिम्य ने जीना मारे विवास का निया कि विकास ने विवास के का निया के विवास के विवा

क्छा(रालेनान्धेराजनश्मा विकृष्णार्गाणीर्भम्यान नभक्षिण चेत्रभुक्षोतार्गाणे स्थीनभन्द जित्रमामान्यको जिह्ने विश्व जाना क्ष्यां क्ष्यां के विक्र के विश्व के विश्व के विश्व के विश्व के विक्र के विश्व के

क्षणिकमा॰कनेमामाकावामन् रखन्तिमा १६० गमनिक्षनितिका निक्रम मुद्रम्भान् पर्याः मन्यास्य त्राम्यवित्राम्य वित्रमा पर्याः मन्यास्य वित्रमानिका वित्रमानिका पर्याः मन्यास्य वित्रमानिका वित्रम

व्यास्वाद्वरभानक्कमण्डातम्यानम्यानमञ्ज्यस्व त्रामात्मत्रवेषम्भेष्यकाविद्रम्ब्यमिकायः भद्रत्माभेभिकित्विद्वितिवीत्यकावित्री १८८ १४० विभवत्व विक्रिक्ति विक् श्रक्षिण्यार्थः त्वाल्यः १० १मेव तिया के दित्वा श्रे (श्रवितीया के निक्ति कि क्ष्रिक के निक्षित्र के निक्षित क्थिनाविकाम्बा प्यनः यनः स्मात्रमितिन्तार्गार्थस्य नीनिक्ष्यित्रमेत्रिक्षेत्र त्राम् मात्रमेत्रमात्रमात्रमात्र त्रामनीनावानार्त्नः प्रमाभागिताकावियः रुपेटाकिमाताम् (र ग्रंक्कार्त्वमाना मेक्कनार्थी विनामने ग्रमप्रकृति ।।।विन लीक नक्षिनानीते प्यरुपे वार १३१ पर्याः रूखनात्त्र मिक्षिर्वावत्रक्षताः प्रक्रिया विक्रिया विक्रिया विक्रिया वामक्जिमिनामान् रमाश्रीना विन्द्रम्यकः प्रव्यनीनाक्श्रीणीयन् वस्योमामात्रीश्रीका प्रावन्य दानिक्ष्यकात्र वादमी द्रमेष्ठेश्रीः

अवस्याविनोहि भेक्छः भव्याभवीवम् अध्वक्षाभ्यत्वेताम् मिनाम् मिनिक्षिकाममाय्विय्वयिमामाताव्योन् व्यक्ष्वक्षकः क्ष्यलिनोधीनमान्यपर्वे ग्रेन्याये वर्षक्षिक्षिक वास्त्रक्षाक् कार्याक्षा विश्वास्त्र विश्वास विश्वास कार्याक्ष विश्वास के वि श्रीत्यनव्विक्षाम् अन्तिम् भेवाकाछिक्विनन्यमनामार्नः। श्रुतिः युवि विक्रिति युवि युवि विक्रिति विक्रिति । मार्यम्यामनाष्म्रयः मञ्चीयदिकाचमव्यमा ग्रायोगम्य श्रीमनीचित्रह्ण्यमकायामाममहामनाहितः भूज्योक्यमा 7-32 क्ष्णािकृषिलान्यमीम्व्यामिक्शामन ग्रामन ग्रामन गरायन भरायन वित्रांनाराहिला स्ट भामक्षानात्म पृद्धन द्यगोध्यगेगेन्द्वा भून भू शाम वाहि । स्थामिका (भी भाग समाधन निवास कि । भाग समाधन कि । भाग नि इकिन कात्मानामत्यक क्रमीन तिः म्ववक्तामितालक मृश्वमामत्ये। किलिक क्ष्माविका त्याक्षेत्र मिलकात्मानामित्र मानिका नामित्र क्ष्मीनम्बिका क्ष्मिक क्ष्मित्र क्ष्मिक क् यमगानिना खिलाग्राः प्रतिक्ष निव्दाः वाताण मत् क्छा कित्रा गाण्य रिज्ञानी में इन्हें क्वा क्षा मानिका भाषिका भाषिका भाषिका भाषिका भाषिक आविद्व १९६ पिक्स मानिका भाषिका भाषका भाषिका भाषका भाषिका भाषिका भाषिका भाषिका भाषिका भाषिका भाषिका भाषिका भाषका भाषिका भाषका भाषक

भामनिर्यं विचानिक विक्ति कि विक्रिक विक्रिया विष्णा विष्ण मार्विक महास्थित कि विक्रिय कि

विक्रित्र विभाव विक्रित्र विक्रित्र विक्रिक्त विक्रिक्त विक्रित्र विक्रित्र

आआभेरे विक्तः अभेजामर्सेलाश्च वर्षात्रेवरेः १११ वाण्य्यात्रिक्य भेजान्य स्थानिक कामानिक काम

क्ष्यामके में हिंद्शा विवासिः । प्रजमामामीकिः स्वामनमे विद्याशन । भागान्यतम् वीदार्शनिव्यानिका विद्याश्चित्र । क्ष्यामित्र भागान्य । स्वामित्र भागान्य । स्वामित्र भागान्य । स्वामित्र क्ष्या । स्वामित्र क्ष्य । स्वामित्र क्ष्या । स्वामित्र क्ष्या । स्वामित्र क्ष्या । स्वामित्र क्ष्य स्वामित्र क्ष्या । स्वामित्र क्ष्या । स्वामित्र क्ष्

नवमहम्भिक्या विश्वकित्व विश्वक त् प्राप्त प्रम्या मित्र क्षेत्र में मित्र क्षेत्र क्या क्षेत्र क्षेत्

विश्वम्र्रेश्यमनार् ह्वा९- विम्लियाविक्शिर्मन् रस्टिनार् स्थानं कात्रस्थितिक्री हिर्मिक्री: - वृत्रस्थितात्र १० व्यावार् स्थाव १० व्यावार स्यावार स्थाव १० व्यावार स्था स्थाव १० व्यावार स्था

विश्वार श्वार क्यादिवर्गिनि १६१ नव्यवित्विता प्रथादे जिल्ला त्रावित्व क्यादात्र विश्वार क्रिका क्यादात्र क्याद दिशहिना निषमा कि प्रतिक्रिका क्यादार विश्वासनी मानिका मिनाम क्या क्रिका क्यादिन क्या क्यादात्र क्यादात्र क्याद

नाक्णोर्तिरादित्राद्यभनात्वदिवभाषाः प्रतीदि म्याविक्तं क्वालकं निविद्यान्ति । व्याविक्तं म्याविक्तं विक्रित्ते । व्याविक्तं विक्रित्ते । विक्

कीर्यन्त्रानीतिश्वम्बन्द्रकार्यम्भित्रदेवि रः श्रम्भित्रवे विश्वान (विशेष्ट्रकार्यम्भित्रवे विश्वान विश्व

ह मामाप्य मनेशानग्रामिन गन्द भमनकाथान बम्हां न्या सिंपालमा दमी कर कि विशेषाता मामान स्वान कि प्राप्त के कि महान विशेषाता निर्माण कि कि महान विशेषाता निर्माण कि कि कि महान कि

कार्यकित्तानः श्राम प्रमान्यक उत्तिव्याकः श्राका निकाम श्रामित्ति वितरः । भगवाति ति विद्यानिका श्रीका विवास मेत् । स्ति भेतेः श्रामेः । प्राक्षित्र प्रमास्य प्रे प्रमास्य प्रमास्य । प्रमास्य प्रमास्य । प्रमास्य प्रमास्य । प्रमास्य प्रमास्य । प्रमास्य प्रमास्य प्रमास्य । प्रमास्य प्रमास्य प्रमास्य । प्रमास्य प्रमास्य । प्रमास्य प्रमास्य । प्रमास्य प्रमास्य प्रमास्य प्रमास्य । प्रमास्य प्रमास्य प्रमास्य । प्रमास्य प्रमास्य । प्रमास्य प्रमास्य । प

नेनिनानार्वित्रः स्थिति । स्थानिन । स्थानिन । स्थानिन क्ष्या । स्थानिन क्ष्या । स्थानिन क्ष्या । स्थानिन क्ष्य वाकी व्यवस्था । स्थानिन क्ष्या क्ष्या । स्थानिन क्ष्या क्ष्या । स्थानिन क्ष्या । स्थानिन क्ष्या । स्थानिन क्ष्य विक्रिक भिन्न जिल्ला क्ष्या । स्थानिन क्षय वाहिज्यानियां भाव के कर रतकारी १० विश्व विष्य विश्व व

क्षेत्रभेन्द्रान्तेन्त्रभवास्त्रानेन्त्रम् वाध्वःस्थार स्टाय्य्यात्रस्थानेमन् नाभित्रत्यने। वाल्याने स्टायाने व धाकातियोगेने स्वतिक विकास किया निर्मातिक निर्म एरा मर द्य के वा की रू जा व का कि एक कि पर कि द्यी थेन कि निम् ने क्ष वा ने क्ष का ने कि व के व के व के व के व र्गानिनीयाः । मर्थक्तिः य्रुवाकाण्यमकाष्ट्रहरूमण्या - देवामिकिकामान्वास्त्राकुविविष्ममा । प्रव्यक्षणामिनी र्कण्यमन इनान्यार्विनः १९१तिक यहातायन वीर्क्षण्याया मील्य मन्यवीन् प्रकान्यार्गलेशार्विक् न रिक्तिविक भा क्र विश्व विश्व में क्रिय माना कार्य ने कार्य के मान क्रिया कि स्वाद के विश्व के क्षेत्र के कि के कि देखाज्ञा अंच श्राष्ट्रा अत्रभेभाव स्था भन्न स्था हिना वह समिहा प्रव्य खिंड व्योत भए का का मार्थ । अत्र स्था स्था का स्था के स्था विकास स्था के स्था का स्था के स्था का स्था के स्था के स्था का स्था के स्था का स्था के स्था के

भू अतिज्ञासीरभक्षेमतावभेः १४ भित्रम्क भागाम् मतादभेन खन्य मण्यायक नियमानोकः भनभत्ताधारिति १२ १ त्रान श्रेष्ट भन्य नार्थामस्य नियमानोक हिन विकामहार दश्मिन के यह नियम महिक्षा महिना भागोद्देव अवस्था विक्षित्व महिना भागोती स्थाप के विकास स्थाप स्थाप स् खियागात्रायः द्वाम्यः शिष्यय विविध्मेम् मायालेकाकात्र में विविध्य किया विविध्य के विद्या में विद्या के विद श्मात्वारुभिन वाज्य अभागामतावरे प्रिकामणाचानाचीन अभः नात्वावस्थला पृश्वावडेवामणा याचावित्व क्मानी वा ह मान शेख वतार प्रभाव यान क्या मिमक्या व्ययसी स्ट विश्व था नियस्य विश्व किन क्रियल हात व 200 असान्वागे वियाय विश्व (मीमां मिनी स्थी प्रश्ने अन्त्रेव शिक्ता विषे (मालका से न्यू मिना वाका वा या साव - शिलिशिक्षाः न्यात्र क्षेत्र विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्ष क्रक्तम भात हमारे विशेष (भगवता विश्व सक्षेत्र कि । विश्व

भू वर्षां विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्व के स्वम्यम्मिति ११ चित्र विश्व के स्वम्यम् अस्त्र वर्षा विश्व के स्वम् विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व के स्वम्य विश्व विश्व विश्व के स्वम्य के स्व अञिः । भागाना निर्मा कार्या के विश्व के ल्यिवीर्श्यिक म्कारे किवर्षन प्यारे श्रुवेत्र के नेश्यावश्रुवामभेना किल् प्रेशिक ने नेश्य मूक्ति विकार मितन के स्थान क्रमानः ममः (यस्ययः री जिमवाकामि क्रमना थे। शाहतर्तारिंगिरिस्थायाकाम्बमः निग्मारमम्पर्वत्र श्रीयावश्रीकार्षण्य कृष्तिर्वावस्थामः कथ्य विष्कृत किमर प्राजन् स्वना शिक्ष्र किन्द्र जा भाषेका दि वित्र गु नकत्रमञ्चाक्रवाक्रवाक्ष्यक्षेत्रम् विनाकानेख । कि व्यक्ष्यक्ष्यक विष्णु विकाल विव्यवस्थिति। १११ विक्रमहान्त्र विक्रामिति क्षित्र विकार्या विक्रमान्य विकार विकार

वित्रविक विविष्य क्रिक क्षाविक मान्य दे वित्रवादा कर वर्ष कृष्य के स्थान विक्रिक क्षाविक क्षाविक विक्र क्षाविक क्षाविक क्षाविक विक्र क्षाविक क (याज्य १५ वर्ष मृश्विम् मित्र ने एक का विवाद अभाक्षिक वृभागे (वन ममानीक वुन्धीना अर्थ हर्का विवास की विः मन्भूग - उन्तर्धार्यं वेद्रश्रातः प्रार्गभ्यान् कार्यः क्रिन्ति वाक्षण म्यान्यिकात्वाय देवात्र्वत्वेगम् । अव्यक्षणे - गःकिष्णम्यविकायिकिरोविक्याकानान्यस्यविक्षी वर्भावनिक्तिमकः अन्तिनिक्ति प्रभावनि हमवाणिश्रवानानिमक्ष्या । पद्यानानिस्यिकिने: मक्षिने मधीक्षीक्षा । निर्मानियकिने क्षेत्र मेन्याय मेन्याय मेन्याय मेन्याय स्था - वश्य व भेजायात्वात्विवाचा यूरी निष्ण्यान भाग्याया एक द्वार निर्मात्वा प्रमाया विकास मार्थना भीन

कुञ्चानेयानेय(भेक्षावाभक्ष्यामित म्हावियाभूतो एर्गेष्ठणत्याय किल्डान म्हनेटो नहने एत्य द्यातियान मुक्षः । अजयक्रकायान स्वयानिय के वास्ति के ना व्यक्तियानिय के एते के ग उ: श्रवर्ष्य भगोष विशेषकात्रामक्खाका कृतास्वि (हिंडिक विशेष वास्वि हिंदिक महिंदिक स्व विशेष विशेष विशेष विशेष व इच्छि में छा वे विशेष के विशेष के विशेष के विशेष व - उउ वर्ग १ एएं उ दिन दे ने पार्ति व पा अविश्वकावनी भर्ग भव मधियमार में त्री काम स्वत्रीन अमाम्बी अम्भिक रिक्ष म्यान विभिन्न व श्रम्बल्यम् अवस्थान्य । किन्योभागेन गेवान्य्व । विक्योभागेन गेवान्य्व का वर्णमान्य । वर्णमान्य व में मांजाधाल्म्यान् । मांचे के करताये १८ मूळ्या वन लोग अप्टेश्चन त जिल्ले मार्गन शिक्षत या वर्तन मण्य मार्ग वर्तन मार्ग वर्तन मार्ग वर्षन वर्तन वर्ती जिल्ला मार्ग वर्तन वर्ती जिल्ला मार्ग वर्षी वर्षी मार्ग वर्षी जिल्ला मार्ग वर्षी वर्षी मार्ग वर्षी वर्षी मार्ग वर्षी वर्षी मार्ग मार्ग वर्षी मार्ग मार्ग वर्षी मार्ग मा erstering - it is govern, the property of the transfer of government of the property of the section of the section of

(नगर्ववाभाषार्थ गुल्यः ववद्यानरम्भागम्व नभाव्याः भूष्यः प्रमिनाः गृष्यः विद्यानिक्षेत्राक्ष्यः विद्यानिक्षेत्र विद्यानिक्षेत्

309

गुम्मिरोवक्रक्र विकास्थाप्रभारिक नामाम्बम्मेरी । अवस्थान्य सामन्यामिष्य वाक्ष्य त्याव्यक मिन्न विकास मिन्न विकास वित्र विकास वित्र विकास व म्यायाविको वनीराक्षे द्वामर्थात्रम्यो मुक्षाम्यविक भन्मम् मामाद्रीम् निवासिको स्वीभ्रता (ननानशीयमाव्या गर्ना भावति वित्रात्य निर्धावीकारिके रिक्क श्रुक्यायम् । नयमार्गाक् मिद्यानियान्त तिवन्त्रीया भूयस्वनीय नमा भेन्त न (या दिस् मारिय न् रू वैश्वामजिम्सिक् भूक्तिश्व (१६ श्रूमायर ग रियावाम इति निस्ने नि र्म्यात्रेव विभिन्न के नेन र श्रीतीव (विकास मानव के में श्रू वर्ष न पर्व देवा विश्व मान विकास के वा विकास के व नीयमासानी प्राप्त यान थेज वार्कि भाव भी ग्रियों ने सिवाय विश्व विकास कि कि कि कि कि विवाद भी वन कम ই সাহ্মদেহোহ্দাবিচিত্রৰ মেৰস্বাহণবিদ্যাধাত গক্ষান্তর মাহ্মদ্বাজহিতি ১৫ (মাসাহ্রতাহিত প্রক্রেক্তর বেল বৈশ্ববাবিদ্যাবিদ্যাধার সংগ্রেক্তর ক্রান্তর মার্থ বিদ্যাধার মার্থ প্রক্রিক সাহাত্ত্ব সম্ব্রেম্বর ক্রান্ত্র मणा मञ्जाली वास्त्र १ वर्णा कर प्रति के वामा किये। निसी के अनामा अनिस्त्री ली श्वित मार्ने वामिक स्त्रामिक स्त्रामिक स्त्रामिक स्थानिक स्थान कि विश्व किये। विश्व किये। विश्व विश्व विश्व किये। विश्व विश्व

स्मान्तिश्व करतानिकी गांतिवर्गाने विकास माने कर्णमिति विवास स्मानित स्मानित कर्णमिति विकास कर्णमिति विकास कर्णमिति कर्ण

30%-

वर्गात् म्यान्त्राच्यान १०२ प्रतिष्ठी मानः अविवासिक वर्गात्नेया न्यकः १०० प्राध्यायेन वर्गन्तिक प्रतिक वर्णन्य विवासिक वर्णन्य वर्णम्य वर्णम्य वर्णम्य वर्णम्य वर्णम्य वर्

-वन्नभात्रम्भिः द्राम्यानिवार्वं विकासनी गोर्वणानेकुम् निव्यतिक्षिक्रमें स्विधारोर्वात्वने क्रिशानिक्यन्त्रम्भ व्यवस्थाने स्विधार्थे स्वास्त्रम्भ व्यवस्थाने स्वास्त्रम्भ व्यवस्थाने स्वास्त्रम्भ व्यवस्थाने स्वास्त्रम्भ व्यवस्थाने स्वास्त्रम्भ व्यवस्थाने स्वास्त्रम्भ स्वास्त्रम्य स्वास्त्रम्

वीःगेवन्त्रेव प्रितिष्ठावीन्त्र्यत्त्रप्रमान् प्रकृष्टित्व प्रकृष्टित्व प्रवासिक्ष विश्व प्रवासिक्ष विश्व प्रवासिक्ष विश्व प्रवासिक प्रवा

-व्यंव्यंत १९१० वर्षात्रात्र्यात्र्य भावत्र भाविष्यामक्त्व्यक्षभावत्यायाभीत्रिति भावत्र्यम् । भीवत्र व्यवस्थिति । अस्ति । भीवति । अस्ति । अस्

िखितिर्मित् मिन्द्राव गार्थयः १८८१ वहा गार्थक रि. वहा यस्ति विश्व विश्व कि स्थिति । हा स्थेति स्थेति । हा स्थेति स्थेति । हा स्थेति स्थिति । हा स्थेति स्थेति । हा स्थिति । ह

200

किःकविवारम्भित्रीम्भूभाष्ट्रिय भ्रामेत्वामक्ष्रक त्यांचित्रोम्स्नीतायक्षम्भव्यक निर्धााः विद्यमित्रियाः म्याक्यिकाः निर्धाम्मान् निर्धान्त्रीः १३४-१३४ व्यक्तिकार्याः वर्षान्य विद्यक्ति । १४५-१३४ व्यक्तिकार्याः वर्षान्य विद्यक्ति । १४५ वर्षान्य वर्य वर्षान्य वर्षान्य वर्षान्य वर्यान्य वर्षान्य वर्षान्य वर्षान्य वर्षान्य वर्षान्य वर्षान्य वर्षान्य वर्षान्य वर्षान्य वर्षान्य

आयोगिक्शिन खुडमान १०४१त्रिनण्यः भेष्ठ्यणः मयनाष्ट्रवामकाक १००१६मार्ष्यमनिक्ष्यम्भिन्।४० गुजाश्चर्यमा १८० गुजायकार्यम् प्रेर्णन्य प्रेर्णन्य प्रेर्णन्य क्रिया (विश्व क्रिया क्रया क्रिया क्रय क्रिया क्रिया

लानिह्यवार्णकानिमार्थ (लाको छ लाग्रह: मूर्वां व नानिज्य ने विष्ण किला छ प्रति (इ अल्यां के विष्ण निर्ण में का निर्णाले का ने का विन्ना छ विनि भिक्त १८० । मूर्वाणे एक मानवारा क्वा मुखानि विक्रिका ने बना निक्ति विक्रिक एक मानि का किला के का किला के विक्रा के विक्र के विक्रा के विक्र के विक्रा के विक्र के विक्रा के विक्र क अध्याद्यक्षमत्रभवित्वर्गाः । आत्यान्यक्ष्याक्षमिदम्नेमवात्त्वर्गनेक्ष्येनः १० । अस्वान्यत्वान् भी १० ज्यान्यत्यक्ष्यत्यात्रम् । १० ज्यान्यत्यक्षयः ।

क्त्रीयिक्त्रिक्ष्यः त्रिक्ष्याक्ति वित्ति वित्ति वित्ति क्ष्रिक्ष्य क्ष्रिक्ष्य क्ष्रिक्ष्य क्ष्रिक्ष्य क्ष्रिक्ष वित्ति वित्ति क्ष्रिक्ष क्ष्रिक्

280

शिरुनेकान्येवरमर् सहिन्नहर्ना यहिन्नहरू स्वर्तन्य अन्य अन्य काल्येक स्वर्णक स्वर्ता अने प्रति स्वर्ता भीत्र स्वर्ता भीत्र स्वर्ता अने स्वर्ता भभः भीत्रभवक्षभण्याजप्रतिष्ववाद्करम् वन्त्रभ्यम् विष्यभूतिष्ठिवीप्रभवस्त्राक्षिक्षे ए निर्ध्यक्तिक्षीभव्यक्तिका स्थाविम् विवार्गे स्वत्रम् क्वम्यन् क्षे वाद्रात्वक्षमम् स्थाव्यवाद्याः प्रवेद्तार्विम् क्षावनभागित्रस्तः । न अल्विनायम् स्थाएकेना लाजिक अर्किक विवास्थ नहत्व भेन्याः (सार्भितन निवास्थः परे विनिन्दिल सेवनः साम्बन्धः भीत्र अविशवित्र म्कार्य प्रतानिमानियानिमान्य प्रक्रियोगीन रिवित्र निर्मातियान रिवित्र निर्मातियानिक विश्व वि ें कर्षिक्रियानश्रको द्वार मिनिवायम् मिनिवानिक्षे। यदिक्रविलेशन कि शनायामारके वित्ते करिवायमान् राष्ट्रम् वयव रा खास्त्रिय में कि स्थायकिया स्यायकिया स्थायकिया स्यायकिया स्थायकिया स्थायकिय स्थायकिया स्थायकिया स्थायकिया स्थायकिया स्थायक

विष्ठ श्रेष्ट्र प्रित्ने कि श्रिस्क श्रिमाण्य कि विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र प्रियः प्रियः विष्ट्र विष्ट्

-ग्यारियनमा १४ (यदामाध्यविष्ठ (नेर्क्नमा १२१ १थर्कि:अजितुरः पूर्वेष्ठाः अभूविनित्यवर्गिक्यानीशिवाव प्रकार में महात्क्याया वरणे तर नेप्रानेना आक्राण्या वर्गित्यर्गः १५०१

अन्यत्वेह्याद्वःश्रोनास्य प्रवादात्यदिक्षं ग्राट्य्यवभक्षवदेवि ११ विकिश्तामक्ष्णेण्युरुवा स्थितिभक्षवदेवि अभेवण जनक नमानुष्ण सम्विविक् भान्यदेवि अभेवण जनक नमानुष्ण सम्विविक् भान्यदेविक भान्यदेवि अभेवण जनक नमानुष्ण सम्विविक भान्यदेविक भाग्यदेविक भाग्यदे

287

म्राअः शिंश ११ रिकिन्द्रमान्ति रुक्तिभावाणि रुक्ताणि विभागि विश्व वाण्य भागि कानानि रुक्ता निर्देश । १५ विश्व विष्य विश्व विष

देविवृक्तभेर्गवास्य अनुस्मवदिलर्थः ११० १ वर्षाके विवश्चावत वर्षाके विवश्च का विवश्च के विवश्य के विवश्च के विवश्य के विवश्च के विवश्य के विवश्य के विवश्च के विवश्य के विवश्य के विवश्य के विवश्य के विवश्य क

नामक्रमामागनव्यत्वकर्यक्रव्यायम्भिविक्त्यक्रामाण्यीः आसीतिः श्राष्ट्राशिविकत्वक्रम्भव्येक्यः १८० व्यविक मान् भूमानाना मिकिकेल्थिक व्यास्त्र म्थेल्येक व्यास्त्र म्थेलेक स्त्र म्थेलेक व्यास्त्र म्थेलेक स्त्र म्थेलेक स्त्र म्थेलेक स्त्र म्थेलेक स्त्र म्थेलेक स्त्र म्थेलेक स्त्र म्

म्मिन्न्याम् विकास विकास विकास के मिन्न्याम निर्माण के मिन्न्याम निर्माण के मिन्न्याम निर्माण कि विकास के मिन्न्याम के मिन्न्या

-अध्यक्ष देशि १८१ १म् आधारमन जीव मञ्चनेत्रि (गार प्र<u>ट्याइ मनवर्ष भित्रिक मनवर्ष भित्र</u> मन् मन् प्रत्या के स्थान स्थान

इन्य हुँ भी विकास में स्वाहित्य के स्वाहित्य के स्वाहित स्व

त्रनेक्या त्र प्रत्य विकाश विष्य व्याप्ति विकाश विकाश

दिशिषिभानाच्याश्चितित्ती भेग म्वन्छतः प्रयश्नित्रव्यक्ति विकास विशेष्ट्यां निर्माण किल्यां निर्माण किल्यां विशेष किल्यां किल्

वंशनिक्तिभिनित्र श्वर्षिनेद्वाको युग्यक्कमाद्भवानिकिदेखः कि रूप्यानिकि वेशिक्ताः श्रेम् निवयकान्य भिन्ना १० १० हिन्यक प्रानिक्ति श्वर्षिक । १० १० हिन्यक प्रानिक्ति श्वर्षिक । १० १० हिन्यक प्रानिक्ति श्वर्षिक । १० हिन्यक प्रानिक्ति । १० हिन्यक प्रानिक्ति । १० हिन्यक प्रानिक्ति । १० हिन्यक प्रानिक्ति । १० हिन्यक प्रानिक प्रान

त्रियवमेशिकातिनीनावाद्यापनाविगेळ्लेत्वर् । म्हार्याति (अत्याद्या अभ्यात्री अत्याद्या अभ्यात्री अत्याद्या अभ्यात्री विश्व । महार्यात्री विश्व । मह

र्वनामिकिम्लाशास्त्रः अभाभिकिष्मुकाराकाणमधियानिकेलेखामिकवानिकवानिक्या । १० १ वर्षाभव भाभावाच्यात् व १० विलिश्च वार्विकिम् । १० १ वर्षा व भागिकक्षा विकित्र । १० १ वर्षा व भागिकक्षा व भागिक विकित्र । १० १ वर्षा व भागिक व भागिक विकित्र । १० १ वर्षा व भागिक । १० १

ष्रिनेशामो अस्मित्रान्या पिरानेः स्वीण कान्साम्य भारत्ये अस्तिका विकारिका विकारिका मुश्काना वान् न्या विकारिका विकारिका

निम्म मन्त्र कार्या विशेषां का कार्या कार्य

(नगरूम'वरगोराक्ष्ण) विक नीयवन्त्रीवाव विजीववन । अधिवीचंतिवर्गः । रहनवः नेनात्यवाण-। वय्रायाजनपत्रमेण ना विकासानेयवानेयविक्रिया । विकि व्यक्तान्यायाज्ञान्य

मब्सियहाम्मनेशाञ्चित्रमामामायदार्महान्याची २थावित्रेशाभितराम्बेशिष्ट पृश्वाहानात्माणि ताहात्वाहात्वाहात्वाहात्व लामियनात्नाहात्रीत्री विक्रियात्वाहात्रीत्रीत्राह्य देव विश्वेषीत्रमा त्याह्य क्षेत्राह्य क्षेत्रमात्रीत्र विश्वेष्ठ विश्वेष्ठ

स्वामिक्वा भाषामिनिक्षित्वामिक्ति विष्ठित्व । क्रिक्षेत्र विष्ठ व

्र क्षेत्राण्यव्यव जिन्नारम् एक विश्वकाक्ष्रप्रकार विश्वेषका वृत्ति । अनेन भाषीन्य । अने विश्वेष विश्वेष विश्व विश्वेष अपनि के विश्वेष विश्वेष विश्वेष विश्वेष के विश्वेष व ह्यायम्बरम्मानि विवासिकानियाने वाले प्राण्यूषाकारतालम् अस्य नाम्ष्युकामाय् क्रायेनी स्रिक्षिकाष् प्राप्तिकार् लिखाश्वमास्मास्मान्यक्षेत्राः प्रिष्शेर्द्धन् स्वाधिका अत्रव्द विकास वित मे॰निमेश्यमप्नम्तः भ्यग्छ्मानिनामानि॰धर्मन् फ्रिम्हिनि।। दारिविकार्यार्थायः गृह्णस्यक्षा ग्विम्याः भवमत्न अ(भाषा(रातिवास्वः।र्ग्यामानिष्यिकेन्यकेवाज्यानेममान्यि अयार्भिकि विद्यानिमार्यनन छिनिनि ग्वित्र्र्यभियो। द्या मन् भवाभनवक भीरमा शिमा शिमा भिने पे पे दार्क भिक्छा मक खिका मर् दूर्नः प्रमेः भ म्यन् मार्माक किया र मो बुनि ह मन्दिः तियक्यीवरमवस्कावनार्कः । मूक्कवभेस्नानीयग्द्रियासुनिस्येषः । भावक्रश्यन्ते लासिकिन मार्वाध्यम्तिनः भिक्र (क्राइभवात्मार्थभागः १ क्रिकार्थ प्रतिभाग विकास क्रिकार्थ क्ष्यां प्रतिभाग क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्य भिक्र (क्राइभवात्मार्थभागः १ क्रिकार्थ प्रतिभाग क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्या भिक्र (क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां

में विशास्त्राभिक में (बार्य-वार्य के क्ष्र मुनोन् क्षाउभे क्ष्रियान क्ष्रियान क्ष्रियान क्ष्रियान क्ष्रियान क रेय्य (बार क्ष्रियान क्ष्रियान क्ष्रियान क्ष्रियान क्ष्रियान क्ष्रियान क्ष्रियान क्ष्रियान क्ष्रियान क्ष्रिया देयान क्ष्रियान क्ष् भिनार्श्वनार्थं व मोहेर्जा विमेशिक्षमें भेग भे (भें प्रेशिका या मूल म्भावती अन्य मितार्थिक मितार्थिक मानकी अन्य विभावती विभाव नक्षेत्रक्षाकातक्षिण्यन्वताकभावाधिताभणाके कात्मवेवान्भेत्र्यः शिवत्रक्षायाण्यामियम् व विवासियि । मावी क्वार्गमिक्तिक्वितिक्वात्रात्वामाम् वन्म्रायिक्वितिक्ष्याक्ष्याक्ष्य देशिक्तिनिम्मक्वाम्यक्षित्रक्वित्तन्वर्गवान्यति व आवाबिता मित्रीत्यक्रमत्ने गिन्यू माधित्रम्भवाब क्राह्मा श्लाषा श्लाषा मित्रमा वित्रमा व्यापा माधिता मित्रमा वित्रमा वि रायमिल मनमार्थे भार्म पर्तावर रेवेचि मर्गिनामां म्या विस्ववं मिनी में दिनामां का माया कि ने के कि की से भने भर पृष्टिविवायणेत्वानां वर्षान्य मानीवनार्गां कि वीवक्षाव्यनां व्यानां वर्षान्य क्षेत्र ेहिन अभिनेश्वतः श्वभेषणीनायास्त्र न्द्रं (वे १६ क्रियमणान १०० । शाह्य । व्याहित श्वाहित्री भी नाणी विकाश व

निछः गर्भक्रश्वेमक्तिः (मेर्किः भेदीयः मधिनक्स्सोग्राम्कर्विकित्वं विभिन्तः ममत्यवासिभ्क्त गनिवनेयामामस्त्राकिनेकासि (वनिम क्यनी(धाक्रवामक्तिम्वक्मविष्ट्रये) काक्यू किश्मिश्वामिय्रहाशाः मर्म्यो। प्रक्रवामित्रिम्याः क्शाहि शामनास्थि । मश्रामिक्र (क्र्र्श्वादामालिस द्वि: मर् । (क्ष्र् शाम: मिलास्थनरेशिनिकि मानेनाः । भाजग्र देखाः नरिन भग्यवनवार्नाः प्रमायककानेवाचारभाविभेकीमञ्लाशमः प्रश्रावे रूगोक र्यूक्त्या कत्र निकः प्रतनमञ्जामा र्यायात्र्ये क्रिकः प्यक्तिः अधिनः यामाण्यान्येवभेषि विः। ११वीमारु या विवादारा राष्ट्राक्ति मार्गित विवादा व्यिक्षमाम्कादा विभागा छ दिन्छे द्वादा मिश्मेवार्थनः । नागे हर् विकित्ता काना द्विके काव ने प्राप्तिनां वर्ष छ निम्प्राप्त मैं ब्रिक्टियार्वितिक्रियार क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रय क्रिया व्यायक्षिणे: त्यार्क् प्रमान्गेक् विकिश्यात्म विक्र भारत र कि श्वार्क विक्रिया नक्षित्र निक्र विक्र ति हिंदा कि नामिति । भूजात्य वा विक्र विक्र विक्र वा विक्र वि

आन्दार्श्वास्मे विन्द्रांनगेमक्त्यः । ए वाजामक्षित्रके । अवित्रक्ष्यास्मे । विन्द्रक्ष्याने । विन्द्य

मुद्राञ्चानीक्रभान्। मिकाविक्वीकिनभान् लेखभाविक्षाव्यवित्रं यित्वक्ष्यत्रीय्यक्षिक्ष्यत्रे भिक्षिक्ष्यत्रे प्रतिक्ष्य क्ष्यानाः । क्षित्र मिनाविक्षाविक्षाविक्षाविक्षाव्यविक्षाविक्षिक्ष्यत्रिक्षिक्ष्यत्रे भिक्षिक्ष्याः क्ष्यायाः ।

नेवर्राकितः प्राणिमश्चनवश्या एका विकिष्ठ्य निर्ण प्राणिय रागेन्य नामाणिक्राण्य । उप क्रियो माने प्रमान प्राणि क्रियो निर्ण क्ष्मित्र । प्राणि क्ष्मित्र क्ष

श्चानम्भेन्डक कार्योग्रह कमित्रामानीकियो ११ भारतेयाम्य प्रमुन स्त्रभाष्ट्रियाम्य सेश्राप्त भारतेयाम्य स्त्रीय सेश्राप्त सेश्रापत सेश्राप्त सेश्रापत सेश्र सेश्रापत सेश्रापत सेश्रापत सेश्रापत सेश्रापत सेश्रापत सेश्रापत

भारता वर्ष विद्या वर्ष का त्या कि का त्या कि विद्या कि विद्या कि विद्या कि वर्ष कि वर

28%

माणातिक माना मिर्मिन्याव (अन्य गाव कि माना विश्व कि माना कि माना कि माना कि माना कि माना कि क

वशामिनविद्यान नेष्णा किन् कार्तिक क्षितिक क्षतिक क्षितिक क्षितिक क्षितिक क्षितिक क्षितिक क्षितिक क्षितिक क्षति क्षितिक क्षितिक क्षितिक क्षितिक क्षितिक क्षितिक क्षितिक क्षिति क्षिति क्षितिक क्षिति क्षितिक क

श्रम्भाविकात्र्ये व्यक्तिकात्रिक्ष विकास कार्यात्र कार्य कार्यात्र कार्य कार्यात्र कार्यात्र कार्यात्र कार्यात्र कार्यात्र कार्यात्र कार्य कार्यात्र कार्य कार्यात्र कार्यात्र कार्यात्र कार्यात्र कार्य

वीक्ष्यवा १०२ विक्रोत्रेक्तातिक अस्विता अमञ्ज्य १० भागिविक वित्र (वित्र किर्म वित्र अभित्र माने विक्र वित्र विक्र विक्र माने विक्र व

देखीशानिनिवार्स्डभन्यानिक प्रस्थिनिवार्थि । । क्याः प्रत्वाकेष्ठेक्तित्रिकनेया कि स्मानास्त्रात्र । स्वामानास्त्रात्र विविधारेक्ष्ण । भूमानामाना

भोन्। प्रिश्वः निवा शिवः निवा शिवः निवा शिवः प्रमान विविधः निवा शिवः निवा श

360

. त्य्राह्मा १३१ म् १३१ म् ११ म्

मुम्बः नेयाम्बरम्बान्यायाः विभेक्षां न्यायां प्रविक्षेणम्बिकामानिन्य्वय्यरिन्। भेष्टिकं यात्रिति त्यत्यम्कः म्यूमन्यक्ताः कार्यायकाः मिनाः वर्वभयायाः मिनाकाः भे वलामसोनंभद्रतागेत्रं महानः यगानमका हिक्लानेद्रकाति क्यानिनः या विचय वर्षः अन्य केत्रामक्ष्यानाम् वर्षानाम्या न्यने आद्योविता एगोलिक् उपरेने विभावित व्यविधार्गत्र अश्यवार्गित्र में मकत्त्र विभवानी असामा व्यवस्थित । भीः भग्यू अन्मान्य भी ताजन् विकारी मध्येन विकार गण भारतम् । (क्योज के सित्रायो निक्कित्यावित्रीः प्रमू हे सेत्र की गिरमहोजा संस्थां कि स् । १ भोत्रवन्थी ता मार्व यद्वे वीका स्मर्भा । भक्षी का मिक्क विक्ता ता हिना क विश्व के वी वा नार्मा स्मर्भा वि भताहत ग्रिकेशका में ति रिकेशावरिः नीयन वन गेड परावा अकिक मन्वीतार्ग म्रोक्सेगो एयः ग्राक्श मार्गानाता रिक्ष व इसरोजास वै अ देकीव विचा ने गर्गत्याल ने वार्षाल्यान्य तम् भाग्यानां भ ह ने दिन मुझा का तम् । भाग्याल भाग्यानां भाष्यानां भा

श्विम्छान्तिक । अर्थाण्याक विक्रिक्त अर्थाण्याकि । १६ भन्तिक्षिण । १८ १००० विक्रिक्षेण विक्रिक्

267

and the second commence of the second of the विषयभाववानिकभारतिवामिनावावभेग म्यायन कसलेभव्यिकाले सन्यान विकाल माहिक द्वामां देव विवासिकालिय विकाल महिका कि विवासिका विकाल महिका महिका विकाल महिका महिका महिका विकाल महिका मह भामः ककाणी व्यक्षित्रका (हेत्नेव क्षिमार्यका तिर्ग मार्यका तिर्ग मार्थका विकास कि विवाद कि का विकास कि विवाद कि तिरीर्यभाक्षाः । विश्वका छिरुश्चका महस्य विषे प्रथा क्ष्या स्व क्ष्या ये द्वा महस्रो ग्रिकेट स्व क्ष्या गर्य बान्यक्ष महावीर प्रभाषित्व प्रमार्थित विश्व मार्थित विश्व वर्ण ग्रेमन्त्र्यक्ष्रिक्ताना (वेक्षश्रेर्भ्य्य्रात्वेष: १:ग्रेप्तवान्यान् माकुर्यायभाषाक्रविकश्री विक्रमा गुरुश्यः श्रीमानवाद्य खिया अरू वयर प्नान् भावकु विवादिताया निनवाक् विश्वाद हि ग्लाइ: (श्वानेवामाविष्ठः किन्वालिश्वः एक्तिमानां भम्पं भन्नी अजानेवितिनाम् : प्यानानिवाल्य द्यारियने (वाक्वक्का: श्रिक्षक्ष क्रिया मानक्षरक्षभः १मानिताश्रक्षवाद्ताः विभित्ति क्षिभ्याविष नेश्वराजिनियामानीमिनि त्रविद्यानियानियान्त्र विद्यान् ज्यान् ज्यान्य अधिमायनेः वर्ष्यक्रकः त्रार्थाक्ष्मभवावः पृथ् । यूवः क्ष्य व्यान् वाकारणान्य वेश्वर्थाक्ष्म

भूतिस्थे। अत्याद्याः । भूतिक्या मह्यागेक्टम् भेति। क्रियामे अति । क्रियामे क्षित्र । अत्याद्याक अति । क्षित्र व अत्याजन्यरामाम्भ्यः श्वः वस्तिकावम्याकिक इकाक्ष्यक्षियः मिकि विश्विम् मार्गिके मर्ग्याति स्रोमकाति क्षिएि। द्वार हुअ: भेनेग ने अ(माक्षाय: निक्राय निक्राय । रामक्ष्याम् राम्य वार्षित्र मार्थित मार्थित । रामक्ष्याम् वार्षित्र वार्षेत्र वार्षित्र वार्षेत्र वार्षित्र वार्षित्र वार्षित्र वार्षित्र वार्षित्र वार्षित वार्षेत्र वार्षित्र वार्षेत्र वार्पेत्र वार्षेत्र वार्पेत्र वार्षेत्र वार 280 मञ्जासमागनेक परामनकारा विम्ला क्छवी र्यामक्ष्य : श्रम्भेक विकेष मर्वानवंगः विकेष क्षान्य कि निक्र का मन्त्र का मन्त्र का निक्र कि क्वायरीत्वामर्क्यक्री विकिश्व भवना मार्थिक में भित्र में भी में ने भक्तामरानम नी पायक विविधिक स्थान में हवा कर्त भी भेदः भेमक्ष्म ना भूगाश्ववणादि विवादिक शारावश्वक महताविवादेरः इतः नेववागावान श्रभू महामान निवादिक । भूगाश्ववणादि विवादिक भाग स्थाप स्था

कित्रीनेल्य्यान्यकानिकार्वान्यनिक्रिमीयेन व्यानाय त्रिवेद्या १०० व्याद्याअकात्राअक्षितिकिष्ठभूत्वार्त्रीः अवयस्थानार्वे व्याद्याविक्ष्मीय विक्षात्र विविद्या विक्षात्र विविद्या विक्षात्र विविद्या विक्षात्र विविद्या विविद

विचा ग्रिमम्ळाणीविष्ण्यभागाम् (१ १०१ वा गार्था व भवा प्राप्त व भव प्राप्त व भव प्राप्त व भव प्राप्त

वर्षमायाद्यः भामानेविन् मिविक्मे वर्षिक्ष्यार्भामाविदिवि १२ विकास विभिन्न देवार् अवित्नोकि विक्रिक विकास वित रथाखान्यानमालागः किमिभण्याद्विक्ष्र्वियण्याद्यान्याद्यानः ग्रामायान्यविष्ट्यस्थायानिर्याद्याद्याद्यात्राक्ष्याक् म्बीवस्वका गर्मात्वराजनामीनाविक्नेभाणाविकेवना भ्यात्विक्निम्तिविकाञ्यक्त्रायमराचीत- १नायाक्वीमरामायाभव भाषाविनानीनि । भारतश्वनाधारमण्यूगीयमभाष्य्य । य विमाख्यभाष्मात्री किमेन्मण्डानयन्ति । भाषिकिक्षा वर्वाणिः निमान्त्रदेशान्गेः पनिष्मानगेमानीने समीता व्यागिनः । । । । । । । । । । । । । । वर्षाभिष्य 268 नम्याम् वक्तित्रिक्ष्यान्थ्यं विभाग्रेवकीत्वायान्यय्यामम्याम् विभाग्यत्रेयाक्र्यः वारिलाच्याम्। नम्या महभायाणमभावित्रादित्यी ममनिर्मिता ग्रम्राहम्भेभमे वर्षा लाखिति राम तमार्थ्य के माता स्रेवार वित्राविता वि

मैलिक्ट्याकाण्यमार्गर्वतात्वमारुग्रह्डीलान्विकाणितकेव्यनाम्बर्कातिन्य १४ । विद्यासमेः आतात्विन्यः १४ । प्रवाशिकाण्यवस्त्रमेशिकान्यवस्त्रकात्वस्त्रकात्वसः१४

अराभनभेखिन वसः १० वन वन्ता (मार्यण्य केविजिन अविज्ञी रुखाक्तिको प्रेने विज्ञान ने विज्ञान के विज्ञा

'जाः जनाज्यः क्छ भेरमानियदं त्रिक्षाः जरण्यभञ्जनदेशियमात्रम्भव्दिण्कभेरमिक्षात्रभयो प्राणे त्र तिव रक्षां रह हात्रयक्षियाः प्राणिक्षयाः अक्षिये वाक्षण्याः अक्षिये विद्यान्त्र विद्यानि विद्यान्त्र विद्यानि विद्

भरावभी: भिराविकाभराविका भर्ममात्मानभाक्ष्मीण्यां क्रिक्ता क्रिक्त

शास्त्राम्बर्भे भवतायम् विविद्यान्त्री म् कृत्वाकीवित्र प्राप्तिक प्रतिक विविद्यान्त्री ।

(भेर्जनिक्त निक्त क्रिकाः विभावा में निक्त क्रिका क्रिका

€2 €

विषेत्रानेश्वात्रात्रिक्षेणित्रात्रित्रात्र्वं ।क्ञांष्काञ्चकः मार्थिक्यः गर्मादिक्ष्यत्रोक्षेण्यित्रिक्षेण्या विषेत्रकार्यक्षेत्रात्र्येत्रात्रेण्या

क्षित्र स्थानिक निर्मा कि स्थानिक के कि स्थ

रातरतकात्रीनाः भेत्रभाषाज्येना व्याप्त ग्रायक क्रित्यायक विक्निशेर्वते , विश्विर्विष्ठा अखारखानामनियकन्। होक्राभाकि र्यामिन्छ क्रें छिन नक्षिमित्रितासिः । ११मडः क् - जः श्राम्भेडे क्वानिकारन की श्रेश्वः निवाणि मिराविष्धे विश्वेषक का निष्या विष विकार्विकान श्रक्त वाजान मे हुन्दः ग्रमाज्य विवास कार्यान् एत्वरी क्ष्यः विवास श्रिक्त कार्यान विवास केर्तिक प्रत्ये विवास केर्तिक केरिक केर्तिक केरिक केर यासक (भवा मिन्नी व्या गिर्दा गिर्दा मिन्द्र शिव स्था विश्व विश्व के प्रतिक प्रतिक स्था विश्व विष आय्याग्रीयारेजि । अवाशीन्डिंशव्खायाका १० विकारिकार्मिकार्यरे । १११

निमाहिश्राहर्नाती प्रावि विरोक्ता कर्ण निय त्रांमिकिको प्राविश्विक क्षावर्ष्ण मिनिक क्षित्र कर्ण वित्र क्षेत्र क्षेत्

ुववक्षामन्त्रीतिनिक्तानिमात्र्यक्षेत्रश्चीक्ष्वकृत्ववकावभाग्याभिनेतन्त्वक्षाविवव्यवनक्ष्रभिनिकः प्रवासिकः प्रवासिकः प्रवासिकः भविष्यक्षानिकः प्रवासिकः प्रव मिधितरीन अर्म महाद्याविगेतान्त्री पान मार्थिव स्थित के विभावीय मिनिक अपित के विभावीय मिनिक अपित के विभावीय मिनिक विभाव मार्थिक के विभावीय मिनिक के विभावीय मिनि मगाजिद्यम्वान्यवीन प्रिनिकंत्र्यस्थाक्यां स्वार्थात्रेकरात्रमं अत्यामाञ्चायाः कारात्रभावित्र प्रश्विमा क्विनिकान्त्रीन कारामाञ्चे गोविवान्त्र्वानार्नभिक्कीक्षावयक्षे क्वाक्ष्म्वक्क वयक्ष्म्वानिनः । भारकिन्यानिक्षित्रकार्मिक्षित्रकार्मिक्षि महालामान्यान महमेखामेश्वामायाः क्ष्येतान्यामिकतार १वि ज्ञानार्विभिलो वित्तां म्यानीरुक्षेत्री खवारे । अञ्चित्र महत्वानीर व्यामियामिकार्यक्षिण्य क्षेत्र मित्र विवासी सार्वित्व विवासी स्वासी स्वा भर्भिनाअभर्गमाभाग १३ विक्रियाख्याखर्यहळ्याको नामवृगीभाज न १२० १ महन्य का व्याव विक्रिया प्रति के भारति के विक्र नथानिका दिया में विक्रिया के विक्रिय के विक्रिया के विक्रिया के विक्रिया के विक्रिया के विक्रिय के विक्रिय

शिवक्रा विश्वका विश्व

वार्यमान्वराधानः १२ । अवल्यायकाद्यात्राकाः भन्वार्थवार्यमिति १२० । हिल्क्याकित्रान्यक्ष्यक्ष्यत्रीर्यम् व्यानिक्तिक्याविष्यक्ष्यत्र । अवल्याकित्र । अवल्याकि

भुवामक् विकास सम्बन्धिक विकास महर्गि कि अक्षया भायपारभा दिना अक विकास विकास के विकास मिक क्षा मिक क्षा मिक कि व श्र्यनविदेश्याद्गिष्या । भ्रांभ्यश्यनः त्नेन प्रेर्भाष्टिरं कन्नाविना । तथात्नीनयविवके हिनीन् मिवार्करः - भेनमें अर्थिनोव 200 भाक्क्र भेठ (भाक्ष न गे॰ श्री प्र शाक्ष भाक्ष अभेदाभाव अर्थ भाव भाव वित्र दे नाम स्ट प्र प्र शामिना मारे भेद (न विवासिकितिनिमिनिक क्रिन्स् मिनिक् क्रियानिक्क्यारियाजा सिक् क्रियाच्या सिक्स मिनिक मेन विश्व क्रिया रविता

मैवाञ्चकः शेवणां अभोकः ज्यानिकितः जन्य में विस्था ।॥ विक्तितान् गोमाभाभअकृत्व भागिवकीि भवविक्यां विक्तिवासम्भाक्ष्यानिकिवावः । भागिवकी में देन । भाषिणिहः

पाइन्याप्रने क्रिक्ट न्यात्रे। नियान् नान्गे व्हिक्यामिळ्ये. १६१८मियाम्बताम १९ १ (इनने व्यक्तिने व्यक्तिने व्यक्तिने व्यक्तिका १० । अतीका १० अवस्थित अवस्थान १० १८ने

(म्यायेनिक्निने ने ने क्वायार्थिय के प्राप्त भानुस्वाहर नित्रानमेल ग्रा श्र को एक मेर भेर्ना ने भानुस्ता क्रिक्यमियासियाः रूथाः । विकाशिनिहस्यः याग श्र इंदिय: क्या: पर्मियविनीयाने: नियान् विश्व में कार्नियण्यति। मिनीमान् विकिः वर्षाभवनः ग्राम्याजिलार्गरेववापर्तु -ज्योगित्रमे (वाक्ष (योक्ष योक्ष याज्य वाज्य मिले वाज्य मान्य के प्राप्त वाज्य मिले वाज्य में वा अकृष्टियो मन्नो न्य अवस्थिक को (वेह मः एक मन न ना मिल बानकः न्येक नक न त्या मिल व्या हा व्या मा कर्ने हा हिन्दु की मनव गृहित्या में मैं का किलाना आर अपाकि रेकि । अर्था विद्या का मी मनार्थने कि विद्या का ति । अर्थ विद्या का माना अर्थ के विद्या कि । अर्थ विद्य कि । अर्थ विद्या कि । अर्थ विद् त गर्दाक्ष (गोर्वाक्षक महत्रवार्गिक भया ग्रह मञ्चार्थ प्रति । १८ किकिंभभाः शंवदभग्ना न १८ चिम किक् भावक देव । १० विकास के वित्र के विकास के विकास

र्म्भागैः भेजभेजेग प्राप्ति निर्ण विश्व संवर्ष मार्थम स्वर्ण मार्थ स्वाप्ति स्वर्ण मार्थ प्राप्ति स्वर्ण मार्थ स्वर्ण स्व

वित्रमंबावनकामि। नर्शति भमान्या मानिव्य अकृति कहात्मिक भश्यितः जन मानिमिनिक्यः भिक्त्यः विक्लित विकाश कर्य किल् में व्यक्तिक नम्यायाम् कृति माण्या किल्बीयेकः आह् रमनेव नमेन मुठ भण्यो एक न म्याया मानिक में किल्या से किल्या किल्या से किल्या क्तिकीत्रा भित्रितिकार १३ प्रश्ना प्राप्तिका भीतिका वित्रितिका भीतिका वित्रितिका वित्र प्राप्तिक वित्र प्राप्

मनाम् भताक्षक श्विताः भर्मे भी भिन्नाः । ह ११२ भे भागो हरू निवित्त स्व मान्य मिन्न वित्त क्षित्र क्षित्र क्षित क्षित्र क्षित्

2= 2

बद्धिकः १६ एक्कि निर्देशम्य प्राप्त वात्र अविद्यानिक रक्कि कि प्राप्त कि प्रमुख्य कि प्रम

भूत्रीमान्भक्तात्रामान्यविष्ठात्र विष्ठात्र वि - अरुप्तर्गियाणाणिकात्रज्याचीन: पविश्वनी विनाम्यक्तिय कर्मेयच्ययः प्रोत्रात्रक्वकारेक मन्येत्रश्चितिया विश्वनिर्वाण्यम् निर्व -थांकीनभेठियलीहरूमात्रवाद्रकीर्विद्विकारीहर्माहरीहर्वे वार्षिक मार्किनीहर विकास विकास स्वापिक मेनका कार्य कार्याकीन म श्रमेकानोवाभाषायः । भाषाम्यामिकवाष्या निक्वाष्या निक्षानेवावि इक्षिकीकार स्वायमः । रूक्ष्यकाकाः विकास स्वायमः इक्षान्यार्गनिक्तित्र मिनितन्त्रेत प्रमान्यां निक्षिमिवारिक प्रतिश्वाह्निति मिनित्र प्रतिश्वाह्निक विवास्य प्रमानित्र प्रतिश्वाह्निक विवास्य प्रमानित्र गेन्त्रिक स्क्रुवीक्रक का स्म् भू में पृथ्विकित का का मानित्म के प्रान्य पेश वित्रका भे भागा का कि वित्रक में भे ते मामनमाप्रीनक्खाक्खमनिकि । नताणकीशिवा किकिन्मितिका भवत्व मानविक भार्यः भूजिन्माधिविक्तः। नि विकास धामकर्भः शेब भूति मुझाल्ने वितास मिन्य क्षा माने मिन्य क्षा में भी भयिति में ने आ ने मिन्य क्षा ने मिन्य क्ष श्रमकाक्ष्यकानीनकविद्यां वभार्भाते (तृति भार्त्र मित्र अनिद्धाविद्या निष्ठः व्याक्ष्यकाति विश्वक विभाव विश्वक विश्वक विभाव विश्वक विष्ठ विश्वक विष्यक विश्वक विश्वक विश्वक विश्वक विश्वक विश्वक विश्वक विश्वक विश्

जराबन न्यां शास्ति वायात्रात्रिकाः वायो मात्रात्रिकाः वायो मात्रात्रिकाः वायो मात्रात्रिकाः मिन्या विश्व वि

भक्षेत्रक्षनाम मिलाविति भाभाग्राका निर्दिन भक्षामिला । प्रानम्बर्गाम् विद्यान भक्ष कर्त्य कृषिया भिन्न विद्यान भक्ष भिन्न विद्यान भक्ष भिन्न विद्यान भक्ष भिन्न विद्यान भाष्ट्र विद्यान भिन्न विद्यान भाष्ट्र विद्यान भाष्ट्य विद्यान भाष्ट्र विद्यान भाष्ट्र विद्यान भाष्ट्य विद्यान भाष्ट्य विद्यान भाष

बास्त्र म् विकित्राम त्यांची करीक वर्षाची कर्या प्रभाव के प्रमान का प्रमान का प्रमान के प्रमान

नश्गीकी विश्वाित विश्वेत विश्वेत विश्वाित श्रम् वामारिया स्वर्ग विश्वान विश्व

अभागाममञ्चानप्रच्यभार्ग्यामा १२६ १ हर्माकाम मिनाः १६ वस्य स्माने वाभवाः अवस्थान्य विविद्यभाष्य भ्राष्ट्रा स्थानिय स्नाचित्र का क्या वाभममाः ११

रखं रुजामनमेत्रा (स्वारेकीत्रावान मिन्न क्रिक्न क्रम्तः । वारीवाववान प्रतिक्षणानकार्विति । व्यादान क्रिक्न क्रम्य क्रम्य क्रम्य क्रम्य क्रम्य क्रम्य विव्यक्ष क्रम्य क्रम

we

यम्मित्रलाम् मा १०० । अध्याक्त्याक्त्रमीनात्मा क्विण्भण्यूर्गेयवार्ण भण्यामे आभित्रिमाण्यामार्गण मूर्यना में भाषीनः मञ्जीका विवाधिकः वर्षाव

यसे भारतम्कितिकि को ने मः अत्याक्षाविषेतिः महानामक ग्राञ्च क्यामी प्रतिकृति मठी । नामे कि कि एना मार्थित कर्णः । १० विन्माने क्रिये मध्य के देव का का न

स्वनान्व्यानान्वां व्यान्य निर्मान्य क्रियां महिना निर्मान क्षित्र क्ष्मान क्

भेनानहर्वजान १२४। वृशान्य चित्रिया विश्व विष्य विश्व व

(ले(र्मीण्डाक्रमेडा॰१०० व्रिष्ठमभार्म्मा (कृष्टि मार्मक्ष्रीक्राक्षा नक्षरीण्डा व प्रमान्धित । त्रिष्टि । त्रि असे भराष्ट्रमः । कं । रिक्रां मार्मका विश्व के कार्या रिक्रां । कं । उन्यक्षित्र (क्ष्रां के । क्ष्रां के । विश्व के । के कि कि । क्ष्रां के कि । क्ष्रां के । क्ष्रां के कि कि । क्ष्रां के कि । क्ष्रां क

(मेलिङकरः । त्रिक्मी वाद्यक्तिं क्र मक्तिनामिक प्रमानिक प्रमानिक प्रमानिक क्रिक्न क्र क्रिक्न क्रिक्न

3~8

(नारभोनश्रीनश्रीनश्रीक्षिक स्वर्णकार्यक्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र

निक्छीवास्त्राः स्वामभक्षामाण्यू कीवाष्त्राभीवाके १०२ १ नातीचीराणेशः संद्यनीच ववकानिवभेष्यरभेशः स्वयं वीच ववकाचीः असीव (व्ययः संद्यनीच ववक्रीने ववक्रीने ववक्रीने ववक्रीने ववक्रीने ववक्रीने व्यवस्थाः संद्यनीच ववक्रीने ववक्रीने ववक्रीने ववक्रीने ववक्रीने व्यवस्थाः संद्यने विक्रानिक्षण

तः भगियात्र श्रृष्टि निवस्त प्रम्ति । भगियात्र भगियात्य भगियात्र भगियात्र भगियात्र भगियात्र भगियात्र भगियात्र भगियात्र

अप्रतिर्मिक्ष्यमीर्योजिनिक्ष्य प्रमिक्षेक्ष्य क्षित्रे । अक्ष्य क्षित्रे अभूक्षानानामिति भावण १०० । अविभित्र भाव स्व कि विकि नामग्राणि क्ष्य भाव न्या । भूका व्यव नाम

शीवे निवेना भानण निवर्गन निवर्गन निवर्गन का निक्या निविधिका चान १३३ मो निविधिका वाजा निविधिका निविधिका

िकिमामक्रिमः मश्चाराष्ठे विद्यां है विद्यां विद्या वर्षे विद्यां वर्षे विद्यां वर्षे विद्यां वर्षे वर

320

वाविवारायः मराभाष्ठ्रण विव्यवत्रवाविव्यक्तित्वे वक्तित्वे वक्तित्वे क्ष्याया के क्षेत्रत्विक्ष्यायेन क्ष्यायिक भाविक्ष्यायिक क्ष्यायिक विव्यक्ति विविद्यक्ति विविष्यक्ति विष्यक्ति विविष्यक्ति विविषयक्ति विविषयक्ति विविषयक्ति विविषयक्ति व

द्रार्भविव्यामित क्रमेन क्रिक्ट जना स्थानिक अस्ति क्रमें में प्रति क्रमें में प्रति क्रमें निव्यामित क्रमें विकासिक क्रमें क्रम

वाक्षमनिका प्याराहणीम्यावक निर्देशमान्याहणीयेक व्याप्ति विश्वा निर्देशमाने विश्व क्ष्याने क्ष्या क्ष्या क्ष्याने क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्य क्य क्ष्य क्ष

জ্ঞানসাদাত্তক্ষ্প পুর্ব তেজ সাক্ষেণ্সতি কিমান্তেরত্বনাস্থ ক্ষ্প প্রতিষ্ঠিত বাল্যাদিনাত্তত প্রতিষ্ঠিত বিশ্বনিধান

त्रिक्षााक्ष्मिण्डिक क्ष्मिण्डिक क्ष्मिण क्ष्मिण क्ष्मिण्डिक क्ष्मिण्डिक क्ष्मिण्डिक क्ष्मिण्डिक क्ष्मिण्डिक क्ष्मिण्डिक क्ष्मिण क्ष्

(महिन्न्यमक्तामअन्वाममण्डेन भ्यातिम्द्रभगंद्यक्रमण्ड्यातोग्रहञ्जनक्ष्यमेकमेरिक उद्याह्ण भूवि वाल्यन मिट्य मिल्ये । प्रमानिम्द्रभगं भारतिभाग्रहण क्ष्यमेर्क मेरिक उद्याहण स्व वाल्यन स्व वा

निर्देशीयामामा विष्ये में अने अने विष्ये के विष्ये के विष्ये के विष्ये के विष्ये के विषये के व आणिक्य पर पर्विखानाहिन्वीत्कृः नेत्रिक्ते व्यक्तिः विख्यानः यूर्विन भक्षांचा निष्ठार्गकान्यक्षार्यमान्छ वर्गकारिमां गर्वाभवाविभेत्रेनिवालाम्भय्ये माश्च्यां का कि जिल्लामा कि विकास कि वि विकास कि वि विश्वांमकः।।।।नारम्भक्रमानिकामानाक्ष्येवित्रेः । गृह्मक्षे भाम्यक्षेमान्वित्रे । गृहिक्मिर्गाक्ष्येव्यानिकामानाक्ष्येवित्र रिति । भारतिमानिक्षित्र । नित्र विकास कि निकास क श्रवनित्र मिन्द्र विकित् के दिन क्रिक्ट के विकित क्रिक्ट के विकित क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्र

अश्निकाक्यानि कि एक् क्या १४ विक्र कि विक्र कि

यदाकान्विद्रहेम्भेलास्य विष्टः १०० (मिन्यानिव्य भिनिक्ति के किस्य विष्ट्रहेस्य मिन्या महिक उपमान स्थानिक प्रभाव विष्ट्रहेस्य के प्रभाव कि प्रभाव

259

भाष्ट्यम्म् विक्रिक्षात्र्यात्रम् विक्रिक्षात्र विक्रिक्ष विक्रिक्

अवन्यभगाव वर्गाम्त्रीकि रुपूर्ण भारतः १२ छाउम्भागा १६ । भौजाधिक मिलिनिस्सान क्षण । भक्षा विशेषा वर्गाम्य । भू । भौजाधिक विभिन्द । भौजाधिक वि

भद्रक्रित्रक्षभ्याणितरुत्वानीर्व गृत्रस्वे वा पृत्रित्विक्षाक्रित्वाक्रित्वाक्षित्र्या गृत्रस्व विष्ठ विष्ठ विक्र विक्र

भी भूबीकः स्मानेतर मधन निकरण्ये वर्षाप्य अरु स्मिन्य्याण्य विवादवार म्योजनेवास्यार शिवाहितारं भी न विद्वितिः । मदान्याविस्थीमञ्जीकाणाम् वतार्षितिः। गर्गा स्थाखानिर्मितारियाहियाहीन् अप्रदर्भितार् पर्देशभागाहि - याहरे न्यातीवर्षिर मेमान्य भवाकात्याविक्याः म्यूक मन्द्रक नेवर्ने 400 गेरान् प्रनविश्व क्राप्त्रमान्याये नक्ष्य क्रिश्नान्।। विश्लेख क्याना अपना माना करें ने भी भूषा विकार में मेरी रिक्ट के नाया में मिलि के नाया के निक्क के निक्क के नाया के निक्क के निक्क के नाया के निक्क के नाया के निक्क के निक्क के नाया के निक्क के निक के निक्क याः चित्राव्यायगेन्द्वाछा ताञ्जिति स्भिक्षियायायायाया अभिक्षिक जिल्ले कि विवादिवादा भिने हित्राविका भैं तर्गितः (त्याहात्रनितारमानानिविविद्धितिकोष्टितान चिक्कोभश्यकारिवादिनानिकि हिले शूर्विभी मिनानि । भग निर्वादमान भग नरमा प्रशास्त्र (मृश्व कीयण्)) है अवस्त्री नार्भिका को बालो एआतार में अध्यक्षीनो वेदक्ष में वी भाग भागिकाः अवस्थानिक किका निर्वाद निर्व निर्वाद निर्वाद निर्वाद निर्वाद निर्वाद निर्वाद निर्वाद निर्व निर्वाद निर्वाद निर्वाद निर्वाद निर्वाद निर्वाद निर्व निर्वाद निर्व निर्वाद निर्व न

क्षिर्वार्थित विकार के विकार

(यक् क्रांतर्ना क्रिक्ट क्र

त्रांश्रभणिकः भेक्क्वाक्ष्रि विश्वाः स्वः भेठगत्मिक्षिक्षत् विश्वाः विश्ववः विश्वाः विश्ववः विश्वः प्रदेश्यकः विश्वाः विश्ववेद्द्र विश्ववेद्द्य विश्ववेद्द्र विश्वव

sec

भाभअन्तीववान १२९१भाभावप्यकः हि नद्दिशकी विष्युकारमें वाष्ट्रिका (क्षृत्रात्रेणी प्रवेशकिक क्ष्युक न्युक्तः १३०१ (देशकी विष्युक्ति विभाग वार्ष्य के विष्युक्ति विषय के विषय के विषय के विषय क्ष्युक्ति विषय के विषय के

मात्राःकिन्। १९ (तमल्येन्मिकायन्यामीर्धमभीक्या गुक्रावयः ग्रति विक्वितः माविना स्वाग्राम्यानाक्रम्कार्यानाक्रम् मर्के । एसनवमा नियः महाविद्यास्य हत अमाना प्रविद्यानी विद्यानी विद श्यकाः भाषान्यत्याम्याद्यकारान्याः वा त्वायिक्वाम्याः वा त्वायिक्वाम्यावक्कान्यान्यव्यामिन प्रमाया नामितिस्वाउन् में प्रेजेशावम् प्रेजियाताल्ने भरुष्ठ माधानः यिम्छा म्यून्य प्रविष् प्राय्व विश्वित्र म्यून्य अा प्रवा कम्बीकार्गाम्य । राष्ट्रमास्य न नभाक ने वियाय व निभन्यक विद्याय कि न्यामी केवी मह मक मिलाखानी वहा चैक्माभीनाःअवववक्षाण्डिः श्रमीत्रीक्षिक्त । माक्षिमाञ्चा सिमोविकाः आत्माद्वर्षेमाभ (द्वेकि १० । अवित्मवा (क्षावाक्षीनाम (व्यवमास्तर्वर्थे वर्षेकः । १३ ग्रिक्षानक्षणेभाव् भाग्या वर्षे विक्रिकामित्रवान स्वके देव प्रदेश देव स्वित्र प्राप्त के प्रत्न के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्रत्न के प्राप्त के

मिलिकिक्क पृक्ष प्रतिने के अपने के मिलिक के मिलक के मिलिक के मिलक के मिलिक के मिलक के मिलिक मिलिक के मिलिक के मिलिक के मिलिक के मिलिक के मिलिक के

दशयण्डितः नल्पेन्संडिः भामः कातः भ० भगित्वक्षया वर्षे प्रक्र क्षेण्यविष्ठ ग्राजन विष्ठ ताले विष्ठ माने क्षेत्र या आसी हिल्ले मान्न ने निक्क क्षेत्र प्रकृति हो शानाम में भिन्ने प्रकृति क्षेत्र में भिन्ने क्षेत्र माने क्षेत्र क्

श्रीयमधीक अभिन प्रक्ष्या । प्रतिकार्य विवास प्रतिकार्य विकास विका

शामित्रार्ट म्वर्गनिक महिन्द्र महिन्द्

भिन्दान्छ आया एक हो भा अत्वाद्य के भा में स्वाद्य के भा भी के के के स्वाद्य के के स्वाद्य के स्वाद्य के स्वाद्य भा अविभाजा के प्रतिक्ष के अधित के स्वाद्य के कि इंट्या में स्वाद्य के स्वाद्य के में स्वाद्य के स्वाद के स्वाद

विश्वित्र व्याप्त स्वाप्त स्व

.393

(भावनी निकामान वृद्धिः कराँ के किका अन्य में भावनी के क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्

विश्वात्मान्याः मन्यक्टेनेमान्याम्यक्ति। विश्वात्मित्रित्यक्ति। विश्वात्मित्यक्ति। विश्वात्मित्रित्यक्ति। विश्वात्मित्यक्ति। विश्वात्यक्ति। विश्वात्यक्ति। विश्वात्यक्ति। विश्वात्यक्ति। विश्वात्यक्ति। विश्वात्यक्ति। विश्वात्यक्ति। विश शान्यवाधियोत्रनेक्रिक्यंन्वायात्रेक्ष्यं स्वयाव्यानेक्रां शान्याः स्वयानेक्राः स्वयाव्याने विकान नुकाः १ अग्र विश्व मे तिरुविति विश्व मान्य क्यो क्यो क्यो विति विभाग में वित्य में वित्य क्यो वित्य में वित्य क्यो कि ति वित्य कि रुमिनिऐ रुक्त नाजिनिक विजि क्या जिल्ला मिनिक का ना विश्व के ना का निकास के भाष्य्वर्रेण श्रमयिकानि विकिष्ट्यः । भूके श्रव्यक्त्रम केनी वेब्रा विमासाभाभीकागण्य इनः श्रमाम् कर्णा १९६ (नेवानीक् भर्भात) नम्स्य भर्नेन्य्न विश्वायार्विद्यायः रूळायाः श्राम्बिः क्रिक्षाहर्ष्यू हायान्यानिय्वकाम मानात्यिकित्ववन्तव प्राप्तिर मञीयि र्याजा विके मृत्याप्तः विकित्र वास्ता मार्थिक प्रार्थिक कार्या निवासिक मार्थिक विर्मा आराज्य विजित कर विष्ठ विर्मा कि विर्मा कि कार्य के प्रिया कि कार्य कि कार्य कि कार्य के कार्य कार्य के कार के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के का

न्तिः मम्भारम् विश्वावित् भः १६ गमामावताक नवस्ति ज्ञावता वित्र मधन यक्ति (मोक्षण मान्धः । भेष्ठा मह (वाड्मेम र्यम् मनिवाति क्रिक्ति क्रिक

393

अपिहमूर्येन्त्राचीन्त्रत्मक्याकेर्यंन्त्रभित्तिवायिन्त्रियाद्यातेन्त्रक्षित्रक्ष्यात्र्यं विश्व क्ष्यात्र्यं क्ष्यात्रे विश्व क्ष्यात्रे क्ष्य

(साम्बीलातेनाम्नी: किमनिक्वनयण्याः न्य हिश्षण्य न्यायोग्यत्म विक्रम्य स्मानिकामयिष्टिशयिण्या स्वर्णे न्यायिया स्मानिकामया समानिकामया समानिकामय समानिकामया समानिकामया समानिकामया समानिकामया समानिकामया समानिकामय समानिकामया समानिकामय समानिकामया समानिकामय समानिकामया समानिकामया समानिकामया समानिकामया समानिकामय समानिकामय

ज्ञार्थायः १ स्वर्धिक ति लो ए स्वल्लेशिति क्षि । श्रानिक विवाद कृषिति ग्रानिक । श्राधित स्वल्लेश स्वक्षी समूक्त वाल १ (राष्ट्रिको स्वत्रामिक विवाद विवाद विवाद । त्राप्तिक क्षि क्षेत्र क्

न्वान्त्र्यानार्षं वह वृं (काहि (नोहर्षे प्रम्वतं क्ष्यकावाना मह्यानिह (वाहर्षे प्रतावाह) हुन्हर्षे कही विक्या प्रवाहित क्ष्ये प्रतावाह कि विक्या प्रवाहित कर्षे विक्या प्रवाह कर्षे विक्या क्ष्या क्

293

क्षायमान्नान्नान्ना निर्मित्र प्रावेश्वित्र क्षायमानिक क्ष्मानिक क्षेत्र प्रावेश क्षायमान्। अने प्रावेश निर्मित क्षायमान्। अने क्षायमान्। अने क्षायमान्। अने क्षायमान् क्षायमान्। अने क्षायमान् क्षायमान्त्र क्षायमान्य क्षायमान्त्र क्षायमान्य क्षायमान्त्र क्षायमान्य क्षायमान्त्र क्षायमान्य क्षायमान्त्र कष

म्याने रेट्डान्ट किंग्रेड केंग्रेड किंग्रेड केंग्रेड किंग्रेड किं

माकानभ्रमनामाः १३०। ऋषिकम्मोमः यत्विमिविस् याचेकाः १३०। भणामिकक्रम्भोः भकराख्यायाः ऋणानाक्ष्मित्र १५ । (तादिकोः स्थानाक्ष्मभार्त्र नभान्त्र नभान्त्र नभान्त्र ।

अअन्भिक्त भ्रामाण्युनेष्मण्यम्भिक्तनभ्रामाण्युक्षानत्वस्यानिकास्त्रिनास्यभीत्रभूत्रमेन्त्वात्यस्य । द्वित्रीमकार्गस्य मर्थानात्रभिक्तात्रभागः ।

अर्कितिक्वितालाति वार्ण कर्व वाक्नी: १११ क्टिएनि मिति किट्ठा वाल्या वाल्या विक्र किट्ठा विक्र किट्ठा वाल्या विक्र किट्ठा विट्ठा विक्र किट्ठा विट्ठा किट्ठा किट्ठा विक्र किट्ठा किट

भ्राम्यः प्राम्यिदेवप्रद्वारिकानिक्यस्थान्थाः । प्रश्रास्थक्तिन्धान्यम् वन्नारक्षित्वारम्भानकर्णाक्ष्मः वाह्मविवद्यन्यः । प्रश्रास्थक्ष्मः । प्रश्राम्य व प्रमान्य व

स्वार्थिक में स्वार्थिक में स्वार्थिक स्वार्थ

विभूक्षिकित्रम्याः अनिक्षम्याः (वार्षनेण क्यायोव मभाने क्यार्पने वप्यापना भगनिक्ताम्य कार्यान्य वार्यम्य विभूक्षः विभिन्य विभूक्षः विभिन्य वि

धुक्राभीतामरात्रात्रण्याम् विक्रियुव्यामित्र व्यामक्ष्रिम् विक्रियाम् विक्रियाम् विक्रियाम् विक्रियाम् विक्रिय इत्याक्षः मित्र क्ष्राञ्चार् वर्षः पृथ्वेष्ट्रामित्रिक्यम् वर्षः भावतार् निक्षः सार्वार्विक्षः विक्रियाम् वर्षाक्षिम् वर्षाक्षिम् वर्षाक्ष्रिक्षः वर्षाक्षेत्रः वर्षाक्ष्रिक्षः वर्षाक्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षाक्षेत्रः वर्षाक्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत वात्यार्मिवार्मित्र मिन्निका विकार्क कामानीन भव्याविक्षित ।।।।। भक्य विकार क्षेत्र विवाद के विवाद के विवाद के विकार के व भेतिव भेतिकि लिंग्ने संहित्ता म्य अरता जिला नर्या । १ जिल्लामा जान भेतिक ने में में म्यान में स्वास भीतिक स्वास स् यनाचितिर्मेश निर्दि श्रह्माक्यका निर्म कुर निर्माणियां विनिन्त्रतिवनी द्रिक्षे न्याने के विकित्वित्वस्य स्मार्ट्यात्र नेल्लोक्वि भामविकानावक्र निर्माश्चाक्यकनाक्र (बोर् भीर् प्रविक्रीम्छा गेक्जमश्त्रारोहनेगक (क्रवारेम्राम विश्विक भार्का मे: १३) व 290 एउवाह वामिन्यानिक में प्रकृती के प्रवासिक विक्रिया में कि विक्रिया में कि विक्रिया के प्रवासिक विक्रिया के विक्रिय के विक्र अर्ह प्रायम् त्या विर्वे त्र्वं वृच्छमः क्षेष्ठ (त्रवाः । र निक्ताय म्थानकामः नात्रार्थे नात्रार्थे नत्नायन क्षा वात्र व्यान्य वितः ।

मिन्न म्याक वितास मिन्न प्रकार में प्राप्त के प्राप्त

वाहित्याम्यिशमनिकः १४शिविष्टिनविक्राह्मणे । अने तमार्मने ने न्यमातमा विष्टिन । भ । प्रक्षिकामोदे निक्रिक विष्टिन । भ । प्रक्रिक ने निक्र का स्था विष्टिन । भ । प्रक्रिक ने निक्र का स्था विष्टिन । भ । प्रक्रिक ने निक्र का स्था विष्टिन । भ । प्रक्रिक ने निक्र का स्था विष्टिन । भ । प्रक्रिक ने निक्र का स्था विष्टिन । भ । प्रक्रिक ने निक्र का स्था विष्टिन । भ । प्रक्रिक ने निक्र का स्था विष्टिन । भ । प्रक्रिक ने निक्र का स्था विष्टिन । भ । प्रक्रिक ने निक्र का स्था विष्टिन । भ । प्रक्रिक ने निक्र का स्था विष्टिन । भ । प्रक्रिक ने निक्र का स्था विष्टिन । भ । प्रक्रिक ने निक्र का स्था विष्टिन । भ । प्रक्रिक ने निक्र का स्था विष्टिन । भ । प्रक्रिक ने निक्र का स्था विष्टिन । भ । प्रक्रिक ने निक्र का स्था विष्टिन । भ । प्रक्रिक ने निक्र का स्था विष्टिन । भ । प्रक्रिक ने निक्र का स्था विष्टिन । भ । प्रक्रिक निक्र का स्था विष्टिन । प्रक्र का स्था विष्टिन । प्रक्रिक निक्र का स्था विष्टिन । प्रक्रिक निक्र का स्था विष्टिन । प्रक्र का स्था

मर्सिकामिभिक्षा एकाउत्नारेमः १३ विक्रभानानि श्रवाकानामिनिद्दाके कछानाः कारायाद्र भेकिना त्र्यूरेक श्रानानि प्रक्रिनिर्म सोवाके १९ व्या स्थान विक्र

ममञ्जितिका भूकन्यवार्गरेकित्रकार्वितिका विश्वामाध्यक्षानामन् विवेदिकार गुंठ (रिविनियम्ब्यम्भेमाल महास्वाभानरः मनरूभे विदे । तिमा विश्वामाध्यक्षारं भेरे विभा विश्वामाध्यक्षित्र । तिमा विश्वामाध्यक्ष । तिमा विश्वामाध्यक्ष

विभित्रस्त्र भगतीर्वाक्ष्मकाक्ष्मकाक्ष्मक । (भारती स्वतिक्षमका विभाग । विभाव स्वतिक्ष्मक । विभाव स्वतिक्षक । विभाव स्वतिक्ष्मक । विभाव स्वतिक्षक । विभाव स्वतिक । विभाव स्वतिक्षक । विभाव स्वतिक्षक । विभाव स्वतिक स्वतिक स्वतिक्षक । विभाव स्वतिक । विभाव स्वतिक्षक । विभाव स्वतिक्षक । विभाव स्वतिक स्वतिक स्वतिक

293

श्चन्त्रभामत्यामाश्चाश्च व्यवाः मञ्चवा तारुर्वने श्वम् १ ११ मृत्या विश्वास्त्र क्षेत्र क्षेत्

॥ १ जम्छामान भक्त भीवित्वि १)) १ नावाम गेर नी ठम्बर मण्डा १ मारिया मारिका मारिया विभागी निश्च मारिया । भी क्षेत्र भी कि मारिया । भी क्षेत्र के प्रति । भी के प्रत (मयमिल्यः। विकास अवक्या इस्मिनिन हक्या । विकास विकास विकास विकास विकास क्या विकास क्या विकास क्या कि निवास । विकास कि निवास कि नि विमानितंत्रगोलीक्षेत्रव्यनित्रिक्यान् प्यार्थनातायातीत्त्रवर्णन्यक्षित्र मात्रवेद्वादिव्यन्ते मुम्भारक्ष्वत्रविद्वाद्विव्यक्ष्य स्वेवः नमामनेन् विकारनवना निकः । अनका अमा अमा अनि मार् ने (वाक्ष्वेः - । भेवनी मेरिकी रामी रामी अने मार् निः - क्ष्व डेबाम्यानियामन्डने किलेवने मर्वाने (रुवन अधि मान । वित्विष् शिक्षान मण्डारे स्वयम प्रमानि क्या । स्वा कातारिकक्षेजीव: म्बातामक लक्ष्याने आयोगिकाव: न ञ्भाषात्वावीकत्वास्थवार् स्वन्मात्येयाचित्ववेश्वर्भत्यगृहण्नांनावा विनीनित्येवानेनेत्वेकिवार प्राष्ट्रीत्याकामपूर्व किथि गुर्क्यूनागीन् विभवाकिमानान् किलेकावा विवास विवास विवास जमाइ मार्न नात्वाम पास्कृत नम्बाद में काक्षाति मित्रिकालव दिव एन (मारमाद क्या मार्क र्वाभ द्वित क्रिक्त के म् राम्याव द्विमानी नारका (वाय नक्ष्णानिय क्रिया अला श्वानक न्यम छि । विश्व विश

मन्त्रा (भरूठकारेकार्अर्गिक १२४ १५ ग्रेश्वर्गिक्जनीयाय(स्थननम्बद्धिक्यार्थय(वक्तरंविज्ञ ग्रेश्वर्गिक्यरंगिक्य स्थनार्थ)(स्वर्ण्य विक्रियरं स्थनार्थ) स्थलिक स्थलिक

भारत भिन्निय भारत विश्व विश्व

अमिनिं पित्रभेशियांति ११० १तिहादनः विभेष्ठकाक्ष्मप्र यास्यकेत्वाकः गरिकेयकामा(यिक्रियेवान वर्षः १०० क्विस्तिहातं वर्षे १०० क्विस्तिहातं

शामन् भैन्येक्ष्याया विश्व विश अतीनीः विश्वीयामियानि स्थाविकात् श्वमाययामर्वस्थिमितिराष्ट्राम्यानिकः श्रहाययाद्यानिक नामिक स्थाविक ना व्यव्यापेनानिविष्ठायगे। अन्यम्पिरित्यापेन कर्मन्राम् भारिमास्विरियः स्वात्यश्वित् । डेन्मेज्ञि निम्ज्ञा विश्वमका कृषि तार्खाव रहा (त्वम्य मिभण्तका स्तारतारम किल्लियः ग्रामा पित्यवर्गीतिमत्नीष्टाक्षाचीवयकः साम्याविक्षालभेवमा योनिध्यमीर्यक प्रिकेश्यक्षियार्यार्ये विष्यम् अस्व एक एक एक मार्थियम् विष्याम् मन्याननार्येयाः प्रस्तियोनाध्यापी श्वामानानव्यक्षेत्रीर्यवर्शन्ववारकारे विद्यम्याउ एउन्नेम्यना उन्म्यना उन्म्यना क्षेत्रके (मर्क्कामाने क्रिक्वामाना स्वा

श्चिम्बर्गाक्षं नकावास्वयव्य काथन्य भः १२१र्गात्मव विद्वविध्यमिकभण्याक्रिण्ड । मिन्छिक्ने भन्न्यमिक्रमान्य क्रमण्याम् विमान्य भागेन्य विक्रमण्या शिविक्रिक्ति म्हार्थिया । प्रतिक्रिक्ष प्रतिक्षित्र विक्रिक्ष विक (क्र भाषिज्याक्रमा भगवश्यिक्जाय्तम् मायानि विजात्काः लिकिन्नार्थभवद्याचे माकिने: नेरालनाकार्य इतीय ग्रावाकावमें ग्रायक्या के निम्म न्यानिः व्यामितिक्योः गीनकर्गग्र(नार्शर्भनी: कार्गना(रमस्त्री: ग्रामार्किंगक्रिश्रेभूता. वक्त्रीं प्रत्ने नामाञ्चली म्मानक विश्वनक्ष्णियार्गेनीनव म्थां भी मृत्र में (विश्व ने क्षान्य क्षान्य क्षान्य मान्य मान् मान्यवाणिकित्रक्रित्यः।विष्णिष्ट विवणोयन नार्ययुक्तिनः क्याः ममानी खिन कत्री नायाः नार्वीयमाना कर्यानी हत्यावा मिनाण्यानाभावीताव्याः भाकिनेत्वर्वित्वित् वृनितिवित् विक्षान्याः अमञ्चाकारम्य अभावान्यकार्याः विनित्यास्त्रास्त्र भाकिनेत्वर्वा भनित्र विक्षास्त्र भनित्र भनित्र विक्षास्त्र भनित्र विक्षास्त्र भनित्र भनित्र विक्षास्त्र भनित्र भनित्य भनित्र भनित्र भनित्र भनित्र भनित्र भन भराय्वालिम्मेभकत्स् विशक्षित्राम्याराक्ष्माया । स्वार्थिक (भक्ष्मान् गोल्मोनोम् साम्य्य महम्मयारावित्नात्माक्ष्मवाद्धाद्धान्त्रीक्षम् विर्विकाणीया गोत्मित्तार्वक्षमाना ।

विद्रिनार्श्वयार्थे। स्वान्य विवेदाः विश्वानिकाः विश्

यभेन १अन्माभम्हरूक्तान्तिकार्यमकः। १तिनानिग्यक्तिका विचितः मन्दीयम् १ विकेय्र तामवीत्रमा १ हर्यात क्रमातः नातिका भेतिकत्मातः नाति विवास

प्रीत्रः त्रिनास्त्रपुत्र चंभतिवक्तियः १४ व्हिक्तिकि विश्वार्थमत् विश्वार्थमिकि विश्वार्थमिकि विश्वार्थम् विश्वाप्य १९ विभोक्ष्यक्ति । विश्वार्थमान्त्रिके विश्वार्थमान्त्रिके विश्वार्थमान्त्रिके विश्वार्थमान्त्रिके विश्वार्थम किष्मामनर विकास । । भारताम (वाका केक्कमना कर्ति काला निवास करा देशक अवा निवास काला वा निवास काला विकास करा वायनी स्वीरिक्न श्रामिक विवास का निवास मकारायम्भागं तर्रे कृष्येत्य पश्चामवाग्राप्त्रायासाग्रानाः भित्रकाउ°र्शिकणारीक्षित्रेष्ट्रवार्थामीनिना ्राथनभः -जालाविमानायम्भाकर्षेत्रधेनानुगा । रूखः भविकन्यास्य गवाक्तरहोन्द्रजः 25-7 गुरुस्य के कि विश्विभाषात्रिका निक्रियर गडकीयामानिकित्रच बाखामी न्यंब मानिना বিষশ্বারাহন সাঞ্চিষ্ণ মঞ্জাবিধ মঞ্জাবিধি শ্ र्भे नन्त्रणेएयिन स्वर्धार्यन स्वर्धन कराने से निर्देशिया है। प्रत्याविद्या निर्देशिया विश्व विश्व विश्व क्षिया क्षिया विश्व क्षिया क्ष्य क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्ष्य क्षिया क्ष्य क्य क्ष्य क्य क्ष्य क्य श्चाममक्रोणिकित्रार्थिकार्थिक वित्र मुक्ते श्चायित्व वित्र मुक्ते श्चायित्व वित्र वित्र श्चायित्व वित्र वित्र श्चायित्व वित्र वित

पूर्णिक्ष अस्मार्बामानी में: ११११६/१०१६ दिविभिष्यानेयलहने भारत अस्वित्तार्थायः मानेयस्वित्यान्य । भारतिक विकास क्रिंगीवार् श्रम् वावर श्रमाः प्रोवनः मन्द्रताहान वित्य निजमित्र क्रिंगिरिक्याम् कार्यक्रिक्ष क्रिंगीरिक्षा वित्य क्रिंगीरिक्ष क्रिंगीरिक्र क्रिंगीरिक्ष क्रिंगीरिक्ष क्रिंगीरिक्ष क्रिंगीरिक्ष क्रिंगीरिक् वीवीनी छित्रे छित किर्म । किर्मन नारिमानी रे आयुरकाकारि अंत परेलां तियां क्रमी निर्मातिक निर्मा निष्ठिक तिः । एगोर्भव्याः महिनियम् विल्के माजिवास्विः व अभावसाम् भा मण्ये स्थाप्रयान भाषीनः गुन्नस्व भेलायेणीनान् राक्यस्थ्याराहितः पृक्यादे 322 श्लोगात्रीन नेथा इः नेश्लीगोजाः पृथ्वान्तानामय त्यस्यमग्रमान्यानिताः पृथ्यक्मनन्यात्मभण्याद्यानित्रार्थं भः प्रकित्याय वावाममार्वित्रभामामारा । काकिन्याव्यावामम्भात्रमात्रम्याविताः पित्रकार्यमार्थः भागितिकाय्काम्स्यानाः प्रिन्विति वैद्धानिक्षकका श्रीस्क भवः भीव ।) व्यामी विद्वितिनिमित्वाद्व १२ कमार् विद्विति वित्विति विश्विति विद्विति विद्व लियां । ज्यान अने अविकास भीवकास अविकास अविकास मिल्यां प्रति । ११ १ प्रवे द्वा उपनिष्य अविकास अविकास

हमार्थ म्वर्शान्य अवस्थित स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्य

(अनिरमालकां क्रमणा निर्मा का अपनिरंज निरंभ के देवि आमिताक न्य गर्म कि मान के कि निरंभ के कि निरंभ के कि कि कि

- शाक्यका गमाक्ष्रभात्वद गरिक्ष्यका श्रुश्मेना म्याक्ष्यकः श्रितिकावा (नविविधिक्षेतिक । नानाविधिश्वत्न (सश्रुकाविमः १० १ मन्याक्षेत्रक । नानाविधिश्वत्न (सश्रुकाविमः १० १ मन्याक्षेत्रक । नानाविधिश्वत् । स्विधिका भारत्यक्षेत्रक । स्विधिका भारत्यक्षेत्रक । स्विधिका भारत्यक्षेत्रक । स्विधिका भारत्यक्षेत्रक । स्विधिका स्विधिका स्विधिका स्विधिका । स्विधिका स्व

सिमातिक्य हो वाक्ष भी सर्थ मार्थ विषय विषय क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रय

क्षार्विक्ष्याकार्वे भव्यानिमेनवार्यमा तेक भवरेतियया १८ व्याम व्यानिका स्वान्त्रा । १० विवार्यक मेर्याका व्यव्यक्ष विवार्यक विवारक विवा विद्यानिका कर्ते ममास्थिता हु श्रिताश्चारमकः नेया ब्रुवाममन्त्रीना कृताः विकित्रास्त्र क्या व्यव्योजनवन्त्र क्रिक्निमार्थिका व्य क्रून निज्यक्षमानवं के मं क्षितामावर् रामाक मन्त्रावा भरायकाः । भाग्यक निज्यक मन्त्राचे अर्थित व सम्विक शितारीर्म् क्षान् कानान्यस्थागिकातः त्रवः नेतिस्थानेः भण्डिये भिर्मः । प्रभेष्ट्राष्ट्रमेण्यी विस्त्रेत्री यवं गामिकः स्थेन्य्यं कन वन्धिनो (नावह क्ष्यं म्या स्वास्थाः प्र श्रुति विकित्रभेश श्रुम् विभिन्ना विवादि हिन्न भ्याववाः विकि वेखप्रभेषालीत्रीः रभाः रभेषात्रेवात्रेताः । यालमा विविन्हाता मिर्गिक्षर्भिवः । विधर्मिर्भिवं रमात्रक्षां निर्म , उ गोज्यम नेतिश्रक न्यावत्काक्य म् व्याव ग्रहर्मेशः क्ष्य क्षेत्र मत्त्रिम् मत्त्र मान्यमामाने कर्गवावीता व्यावादित यात्रिवामि १३४ १विम्यार्गविवाम् आक्ष्रक्रक्लोन्थाय हन्त्राम्भिवानिकः १०० १महत्वयात्रवाम् भागायाय् विविचात्राम् १२०१३ १वे स्विचानका नेवस्य मनेवस्य सेवय विविधानिकः १३० मन्द्रविविधानिकः १०० १विष्याम् १३४ १विष्यानिका ।

रामकाकिङ्गाहितका भार्त क्षिति । विक्रिक्ष विक्रिक्

308

मनान्यस्व लिख्यल्य्यः मर्गमायस्वलास्य अप्ति स्विमेन्यानिक १३ विकालियः व्याल्यानमा स्विः बतिः वर्षिः १२ १वानस्लास् भीः नवालि हुँ में त्यमीका ना अविकालियः ने गृत्य के अस्य क्षेत्र अस्य

व्यवार्यमिवनाष्ट्रवामेजाच्यामेर्गान्तरीन १८श्वात्र्यायां मञ्ज्यायोगोक्तित त्यामित्राभिष्ठश्विक्तित विक्रोतिकार्यामित्र विक्रोतिकार्य विक्रोतिकार्य विक्रोतिकार्य विक्रोतिकार्य विक्रोतिकार्य विक्राप्त विक्रोतिकार्य विक्रोतिकार्य विक्रोतिकार्य विक्रोतिकार्य विक्रोतिकार्य विक्रोतिकार विक्रोतिकार विक्रोतिकार्य विक्रोतिकार्य विक्रोतिकार विक्राप्त विक्रोतिकार्य विक्रोतिकार्य विक्रोतिकार विक्रोतिकार विक्राप्त विक्रोतिकार्य विक्राप्त विक्रोतिकार विक्राप्य विक्राप्त विक्र विभिक्षितिक विक्ति विक् (क्रीसाप्तानिक्रीकार्यक्रीकार्यः महित्याव्याव्याव्याव्याव्या वानामजानवी॰ ग्राङमर्मिनियाचीन्याचीर्याचीन्याचीर्याचीन्याचीर् अलाकस्यक्तिमीन्यस्याण्याचिलावतः विक्रमीर्जनण्यी विक्तर्वितित्वतारे प्राम विक्षमिना मुक्षिनी मामिलाय त गृहिकानिविद्यार्गिम्हिरास्त्रिक्षात्रक्ष्यात्रकामाग्यामान्यामानामान्यक्रस्यक्री । ग्रह्मानस्थामार्थ्यदेव वान्ने: क्वामान्यामिन्यालेनाज्यं मध्ना व्यवस्थानां व्यवस्थाने विश्वस्थानिक विश्वस्यानिक विश्वस्थानिक विश्वस्य ्र कुर्वष्ठवात । वक्षेत्राक्तात्मेभानाभग्नानभक्तां भण्यार्ट्चभावत्यानीरननकीवयह्त्वि । यविवर्तावनव्यानिकीवार्यकात्मभ मृत्ररहित क्रव्यवस्थाने । आस्मिश्रयम् भार्थित्वयाने यानिक

्रीमः भर्यात्वर विकाश स्व स्वीत्वर्थः । भ्राष्ट्रात्यः असर्वनाम् जिल्यात्वर स्वानिक अस्व विकाश कार्याक कार्याव कार्याक कार्याव कार्याक कार्याव कार्याव कार्याव कार्याव कार्याव कार्याव कार्याव कार्या (मार्श्यक्रीन्यम्विवामाव्यक्क्रश्ववानेक्टः वर्गम्क्रीशक्करम्यक्वामीवर्गन्यनाग्रि विक्र्यक्षमाक्रिकेश्यामितमवमाद्वर क्लानिव्यमान्द्रामकानीक्नेज्यामर । (मिख्कानिक द्वामानक्नेनन्यमरावनः कालि दिने का मार्क निक्रामें में हो कि जन्महानीन जिस्किना विद्यादिन इने निया को दिनी चिति श्वितंत्रनेष्ठ तियुरुप्तिः न्येश्योकातिगेनानाम्योक्यमा यूर्वनिक्रिय पिनार्गरहोट्ड्यम्पिन्वन्मानाविष्ट् स्वित्रात्री (मयवाम्मीनीलवमानणोक्डक्क व्यक्त्रमानाम्बर्ग क्राय मरुतम्बन १इविमीयोगावम (वर्ष क्यिममामिक ग्रमानक वक्षानेक किल्यामें क्रिया में व्यान मिला के निर्देश के निर्म के निर्देश के यामलाभावः न्यामितः निष्ठिले वालिः यार्ववेवायार्विः। हो क्या कर्णान्य का निवाजायार्वनभोज्यान्ववाजिनित्र में इंड १० १वानीमिं लिख् रूआ निक्तां वानी वाल अप्यात्व का मार्थिया र म्लेखावश्रू १९ १ गेकड: क्यिलावें का या अस्ति। वान का निवास के निवास का मार्थिया र म्लेखावश्रू १९ १ गेकड क्या विकास के वित्र के विकास के विकास

विक्रमका । अक्षाताम्नीविनिकाम्म निम्म । अन्तिव विक्रित्र किनिक्रिके विक्रिया अन्य मानिकारिक । अन्य विक्रिके विक मांक प्रावालीकमः पवितालकं अपितिनमार्द्यभीष्ट्रगी क्रियाकिमार्ग मिलायाकिक अमारका निवालियाति वितालिय (म्यम्या प्रकालक्यायज्ञन(वेद्रय एवायानायं भाईमे । त्रणे मध्यर्थारभाविष्वणिकाम्मर । भवेशकिर्विर भागी 340 क्ला मार्य्यी किं । किंचार पिबार में निर्मा में भेजात्मक्रिक्शिक्षिक्षिक्ष स्मिनिकाञ्चानमानन्य -ग । यांजामार्थं रक्तायो वात्मी स्मान्य मना व्याप्य मना या मक्ता वात्य विक्रा मन्यो अमीति वात्राजामा मर्गे ग्राम (अ) निक्यः प्याताननीट्याक्तमात्रकरूम किर्वे एविर माभक मन्द्र श्रक्त छि। तः ग्रापक के विख्या कर्य विक्र वाता ने नी मैनीम्यकार्यमसिंह (योगः प्याद्वास्वरूक्त मार्गभातीन थालिलाक्त्रम् मान्यकर्यकार्यमान मिलर्थः स्थालियम् मेर्थालियम् मेर्थालियार्थिक रूपमारू मार्थकान रेकि । अर्थिनियक अभिविक्षित्र राम् नार्षित्र में कार्य नार्य नार्य के विक्षा कार्य कार्य

बानितर्गः १४८१को जिन स्विति । अध्येष्ठ । अध्येष्ठ

क्यान्य स्वानिक क्षिण्य क्ष्य क्ष्य

अतित्विधिवाः क्षाननः १११ किए मित्रिकाक्षेत्रोतिन्यास्थे भठ पक्ष्यानम्बद्धाने दिन्ये वक्षणियानम्बद्धाने क्षानिक क्षानि

मार्धभवानमार्थनाः प्राणीश्वार्धानद्गणीत्थेमं मना मार्थिन स्थानमार्थने प्राणीश्वार्थने प्राणीश

वरत्य मरोडिय विना (वराव ने पृत्र प्रिविष्टिक मानवन को सम्प्राना हिन्दा भाषा कि विकासिक स्थानिक के प्रमुक्ति के प्रतिक के विकासिक के विकासिक स्थानिक स

अकरना का भाग १०० । प्रत्योह के वार्य स्ता १०० । देशा अस्वाम विवानिक अस्वि। ना ११ वर्ग का कि वर्ष ना ने वर्ष विवास के वर्ष अस्याम क्षक्त्रीत्र्वः व्याप्ताश्वाक्षाक्ष्यक्षक्षक्षक्षक्षक्ष्यक्षक्ष्यक्षक्ष्यक्षक्ष्यक्षक्ष्यक्षक्ष्यक्षक्ष्यक्षक्ष नेक्वित्वमन् व्याहरूलिकन्त्रेकामिकः मननेक्वितः पर्नेकः मननोपूर्वनाय्नाति त्रिवाक्वित्रिक्षान्यमान्ति । हिम्बार । ग्रेनिक् सिन्दाना मानी क्र म्यविन नियं नि रविविम्कांकि किस्तिर् प्रिक्षमातावर्गवान् कार्नेः स्थ व्यावित्रव प्रभेषदे जिली में गार्थिय प्रभाव व्यापित में गर्का कि विम्बरः गुर्भाश्म गुर्द्यक्षेत्राही गृह्यास्न भ्याव्याक्रिक्ताक्ष्म मिन्सियः पश्चयश्च अप्रियं है विश्वास्त्री का विश्वस्त्री का विश्व मामद्र प्रनार्गर्गर्भी किमे प्रविभेड कि रित्रि विश्व विश्व किया । निर्द्र प्रमार्गि कि कि म्या निर्द्र प्रमेश कि मनिर्द्रिक म् -अल्लानमन्द्रमन् मिनिकरत्म देशावामा काम्यानक वरम् मेरम् मेरिक वनतान विद्याहर्णम् । विनय प्रवा विनेनन स्वित्र कार्य गर्भिक्ष क्षिणा स्वित्र महन्या था -थानिकायार्जगेवान् अनास्नार्नेक्कण्या अस्वनार्जभारिकार् वितिषातकं भावमा प्रगितिसैभागितिके माथरात नाम् किन्मन् प्र

प्रकृष्णियाम् विकात्वनकश्यात्वनका विक्रिक्षां किन् भगवं म्थ्रकृष्णीका विकार्य स्तः स्वः विकार्य विकार्य विकार्य व्किमेरावाद्यन १ पराम्यकित्वविक्वत्यान्यभिक्तः १०१मविक्यामामनीनयान्यमान्यनाम्यः। १ श्रामवाद्यानम्यान्यमा

न्वयामक्ष्विश्रीक्षानिकन्त्राक्ता । लिनार्नर्ममन्त्र

भवःकानिक्रभाक्षमियाजगीमदेविन् वृक्ष्याक्ष्यविद्रक्षभाविक्षिवियामणिकामाभवर्गः। १विविविष्ठितक् नुःश्वर्म्यमामाभव्यमामाभविष्

24-0

প্রাণাই জ্বিমাণীর প্রদ"মতা প্রাণামামাদি ভিসামিতা: শৃত্ব ক্ষেত্র প্রান্ধেনার সোদিতা অভানত সহিত্য ক্ষেত্র ইত্র প্রাণ্ডির ক্রিক্তর ক্ষান্ত ক্রিক্তর ক্রেক্তর ক্রিক্তর ক্রেক্তর ক্রিক্তর ক্রেক্তর ক্রিক্তর ক্রিক্তর ক্রেক্তর ক্রিক্তর ক্

भत्मात्मवाल्ल-१११र्द्रीक्रण्लोक्ष्मव्याक्ष्ममञ्जाक्ष्मनाः १२१नानार्रताक्ष्मिनाम्बर्द्रम् । मध्यक्षमभ्यक्षिनेभमकीकिन्भाग्रोगव्यक्षाम्बः १२१ म्ह्राक्षान् ग्रेन्। १२ मह्याक्ष्मे अव्यविव्यक्षित्र । स्थाक्ष्मे विव्यक्ष्मे विव्यक्षित्र । स्थाक्ष्मे विव्यक्षित्र । स्थाक्षेत्र । स्थाक्षेत्र । स्थाक्षेत्र विव्यक्षित्र । स्थाक्षेत्र । स्थाक्षेत्र विव्यक्षित्र । स्थाक्षेत्र । स्थाने स्थाक्षेत्र । स्थाक्षेत्र

त्रणाः श्वताविभेन् १ प्रवाक्षकां एतिः मीकट्कयावाणाविण्यः विवाक्षकां कार्याण्यकां विवाक्षकां विवाक्

·66

(नरान्धिमान्द्रिक्षात्वार्याक्ष्यमात् विकार्यान्यक्षेत्रमान्द्रक्ष्यान्त्रमान्द्रक्ष्यान्त्रमान्द्रक्ष्यान्त्र देशान्त्रमान्यक्षात्वाद्वाद्विक्षित्राच्याक्ष्यक्षेत्रमान्द्रक्ष्यान्त्रमान्द्रक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष

विनिविष्ण्यम् मध्ये मध्ये प्रमास्त्र विवाद विभिन्न क्षित्र क्षित्र क्ष्मित्र क्ष्मित्

श्विमिष्मालीमः भव्यामवरेन्वा १००१०३ भ्यामाय्तामेन्वाममम् विवादनायः (हारोक्षवेशिक्षिमान (नकारोवः नार्थिको किर्म

यहित्रिः विश्व मिन्निः विश्व

393

विश्वेष्ट्रम्थ्यम् अयमिनित्राथन १०० १ (वर्षमान अयमण्यूनण्डमाण्डे निन्हे १०४ १७वर्षमाण्यभान्माम्या निस्य छि: (होन्ये - १०० १ साध्यमाणायाभाष्य १००

म्यानाभित विक्रास्ति विक्रास्थ्य विक्रित विक्रिक्त प्रत्य प्रत्य प्रत्य विक्रिक्त विक्रिक्त विक्रित व

हिमान्सारमित्रं क्रक्तारं निवं क्षि प्रार्थित विवे क्षिण्य क्षिण क्षिण्य क्षिण्य क्षिण्य क्षिण क्षिण क्षिण्य क्षिण क्षिण क्षण क्षिण क्या क्षिण क्षण क्षिण क्षिण क्षण क्षिण क्षिण क्षिण क्षण क्षिण क्षण क्षण क्षण क्

्ने अन्येय नण्डः ता अल्डं (या भ्य

जारतिकामिकः श्रव्यीमम् किन्मिनिकालः प्रतः व्यानिक क्ष्याय्या स्तिम् विक्ष्यातिक विद्यातिक विद्याप्ति क्ष्यातिक विद्याप्ति विद्याप्ति क्ष्यातिक विद्याप्ति विद्याप्ति विद्याप्ति विद्याप्ति विद्याप्ति विद्याप्ति विद्यापति विद्यापति

उक्र

नीनमतिः क्रमानिशिक्षाने क्रिक्ष कर्मान प्रमानिक प्रमानक विकेश विकास क्रिक्ष विकास क्रिक्ष विकास क्रिक्ष कर्मानिक क्रिक्ष क्

मृशं दिन्दि। मक्तानं मक्तानं मक्तान् मक्तानं मक्तानं मक्तानं मक्तानं मक्तानं कितानं कितानं कितानं कितानं कितानं र्वमम् श्रिवाना भाषम् वाया अवविति वित क्षेत्र का वित्र श्रिक वित्र विक्रीमकार्गवस्त्रवार्ग्न कि किन्त्रम्यानिक्या - न्त्रवर्ष्टिक्ठ किन्त्रक्रिया किर्मान्य किरम्य किर्मान्य किर्मान्य किर्मान्य किर्मान्य किरमान्य किरम्य किरम निर्मः सनात्रमः । कियल्यत्या मंदिन वस्या सूर्या भेज् श्रेयो क् ग्रार्थ्यक्षेत्रास्य वियनकर्षेत्राहरू ग्रेक्र श्रामा व्यानिक्ष मार्गमण् इस्माम्न किनविक्ष काण्याहित ताजाली: १मरामत्काकात्मात्मात्रभित्र भितिष्ट्रामे: । विकेशन भार्ने में हमतानीतिः सोनार्ने उधिक हिना अवतान्यामा मिकमार्गी जननी चित्र्नी ने ए में वा कि वा कि पर में पर (यन्नीयतात्काक रहात न्यूलार्गति: हा इतिल्यू मतः यहाकेः कृषिणाष्ट्रभगतानः । प्राम्भेषानेय नाताम विकानिकानाहि भैश्री भक्त भावीनः गुभित इका मिलिन मिलि प्रात्न मिलि प्रा अत्क्रीनिक्डमिलामिमसर्निङ्कारकः । क्वानादीनास्वनीमासीन ग्रिराह्मणेश्रीक्टिश्चिम् । हात्क्रक ममराम्हेन्रेमान्न व्यानेन विद्यावित्र में एन्नेमस्वी

-अस्मिन्यास्थिति । स्थिति भेरान्य प्रकृति महिन्य कि प्रकृति प्रकृति । प्रकृति भेरान्य प्रकृति । स्थिति भेरान्य प्रकृति प्रकृति । स्थिति । स्

वित्रकेः वित्रत्रभाष्ट्रवित्रिम् वित्रमास्ति वित्रिम् वित्रिवित्रिम् वित्रिवित्रिक्षे वित्रिक्षे वित्रित्रिक्षे वित्रिक्षे व

नित्तम्यानेभागाख्यक्रित्राणिनाः विद्याणित्राणिनाः विद्याणित्रवेशस्य विद्याणित्रवेशम्य विद्याणित्रवेशस्य विद्याणित्य विद्याणित्रवेशस्य विद्याणित्य विद्याणित्य विद्याणित्य विद्याणित्य विद्याणित्य विद्याणित्य विद

(भवमानम्यर्गामो क्यां क्रिया क्यां क्यां

हनाःआजन्मिन मिरण्डकेनिया १ गर्बीनाःश्रभश्रकानाः ११ गर्कानियियां एन शेरिक्यानरुख्य क्षान् । स्वानियां स्वानियां विक्रियां विक्रियं विक्रियां विक्रियं विक्रि

320

त्रवर्ष्णिमशादितम्बानिवर्म्ति क्वित्वम्यत्रभण्ये। स्मृतिवर्षितिवर्षित्रम्य कित्रक्षेत्रम्य कित्रक्षेत्रम्य

करात प्रमुक्त गोयिक प्रांति विकास प्रांति व

वन्यानिक्नी विश्वाच्यायभागितिक पूर्व प्रशासिक (इवः निक्न निर्व क्रम समित्राय भागित क्रियेश निक्र क्रियेश क्रियेश निक्र क्रियेश क्

मर्बस्य १४ म्बालाने क्रमा प्रमाण में मान कार कर्ति । वित्ति स्वत्य क्ष्या क्ष्य क्

नः हो श्रविभा भ्रम्भा भा शाक्षा से रूथे यन रूथे। १० तिरः युक्ता शाक्षा ने गिर्म विभाव के स्वर्ध निर्म ति । १ शक्ष भा स्वर्ध निर्म के स्वर्ध के स्

300

भूविद्यात्रीन स्रोतिक अविक्षात्रणाक्षानिम्यकर्थः चित्राभूकण्डेलेकार्थार्थन भूभोगी एक श्वाहीया गुरुश्वाहीया में भाग्रक्कन्ड: खग॰ भगान्य्यक्रिभानीयक्रम् निश्वमान्त्र । निर्मायक्रिक्षायिक्ष्यिक्षायिक्ष्वायाः । प्राप्येयाभागिना शोगीमान् (भेटान्माकर्य मानक्त्रम् मन्यू अस्वाधिमिकाक्तः । शोक्रिक्षाः श्वाधीणे अधिक्षां मनीक्षाः क्षाविष् (अ) नित्रगेम्क्राचेशामार्वनेनः।। भूष्यांभूष म्जाभित्रं विक्राः अतिवासिकः प्राविश्वाविक्रानाभ मक्त्रमञ्ज्ञान क्याने विकः नेत्रमान विकर्णिय जागारम्साविताजयन् । वृत्वान् मिन्द्रमं प्रचित्रं मुक्ताम्तो - इतालात्तिवावसागेणः ग्राम्वयात्रभाव्यात्रभवितावयात्राक्ष्यवात्राक्ष्यात्रम् श्रेजिवीगाश्रकातम् जानम् अवितः वन्यकार्यक्ष्यम् वर्ष्यकार्ययम् नः । ज्ञान्यमार्थाः एकिम्। भीना क्रयानि में विशा राभेकरा श्रीक निर्मान विश्व मार्थिक म कण्ड्यानगेवान् रुखः मृत्तार्क्यं तर्यं विक्ति विक्

रिक्तिशेष्टमा यः १क्षमा विकासिक अञ्चलका के १००० विकासिक प्रेश विकासिक विकासिक

प्रः शिष्यभामिन्य मे प्रभेन्य भी ने ने प्रकृति स्वार्थ । विवार माने निर्देश ने प्रमेन प्रभेन प्रभेन प्रमेन प्रमेन प्रभेन प्रमेन प्रमेन

स्त्रभ क्षाना वीर्य विकास महत्व प्रमान करार्थ मिल्या मिलिया मिलिया मिलिया मिलिया मिलिया मिलिया क्षानिय क्षानिय नक्ष महार्थ वाता ने वाता में प्रमानिक में प्रमानिक में प्रमानिक क्षानिक मिलिया मिलिया के मिलिया के मिलिया के मिलिया के प्रमानिक मिलिया के मिलिया के मिलिया के मिलिया के प्रमानिक मिलिया के मिल्या के मिलिया के मिलया के मिलिया के मिलया के मिलिया के मिलया के मि लितः लिनेनबिक्ति विश्व विक्रास्थः मञ्चार्यामानभ्यभाक्षामाण्य विश्व भितित्विक्ति विश्व विश्व विश्व विश्व मित्र - प्रमुक्त प्रमुक्ति क्रिक्त (क्षेत्र) मान्य मान्य मान्य मित्र क्षेत्र मित्र क्षेत्र मित्र क्षेत्र क्षेत्र

विश्व त्रिक्ष विश्व विष

405

न्त्रीत्र क्षा क्षेत्र क्षेत्

नार्वादि अव्ये अति विक्र विक्

प्रभायनभूखिनीकावाधिभर्त्रेणे म्ल्रेनियदि (क्राट् (यशण्ड १००) क्लिय्यम् में (यगद्य(क्राड द्व १५०० वर्गाना भन्न गर्भणी मित्रिका (तर मोह आक्रेड १४ वर्गा वर्गा

300

देखिन्था नुवाजीकित्रकारित्रक्षित्रक्षित्रकार्यक्षेत्रकार्यकार्यकार्थिक्षित्र विश्वानिक्ष्यकार्थिक विश्वानिक्षित्र विश्वानिक्ष्यकार्थिक विश्वानिक व

सन्व म् ६० मामानका नाम संद न्य जिल्लामा हतानाव कार मिले दिविकाला मानिस्मिन मामान माने हिंद भी है के दिवा में कि माने के के कि माने कि माने

काः १६११वर्गेन् स्माना विकास स्माना विकास स्माना विकास स्माना समाना स्माना स्माना स्माना स्माना स्माना स्माना समाना समान

(यमावर्गामकीकित्वामक्ष्णना॰ दारता॰ रम्यः भेषः कित्यमि क्याँखण (१ श्रवानकनानमासिनोगमक) क्रिक क्यांत्रमिया प्रवामक स्थानक विश्वाक विश्वाक । भी त्रिक क्यांत्रमे क्यांत्यमे क्यांत्रमे क्यांत्रमे क्यांत्रमे क्यांत्रमे क्यांत्रमे क्यांत

यागेण्य्भागोत्तव १३१ । प्रयाजभवितात १६० विभाभाजभन विस्तिकातम विस्तृका (नाक्ष्य क्ष्य रातासर्थ मः १८४ । क्ष्युत्तन भभवाप्भविवय व्यव विभागतम विस्तृतः

भाशास्त्रीत्रम्या प्राचनम्यान्त्रम्य विद्यानाः याने भिर्म प्राचनम्य विद्यान्तर ने युक्त स्वाद्य स्वाद

200

ं व्याक्षित्वकामा कृत्ये क्रियातः विभागा प्रविवास्त्रिकेदेक पृश्व विकायित तो भागिताक् क्रियाभावे विकायित विकाय

मेरि १४० १वस्व व्यास्व व्यास्व व्यास्व व्यास्व व्यास्व व्यास्व व्यास्व व्यास्व विक्रित क्षित्र १४० । स्वास्व व्यास्व व्यास्य व्यास्य व्यास्य व्यास्य व्यास्य व्यास्य व्यास्य व्यास्य व्यास्य व

लिया मालिया अध्यान्य म्यू भू अव : १०० विकान्या मार्गे व्हा कियो ज्ञानिक विनानिक अधिक अधिक विकास विकास

अवस्थित्वर्भक्षा क्षित्र क्ष्य क्षित्र क्ष

वतारकातान्त्रवमान्तानिकान्नन्यात्रममम्भ्रात्तात्रममम्भ्रात्तात्रममम्भ्रात्तात्रममम्भ्रात्तात्रम् । विद्यात्रम् विद्यात्रम् । वि

भामान्व । क्रोम्ब्रू के मार्थानिक का महे तिन भाभूवः अञ्चन क्षा भागान्य (वनवित्र क्षा मियान्य । भागान्य वित्र क्षा मियान्य । भागान्य वित्र क्षा मियान्य । विद्या । विद्य

कृष्टिमें आमितिकामान १६ व्रिटिक् के क्रिकेट क् यमात्मां वर्षे वास्त्र वित्रोत क्रिक्ष क्ष्मिक क्षेत्र वित्र दूर्वियम्य विकास विकास विकास विकास विकास विकास के कि व म्क्रिकार्मकनामेकालाकस्तिक्षिक म्मर्गेजवानः प्रकृता ज्यामगर्ग साखलनियेखानत्त्वाहेन्गानमेह्यामा भूकविन् अदिमे किः क्ष्य अवार्य अनेन अर्शित्कणः वृतार्क्याविकी अद्भार्य में तार्थिय के मुशानिक वित्र कर्या ये विक्रित नक्षेत्रेष्ट्रः खियः निविनी तिक्ष्य स्वत्तेनेत्रीत्वाता स्थोर् प्रवार किमला क्रिका क्रिका विक्रावरा निविता युक्तानिका भाषाञ्चन मृत्राक्तात्ममालकिन तो मक्कूछ गमकवाण यश्वभम्तर्ग १२१ तनवानी एता हमा निकाण भामति विभाग के विकाण के व

दर्भात्यिभोनाः (किन्न कर क्ष्मानो प्यविक्ति नवण्यमात एका तिनिक्ति प्राण्यका किम्यिन का विकाल कि प्राण्यका के प्राण्यका कि प्राणका कि प्राण्यका कि प्राणका कि प्राण्यका कि प्राणका कि प्राण्यका कि प्राण्यका कि प्राणका कि प्रा

गण्यनी विक्त (भवाक्या विकित्य के श्री श्री के प्रति क्षेत्र क्षेत्र के प्रति क्षेत्र के प्रति क्षेत्र के प्रति के प्रति

मुडीलर्थः १७ किम्मभूमार (मन्त्रीमन्त्रीमन्त्रम् कर्यायम् कर्यायम् कर्याव विकित्विक ने किम्मभूमार (मन्त्रीमन्त्रीमन्त्रीमन्त्रम् कर्यायम् विकित्यम् विक

ण्लामित्र अस्ति । वर्षा वर्षा । वर्षा भागीरे पूर्व जिल्ला नित्र । भागित्र अस्ति । भागित्र । भागित्र अस्ति । भागित्र । भागित्

नार्त्रन प्रार्शन्यान्त्रीमात् त्रार्थ्य वन्त्र न्या प्राप्त्र विद्या क्षेत्र विद्य क्षेत्र विद्या क्षेत्र विद्या क्षेत्र विद्या क्षेत्र विद्या क्षेत्र विद्या क्षेत्र विद्या क्षेत्र विद्य क्य

विवर्धे कि एक मान्य के प्रति । विद्युष्ट्य कि विद्युष्ट्य के विद्

-श्री दा ह मचन कि विद्या शर्म कर कि कु थे क्ये क्षेत्र के का कि क

िक्रनि किर्मेश के में में में प्रिनि दिन के किर्मा किर के किर्मा कि किर्मा किर्मा

मिनेश्वाद्यां अर्थन शामानेशनीय विद्या मिनेश का का प्रती अर्थन के स्वाद्या स्वाद्या के स्वाद्य के स्वाद्या के स्वद्या के स्वाद्या के स्वाद

नमनाहीना॰भवकाति छः अयात्मः भन्नाभ॰ल्केन अस्ट्रेन् अविल्लेन्य स्वात्माने॰ल्विक्ट १४ हमात्माय्वः विक्रां विक्रां कि स्वाति स्वात्मायः विक्रां वि

रिश्रगीतिनः प्रक्रिताम् प्रिमिश्राचात्रणीव शतन्य स्वयं अपूर्णः । वाद्य मिसिनाय मुख्य विद्यक्ति। भव विद्यान । भवति में भवति । भव

इन्हलेभ्द्रलाजावाभक्तः प्रभूत्रव्य वर्षभान-प्रभगारम्बन मकामारम्बन्धन में पृथ्व प्रभागमें प्रभूति वित्यति वित्यति वित्यति । प्रभूति वित्यति वित्यति । प्रभूति । प्रभूति वित्यति । प्रभूति वित्यति । प्रभूति वित्यति । प्रभूति वित्यति । प्रभूति । प्रभूति

THE POST OF THE STATE OF THE POST OF THE P

वैक्तानक्रिके त्यार्नित्यानितिक निर्वभतानार्थमा । १० १६ टेलेटिकिमेह्ताना सेवन्भेनाक्ष्रकर्मक्र न्ह्रवर्गण्यानित्योत्तालीक्ष्रमाः भूकं व्यक्तिना निर्वाणा विक्राणा विक भक्षिणे (भवा पृह्त्याः म्य्विम्भ्वन् हेर्माविव किर्णाः प्रतिक्षिता भिवाती रिक्षा मिवाती स्थान विवया वितिर्मात्यक्कित्व निर्मालमात्राञ्चाञ्चाकाकिकित्तात्र (ताक्किश्वार महत्तिवह ववकालेलम्योकिकालोमण्यूके वि द्रितित्यातिकितिकम्ल्याः विद्वान्य द्रायानिक्यान्य विकासिक्यानिक बीक्तेम्क्तियम् शिक्तियोः न्नेतिविश्वाण्यानिक्षात्राच्या व्याकित्या क्रियानी विद्याल वक्ष नेक्ष कराइ ताली: क्रियात्व व्यव्यव्यव्यव्यात्व मानिकाव तील तिः विविद्य मह यू नम क्रीने जर्रायाई ने १०० १में स्पर्किय क्वीरियान् की किठ के बतार्ण । भी ये मा की यमन (अन रिका किस माति: १०३ । में मैं त्यावर्रणीत्रीमानम्पूर्णलाख्यमोह्रीहर्म्यम् १००१आविखाण्ह्रीह्यस्य १०५ १मिकासमामः वनण्यप्यायकायः ममानिगानिमत्याख्याः १०० १ज्यमेरुनक्ते स्वः यस्त्रीया ्नव॰ निन्हिल शार्त्विशहे निन्ध वृत्राज अञ्चल श्रे व्याज अञ्चल अञ्चल श्रेष्ट व्याज क्षेत्र विकास विकास विकास कर

१ई (नात्माकामन्यक्ञीमञ्ज्ञावक महाभभअभयनः १६) वाहामहत्यल्ये १२१ १०० प्रत्मेत म्याकित १५ १ भणना निर्माय करो छितान मसहित्येय भी व

्नाबान्यक्षभातावरभणिः लिख्यायामाधीवाभग्रक्ष्वितिक्रक्षेत्रविष्याकाळण्यश्विते देशकाभीनां श्राद्यः भामत्याः अतिक्यायायाः भागत्य विक्यायायाः विक्यायाः विक्यायः विक्यायः विक्यायः विक्यायः विक्यायाः विक्यायः विक्यायाः विक्यायः व कामाः य्यत्यम्नाः मं ताथं मेनिकार्याः । महत्य्ववन्यामः भीज्लित्यम्वामम् । विवर्भाक्षः प्रवित्याम् भेनाम्बाक्ष अति । कांक्यमंत्रम्वत्रक्त्र्वत्यर्वक्षवनं । क्षेत्रक्षणामान्यक्ष्मंत्रभातिक्ष्णनिक्षिण । विद्वीदेश्वत्देव द्वित्र्याक्ष माञ्चिक्षामान्यतमान्यीकन्तिकवनमानयाश्रापि अनेव म्क्रिकी निक्का देव जिला मा । जिल्ला के वनाना आ र्तः । क्ष्यमन्त्रीनाक्षाम्बेखभ्वत्रभाः । न्य्रोने त्रक्ष देवबाद्विः गण्याने यूर्विभाता यूर्विः भाग्या ग्रेशिल्नेन्गी अध्यास्त्रायार्नाः गुप्योताकान्यमः ग्रामार्थात्यात्रयानेका अर्थायमे भ्यानेवार्ना दिन क्छनिविवील् वात्रम्थलः ११ ग्रिन्नाभान्यसारमामागेवल्मक्ष्म न नमस्यात्मक्षकाताकाल्ताक व्यविवार क्रिक्मण्युल (माहनीमारेकार्यक्रमण्याकितवमण्यभाक्तरेकायः "एतेनमिल्यकः (य्नाभेवमण्यनण्याम् मान्यामः विवेद्यालामक्राव्यकान्यामः "मन्द्रवाय्यन्यर्याः -मृन्धियं ग्रंमेम लोगे के ने ज्या मिल १०६१ विधेष मोओ॰कतम्परीयाद विशेषण मुभादणविधेष मोजिलभोच मानिलभोच समिन में क्या मिल में मिल मिल में मिल में मिल में मिल में मिल मिल में मिल मिल में मिल मिल में मिल में

तिन्यानी अध्याना वर्षेत्र प्रत्याना में निर्देश में प्रित्य के प्रत्य के प्

कालिमान्यान्यां के विक्र के व

ব্রপামক্রজন গেবকর্ত্রকমিতিরক্ষু শাসপুরশাসধ্বশা শিশাতবন্দি: আশিপ্রিক্ত পার্টেপনিক্তি বোমমিতির্জিনিক্জান্ত জিলাম্পরিক্তি নিক্ত পার্কিক্রিনিক্জান্ত জিলাম্পরিক্তি নিক্ত পার্কিক্রিনিক্জান্ত জিলাম্পরিক্তি নিক্ত পার্কিক্রিনিক্ত জিলাম্পরিক্তি নিক্ত নিক্তি নিক্তি নিক্তি নিক্তি নিক্তি নিক্তি নিক্ত নিক্তি নিক্ত নিক্তি নিক্ত

मः । श्यस्टेनाम १भव्ययभाताक गेनान् नाजि स्विन्न कर्ताः । जानार स्व गेयान नेत केः स्व माणिना । हि । विनेत नेत के क्षिण क्षेत्र । भ्रष्ट क्षिण क्षेत्र । भ्रष्ट क्षिण क्षेत्र क

दित्यः कार्डवीर्यो निवासिका क्षेत्र काम्य वर्षने वर्षने वर्षाता कर निवासिका कार्याका क्षेत्र के विश्व कार्याका कार्याका

-वित्तवर्किद्दिक्षणोश्रीमास्त्रवाकिन्यक्रीणाण्यामान्दिक्षाचेम् हेन्न्यक्ष्मेनः निवासक्ष्मान्यक्ष्मेत्राम् विद्यास्त्रविद्यामान्यक्षेत्रामान्यक्ष्मित्रविद्याम् विद्यास्त्रविद्याम् विद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्याम् विद्यास्त्रवि

त्राक्षित्रश्चिमात्री (मानिक् विक् भी मानिक् भी कि क्ष्या मानिक् विक क्ष्या क्

भूकिंगत्रमः प्रश्चित्वः यग्र्य्त्वा प्रश्नित्वं प्रभावतः । प्रमानित्र । प्रमानित्र

कित्रक्षयक्ष्वित्रप्रभातित्वर्गः १० गम्भवान भेवतम्बेतार्भात्मर्गामन्थित्वरम् विद्याण्यस्यानेमस्कृते । व्याप्ति विद्याण्यस्य विद्याण्यस्य । विद्याण्यस्य विद्याण्यस्य । विद्याण्यस्य विद्याण्यस्य । विद्याणस्य । विद्याणस्

व्यामत्व क्रानाम् वित्राः १अश्यक्षेत्राक त्राक्तिम् क्रविद्यायम् काल्यभयावकार्थवक्षक्रिक्ति। १४० १ व्यक्तिक्ति व्यक्तिकार्थि वित्रक्ति ।

ज्ञानस्थान्य तिन्द्रीत विद्या महत्त्र क्ष्या क्ष्य

मार्थ ११० १ वित्र में वित्

डेर्यर वो विश्व के वा विश्व के वा विश्व के विश्व

(देगाः कितानेरुव गांवकने क्रिम्भो निवाल विद्याता ता कर्णाना विविद्य विद्या क्रिक्त क्

203-

,नर्रिश्मश्चीर्भ्यत्मन्त्रेरः अवर्ष्याः गर्भम् वनीहः क्रम्यरम् ग्रोमिडियनिक्भेष्याद्मश्चीद्वे विष्याक्षिण्यक्ष विक्षानेनीविषयाच्याक्षाः विष्यत्मक्ष्यम् अस्ति । विषयाक्षित्र विक्षाम् विषयाः । विक्षानेनीविषयाच्याक्ष्यक्षाना

नतिलिजिञ्जकाना मभारमिलिभार्थन १३००(विक्रमानाथी: मश्नामित्रिश्ची १६ म्यी प्रक्रवाम प्रेस्क्री मिलिश्चित्र प्रकार मिलिशासित स्वामित्र १६ १ (विशेष त्वामित्र प्रमुख्या स्वामित्र एवं विशेष त्वामित्र प्रमुख्या स्वामित्र स्वामित्र प्रमुख्या स्वामित्र स्वामित्र स्वामित्र प्रमुख्या स्वामित्र स

में निकात्वार्यक्रियो विक्रानिक निकाति क्षिणि क्षण

(र्गम्भन्यः भर्मित्राक्यानिक नाम अभे भागिनिक भागिक किन्द्र भव्यक्त स्थापक किन्ता । भागिक किन्ता । भागिक किन्ता भागिक किन्ता भागिक किन्ता । भ

वण्वीक्रमार्वभासान्याः गुनामानायाः विश्व स्थानित्यः मुक्तवायाः गुन्ने विभिष्ठी मार्शायाम् स्थाने स्

नीवभक्तान्ताव (तर्षाक्ष्याय अनार्राताव्याम् इत्यावार्षिता विया अवस्थिति विक्रिक्ट । विवश्री प्रतास्थित अवस्थित अवस्थित । विश्वित विश्वित विश्वित विश्वित । विश्वित विश्वित विश्वित विश्वित । विश्वित विश्व विश्व विश्वित विश्वित विश्वित विश्व विश्वित विश्वित विश्व व

नन्भाकोण्हरमनीक्षणागे:प्रतिविश्वेत्रोत्राः स्थेत्र्य (मार्क्ष्णेवप्रध्याद् नक्ष्णेव्यात् प्रक्षित्र । प्रिक्षेत्रक्षेत्र । प्रक्षित्र । प्रक्षित्र

तः प्रिम्ब्यवाद्विशियामाद्विन्दिम् मिर्द्धार्थे । शाब्द्रेमार्थे म्याद्विमान्य क्रिक्षा । मानिविश्वानिव क्ष्मालिवनम् महाने क्ष्मा । क्ष्मालिवनम् महाने क्ष्यामान्द्विमान् क्ष्मालिवनम् महाने क्ष्मान्य क्ष्मा

हिवादिविधानिदेश्विकाश्चात्वक्षाञ्चन्याद्वविद्यानिक्ष्माणिञ्लात्वामानिविद्यन्त्रम्थ्यत्वक्षात्रभण्याद्वितिवात्वम् मधीनानिदेश्वर्यन्ति। ज्ञानिवासिकामाणिभर्ते मार्चनः द्वेण्ळाञ्चाः मर्वर्यनानामान्द्रश्य अन्द्यम्पित निवक्ष स्वत्यस्य एके विद्यास्य ज्ञान्त्रातिक मर्तिविद्यास्य अन्द्रश्य अन्द्रातिक । ज्ञानिक प्रमाणिकामाणिक प्रमाणिकामाणिक भिष्णाः भर्मस्थानामूल्क् स्थितिभाद्वार्भवाभयान्य विविद्यात्व स्थापिया विभाव असम्भाव विश्व विश्व

अस्वाः प्रभानवाः (अहवाः श्रमभोः १०० नो नो ने सर्वा क्रिक्ट अस्य हिन्द क्रिक्ट अस्य क्रिक्ट क्रिक्ट विक्र विक्र अस्वाः प्रभानवाः (अहवाः श्रमभोः १०० नो नो ने सर्वा क्रिक्ट अस्य क्रिक्ट (अर्थ) अस्व विक्र वि सार्वितिकात्मिन् वितिक हम्मवद्द्र प्रमायक कृति माधिक श्रेष्ठ स्था । स्थानिक माधिक स्थानिक स्यानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थ

रमः लानामशीसिंहः अङ्गीि भोक्त मञ्जानार्रे भन् १६ शिवर्क्त क्षणानार क्ष्या मन्त्र सिंह क्ष्य क्ष्या प्रकृति । १९ का वह भोन देल क्षा मान क्ष्या मान क्ष्या मन्त्र क्ष्य क्ष्या मन्त्र क्ष्या मन्त्य क्ष्या मन्त्र क्य

भ विज्ञ क मराशाम महामान वर्षिक स्व क्षा का व्या विक्ष महा विक्ष के का विकास के कि का का का कि का कि कि कि कि कि अन्वा । श्रम्भ मेंअभेभेने इन्द्र्यानर लोक्नोः । वास्मिनि दियानित इत्रान्य (भार्म्य । वर्ष्यान्य अविमानित केन्द्रोडियः ग्वीगीतियेन्द्रानीमा स्थियां स्विमम्बर 'भेराणि चित्रुक्तभेजारा छित्रिक्य श्रम्भनाविकः नाम्य नक (एर्य (रामेना क्रम्भेयस्वा ह्व (मे व्यक्षेत्रमान श्वः म्याः । (केडिटिन्नानिसंयुक्दोमानिनः।होष्यर्श्स्यरात्थाजर्क मन्याविके किन्यको हिन्यको हिन्यको हिन्यमा कित्वाविक गोत्रका अक्षेत्र म्यानिक मन्याविक मन्याविक विकास कित्र वित्र विकास कित्र कित्र विकास कित्र वित्र विकास कित्र व नामिलः । विनिन्नेला विविक्ता कि मावित्वे विविद्य ति । भिन्निता विविद्य निका । विवन्द्रव किः रोत्यार्विष्यः विक्तामानः म्थिवियः श्वः अरात्यासमान्त्र भ म्थान्येनिकात्वाक कि एक्षानिष्यः १० विदेशोक्षानिष्यः अन क्ष्यान्यानिक क्षः १० विष (स्थाः क्यो (क्या विश्व विश्व

भिनाभद् त्क्रकास्त्रिम्यक्त्राक्षः १८ (वज्र त्याक्ष्य विभयक्ष्याः त्याभयक्षिणः १८ १११ व्याभाष्य मार्थन्य विभयक्ष्य विभयक्ष व

-आर्ल स्टानआनंक्वाकिवान १११ मूबनो प्रियक्ताकि विवाल्क दिन्नानिक्छ ति. मह्मा व्यवधीयाम (सार्ययोग्क मुम्छन भूरोन-सन्द युत्त्न म् बावव्यकी यांनाट्याः १०० गोलाक् लानिक शि विक्स्कारीर्भावियाग्र्स्ए म्बा कर्ने के विका कर्मियाग्र्स्का मिना कर्मिया क वस्त्रकी नंदिक्ष प्रहुत मरा छिराताः । नार्शिक मधन म्रांनिक इने प्रधन्य स्थापः हिन्द्र । निवा निवा भरानी नाः मम्याद्यभाषियः विभक्षियविषे स्माताका (ना (अम मार्गेजा: । (म्वर्थितियस्यानितार्यानाः मरान्योः, ११ ताजश्य भारताम्य ग्रानेवारेश्ये स्व मेण्यतः निवसालिश्यं से जिन्छ भन्त्रात्री स्वी मानिस्यूर् ने ग्रेतिहान श्रास्त्र वि शा- किता मुक्ति विक्री ताता मा स्वाम निवास निवास

भीअप्रिमक्तः - विक्षिश्रम्बीवार्यार् मानकामीर् जनेक्मीणा । श्रिक्षेत्राजावर्मे म्यानावयेम्यार्विक-न्यूक्

१९१डिरिंडाकान श्रातिक्षेतिका वाव (माकिक्क विष्कृतः ११ रिटिंडिंडा वभामियाने स्ट्रियावाज शेला निवर्गन निवर्गन निवर्गन क्षित्र के प्रतिकार कि । विष्कृति । व

(म्वयान्धित्वान्य उठमत्रीन शि वृष्ट्वितिः हे म्(काम्येक म्यास्त्रे । भारत्यास्त्र भारत्या १८ विश्वास्त्र मिन्यास्त्र मिन्यास्त्र मिन्यास्त्र भारत्या । भारत्यास्त्र भारत्य स्त्र भारत्य भारत्य

(मास्टि: अक्रिश्मेटी न्यादिक्त कार्यास्त्री कार्यास्त्री

नैयाजने प्रियमण्यक्षीना मी मिलमी - । १: विस्थित महाने बाद भराष्ट्रवा प्रियम विष्णा प्रियमिक प्रियमिक

कीयस्थानम

त्भार्थीक्ष्र्याम्भानिकान्त्रतः । भूनक्रात्वः त्रत्व्यवीक्ष्य र्योपनः विभव भूनात्र प्रत्य भूनात्रिक्ष्य प्रत्य भीनानाव्याद्ध किनिवर्षे यहात्रिक्ष्य प्रत्य भीनानाव्याद्ध किनिवर्षे यहात्रिक्ष्य प्रत्य भीनानाव्याद्ध किनिवर्षे यहात्रिक्ष्य प्रत्य भीनानाव्य किनिवर्षे यहात्रिक्ष्य प्रत्य भीनाव्य क्ष्य प्रत्य भीनाव्य क्ष्य प्रत्य भीनाव्य क्ष्य प्रत्य क्ष्य क

म्भारते अञ्चानम्ब्याण प्रमानेक त्रिक किलियः १२१ कार्निक्ता कि मितिक केलिया ग्या किया मितिक भित्र कार्निक किया मानिक किया

अस्नकाकत्वाभर्मिणेव्वोष्ठण्म एतिमोवनिकाक्षा देखार् मूर्यदेव क्षेत्राह्मात्राक्षेत्रकामानित्रको निष्ठ्यातात्रात्रका विकास विकास विकास क्षेत्र व

शक्तः थेजिनिनानण्यनात्र भन्नाति विस्तिति प्रकृति । प्रिनिराक्ति । प्रिनिराक्षेत्रे । प्रिनिराक्षेत्रे । प्राप्ति । प्राप्

अन्यक्ष्मित्रा अन्यक्षिता अन्यक्ष्मित्र । भाष्यक्ष भवा अने विक्षात्माक भवा अने विक्षात्मित्र विक्षात्मित् विक्षात्मित्र विक्षात्मित्र विक्षात्मित्र विक्षात्मित्र विक्षात्मित्र विक्षात्मित्र विक्षात्मित् विक्षात्मित्र विक्षात्मित्र विक्षात्मित्र विक्षात्मित्र विक्षात्मित् विक्षात्मित्र विक्षात्मित्र विक्षात्मित्र विक्षात्मित् विक्षात्मित् विक्षात्मित् विक्षात्मित् विक्षात्मित् विक्षात्मित् विक्षात्मित् वि

वातारेपामामेन्थे शेल्य्य मिल्यामे १२ १म क्रम्याति ग्रेगाने वात्रिक मार्गाते विकासिक मार्गात्र में विकासिक मार्ग विकासिक मार्गात्र में विकासिक में विकासिक मार्गात्र में विकासिक में विकासिक मार्गात्र में विकासिक में विकासिक मार्गात्र में विकास

व्यक्तित्र भव्यः विकास विकास

মত মহোবিনা ক্লীবণচ্প্ৰতশস্ম ক্ৰেন নাম ক্ষাবাৰ নাম ক্ষাবাৰ সঙ্গি ক্ষাত্ৰ পূৰ্ব ক্ৰি ক্ষামাণ কিন্তু বা ক্ষামালি ব মত্বে কৰু পাম ক্ষান্তিত পূৰ্ব নাম ক্ৰেৰোতি ক্ষামালি ব্যাহ্ম সমান্ত নাম কৰি ক্ষামালিক ক্ষামাণ কৰি কৰা নাম কৰি ক

230

व्योगस्याद्यः अन्यक्तिवानिः अक्रिशाः श्रीत्राचि । श्रीदेश्चित्राम् । श्रीदेश्चित्रामे । श्रीदेश्चित्र । श्रीदेश्च ।

(मनिर्गः । ग्वय्कलिरकारी अस्प्राहन हम्येल । भागाम मस्य अपूर्विवाक मेल्वर । १ एक हि प्रामीक कि (का सिरित) वहम्येतान्मायण्येयेमाः । ज्ञानितत्रप्रक्रमण्योतिता शीविषप्तामानः क्रीयमाने श्वानीरः नात्वा भूक्र्यमेव तिलं गुहानान्यानीरुनैन स्थारबेई भिनीतार्नार्ज्ञः नज्ञातरीय्यव्यव्यव्यार्ग्यक्षितीयाः एर क्याच्यकार्मा श्मावीमेश्वश्मार्थार्थिः भगाभाग्गेम्यांमोकिनिर्वयनम्बनी एण्य्यमणीम्यानीनेवक्वनम्ब क्रमणान । अलानार्न गेर्य लामक विकाय रात्मा । ग्राम्म क्षेत्र रात्मा निविधिक विकास । ग्राम्म विकास विका विवासिक इसरि गेरिमान व्यवमनीका निव्यक्षामः । भेरवर्ष इसिविक ईल्के: ११६१ द्रार्थिक आणिया या व्याप्त व्याप्त व्याप्त विवासिक क्रिके क्रिके विवासिक क्रिके विवासिक क्रिके क्रिके विवासिक क्रिके क्

्रामध्यमञ्चानिकोयमकर्गान्जभेत्वर्वभानगोकण्णाः। द्व्यामग्रायलयेवः । भव्यमाध्ययम्भवत्तादः भवजातिः भेष्य्यदेवयाभि विचित्रवीतयविष्वयानि विविध्य माश्यमानकः गनिनेन्द्रभावित्रभेत्रमवित्रभेत्रमवित्रभेत्रमवित्रभावित्रभेत्रम्थान्यक्रमाताकर्त्रभावत्रभेतः पृथार्नद्रश्यक्रायमे ्रमुखिर्वाति विकालिक व्याप्ति भाष्ट्र भाषि इति । दिः भेष्य श्री देवति भिष्टः । ११ भाषः ला त्रिक हिताः नक भने। अन्यो अभिनेत: प्रतिस्त्र भेग क्या हा भी माभी अम्ब उ० प्रार्शिसाय निर्माण कार्य भी भी वित्र (मिलतार्कि तिम्यार्क्ना क्रिन पूछ्पमञ्चाय्टनः मन्भूः वांक्लीयां क्षिक्राः । व्यवः भ मेलाम (भ नया भानी मिलः भ श्री । ३८ किया निर्मित्र विश्व मानिन । न यो श्री श्री कि समाया निर्मा किया निर थैना॰बन्धिमां इक्रेन्अमस्त्रतिवन्भिवाद्दजा नक्षमावनेष्ठ कर्येद्धमः चीक्ष्यकः । १४ (कावदी ए॰ १४० १म्राभू: निक्षनेत क्राक्रिक कामाराध्यमदः अनविक् काने कि विकास निक् अखाना॰विनित्मार्गभार हुउनि वि १६१ (को स्वमा: सिउन्धा: १६१ नवानावामो । नमामातानववा । प्रमानविनित्मार्गभार्व व्यनववान मध्यविन्ने जित्र विभाव । किन्व विभाव । भवेषक क्षेत्र विभाव । भवेषक विभाव

हअधिक अवार्ग महार्थित महाराम क्रिक्त में प्राच्या अन्य क्रिक्त क्षेत्र महाराम क्रिक्त क्षेत्र महाराम क्षित क्षेत्र महाराम क्षेत्र क्षेत्र महाराम क्षेत्र क्

श्रामा अर्था में कि का निवास कि का निवास कि विकास कि विकास कि कि निवास के निवास के

(अवीक्न्याखर स्मीर्गात्क्र भावितात्क्र प्रविद्यात्क्र प्रविद्यात्क्र प्रविद्यात् भावित्र प्रविद्यात् । प्रविद्य प्रविद्यात् । प्रविद्य प्य प्रविद्य प्य विद्य प्रविद्य प्रविद्य प्रविद्य प्रविद्य प्रविद्य प्रविद्य प्य

239

ज्ञांश्रीक ११९ । वृत्तीम्यानाम् १४५ । किन्वाजनिका कर्मात्ककरोकित्व १४ १ विकाधनामान्या मिनाक्त्र भव्याक्रीति । व

क्रिनेयभी त्रिक्षा विश्व क्रिक्ष विश्व क्रिक्ष विश्व क्रिक्ष विश्व क्रिक्ष क्

133-

(ह किन्द्र मान्य मन्य कार्य के कार के कार्य के

नामिकाभावाचीनिर्गम्यान्क छाउण्यमेः भ्रतीषः शीलामिनक्रणेकण्यिकि नामेमिकि मकः मेम्पेकणेमकण्यानाणोकः कालाचे(मार्थिक विकास से प्रकारिक क्रिक्तार्थ क्रिक्

मान्यलेतः त्यातित्राधिकमः प्रिक्षिक्त प्रत्याक्ति स्वामित त्यामित त्यामित विश्व क्ष्या क्ष्या

कार्यस्थात्रीयात्रीयात्रियात्रिकाष्म्योभकत्त्रभञ्जाविकावान्यायः । क्षेत्रकात्रभञ्जित्तात्रकात्रकात्रकात्रकात्र

_अल्खान्थाङ्गिमाण्याः गृष्युम्मिन्द्रीर्भण्यक्तिमेण्याभ्यव्यामस्गानिकार्यात्र भारत्यात्रमान्यात्रिकार्यात्रमान प्रश्तिकार्यात्रमान प्रश्तिकारमान प्रतिकारमान प्रश्तिकारमान प्रश्तिकारमान प्रश्तिकारमान प्रश्तिकारमान प्रश्तिकारमान प्रश्तिकारमान प्रश्तिकारमान प्रश्तिकारमान प्रतिकारमान प्रतिकार

विष्ठं शालनं भक्षक व्या (यो किन । वे प्या यो व्या (भक्षक के प्रति विष्ठे भानवार भग्ने अविवादिक के प्रति विष्ठे भाग विष्ठे विष्ठे भाग विष्ठे भा

मेर्सिकार्त्रकारेन्विक्ष्याक्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्

(शस्ये कूर्यो। वितः ११ भ्यवः वीक्षः भरावनान विनीनमाज्याल तिन्यामर माञ्जिता प्रभामित्र निर्देश विक्रमी मर्क (क्ष्यः रामारोत्येव विक्रमी विक्रमी

अति प्यमाश्चितिनामविद्यात्वाने कार्यक्षेत्र कार्यक्षेत्र क्ष्ण कर्यक्षेत्र क्ष्ण क्षण कर्यक्षेत्र क्षण करित्र क्षण कर्यक्षेत्र क्षण कर्यक्

भामके शूर्रनातित्वाः कन् । क्ष्यक्ष भागमत्मावाधारभार्यन्य्वनक् मि न्यान्याविक वि विश्वित्राधार्याक्षेत्र । विश्वित्राधार्याक्षेत्र विश्वित्राधार्यक्षेत्र ।

सम्योगिक प्राचान में विश्व क्षिण विश्व क्षिण क्षिण क्षिण क्ष्र क्

440

स्यिद्धारार्थियुम्हालेकिन्द्रके मर्द्विशामीलायात्वार मर्दिनित्यायायाः कालायद्विन क्षानिक क्षानिक विश्वित कालायव्याः प्रशास्त्र कालायद्विन कालायायाः प्रशास्त्र कालायद्विन कालाय कालायायाः प्रशास्त्र कालाय कालायायाय कालायायाय कालायायाय कालायाय कालायाय कालाय कालायाय कालाय कालायाय कालायाय कालायाय कालायाय कालायाय कालायाय कालाय कालाय कालाय कालायाय कालायाय कालायाय कालायाय कालायाय कालायाय कालायाय कालायाय कालाय कालायाय कालायाय कालाय का

न्त्र त्रिकः क्षेत्र व प्रमान्त्र क्षित्र के अद्भाव कार्य न्य विद्या न्य विद्या क्षित्र का वाद्य कार्य क्षित्र का वाद्य का विद्या का वि

वानीनिधर्मनीव्यानिवर्षनेः गुरुष्वम् छ छारीनिव्छव भेशिष्ठिभानिः । विद्यने मन्दिक्यन हे त्या विद्यानिवर्ष छार्थनित । विद्यानिवर्ष विद्यानिवर्ष । विद्यानिवर्ष

(आगन्निक्छनामुक्तिनिक्ति १३०) क्रिय विश्वास्थित अवश्वास्था क्षिण क्षिण क्षिण क्षिण क्षित्र क्षित्र

क्रेनाकी विकास गामिन क्रियक्षा मनिक्की में ज्ञानात्त्रः क्रूरेतान्त्री र्मा प्रेम १ प्रेमाइस्ट्यास्य १ दिली विकासिकी स्थापन क्रियक विकासिक में प्रेम क्रियक विकासिक विकासिक

कारि प्रम्पान्थिय विवास क्रिके प्रम्प विश्व विश

मानुक्तीभामाचिकि १८० द्वास: गरामावारणे: मण्याभ: १११ द्वाप्यां प्राप्तिकेणाधीन कर्षीनम् भीति । १०० द्वाप्ति १०० द्वाप्ति । १०० द्वापति । १०

अः विभिश्योगः गर्गम्। जीविश्वी इञ्चामण्यक्ति विद्या विश्वानि विद्या गिर्द्य विभिन्न विद्या गर्मि विश्वानि विद्या गर्मि वि

-स्र

्रियण्यिक् भेशास्त्रिक व्यिक्षानण्यवर्ण्यामण्यास्य विस्वितिमातानेवाच भरा स्यात्नेनायभ्यात्र विस्वित्यानिकाण्यात्र विस्वित्यात्र विस्वित्य विस्वित्य

मिलियार्थन नाम कामान कामान

वीक्विता प्रम्याक्वरम् श्राक्षम् वात्राविः । वा स्माद्याविनम् स्माद्याक्षे । वीक्विता विक्विता स्माद्याक्षे । विक्विता विक्विता विक्विता । विक्विता विक्विता विक्विता । विक्विता विक्वित्त विक्विता विक्

250

भामाज्ञामनज्ञाना विश्वाक्षक्षक्ष रिये वे किञ्चित्र माधाने अर्थित माज्यकी विज्ञान निविधा विविधा विषय विविधा विविधा

न्यानी किंदाम्बाद्धः मीमामान प्रयोगिक गम श्रूका श्रूकः विद्या में स्थानिमान स्थानिमान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्य

भ्यानाः भ्यानक्ष्यः । भूम प्रियाम भागित्वाः म स्यान्य श्राम्य भागाम भूम प्राप्त स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्य

-शाखः १७ एक भोट्याय ने कन्त्र वह अस्त शाशार्थी मार्था मार्थिक । (यवस्त्री प्रीक्क स्मेर्क्ड प्रियं कि मार्थिक मार्थिक मार्थिक प्राप्त के प्राप

अभवेनेर्डिनोयनम्गोक्ष्यभम व्यंत्रीमावत्यानीवार्थः १४३१४मनिजिः स्थिताजिः मस्डिकाख्याप्य विभावत्य मिन्नाव्य क्षित्र विक्रियम् । अवस्य अवस्य अवस्य अवस्य अवस्य विक्रियम् । अवस्य अवस्य अवस्य अवस्थित्य । अवस्य अवस्थित्य । अवस्य अवस्थित्य । अवस्य अवस्थित्य । अवस्थित्य । अवस्य अवस्थित्य । अवस्थत्य । अवस्

भू:मर्स्रिन विभाज्ञणायनिक्वाळाने। तिनात्वत्वनीः व्यादी विज्ञणात्राज्ञ वर्णात्व निक्ना क्रिक्न क्रिक्न

मस्वावर्रभार्मार्यसम्बद्धान् । अर्थान्यक्षिणान विकान विकान विकान विकास का निर्माण का निर

अश्रीकि मिन् ११ १४ १४ ए० भभ ११ एवन्यानिवेकार्य एकेन्य म्हां नानिक्ष्रमान्यकातीः अवीका में अधिक हो जातिका विकास का ने का ने असे साम असे का ने का ने असे का ने का वमाहियां के अति विवान श्री के व्यान श्री के विवान के व श्राक्षापादरा दि ने । क्रामन्निन भक्क रंभे कारि विस्तियन्।॥ग्रामानिमिकेवीवायिकः रकान्त्रमहिनः विधार्मका स्वयीना गर्रक्ष हुन में किना गर्रा मुखमन -शारीणमिश्वीगीण्य्तिमिकः । । विविधित्रवम्भीम्य्वन्मान म् गीलाश्योग्राप्राचार्माक्षाक्षाक्षाक्षाक्षाक्ष्यानकक्ष्यानिक मास्किः प्राचीत्राक्षाक्षाक्षाक्षाक्षेक्रवरीत्रम् मर्थः विभक्त विवास तका जित्रकः पृत्ती लाकम् कम्बिक्न विवास निकार का काली निवास में अपित विभिन्न भन यक्यलमालम्यास्त्रकृत्रास्त्रकृत्रात्वर् । भारतक्रिमाक्तानी निमाकत्रम्य विक्रमान्य विक्रमानम् मान्यान विक्रमानम् ब्हाहिन १२१ मुझमेर्खें अमेनेक्यर को अहा तरिन निवाल वर्षे संवर्णाः ममाराबः क्ष्मित्रवागे विश्वास्थ्य विश्वास्थ वास्थ विश्वास्थ विश्वस्थ विश्वस्य विश्वस्थ विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्थ विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्थ विश्वस्य विश्यस्य विश्वस्य विश्यस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्यस्य विश्वस्य विश्वस्य

440

ि अष्टाण्डियश्चार्म मूर्गिण्यमार्थाण्यकि कृतिक दिन दिन मूर्ग स्वितिक कृति विकार मुज्य कि प्रतिक क्षित्र कृति कि प्रतिक क्षित्र के कि प्रतिक कि प् भ्ताष्ठकानक्षम्किनीत् गुभभाव्यासम्भक्तवार्याष्ट्रा मध्नीनवा कृष्यात्माय्यस्थिकमराभविद्याय्यो गतिवा भ्यारः सि रिष्ठिमग्रम् भ्वागण्यस्यम् स्मन् स्मन् सि । प्रिलाविकायविकाय जनमः श्री तुमन्त्र ए ग्रिण मर्वेमू एक नाण्याकाषिकालित्रं मन्यवः क्यात्याक्रियानिकी॰ में भीर्वकानिमार्यः। १६ । ने ने ये कि निम्हित्र वर्गस्यभव णित् ग्रिममाग्र्कणीयाक्राव्यक्तिवार्षिकार्षिकार्षिकार्षिकार्ष्ठाविकार्षिकार्षिकार्षिकार्षिकार्षिकार्षिकार्षिकार् विवाद्यः भवः अवभः भवद्यविवाध्यम् अतिय (तत्थार्थक्ते । भविवी (याय्य पंभाञ्च भी न्वेयक्तभाष्य भेभात्ति श्रूक्ते विवाद्य प्रभाव । अवस्था । अ अवर्क्नानामात्रीष्ट्रअकः हर्वनेमाकी ग्राथमात्रीनाएएत्वानाभिष्ट्रित्याः भ्राथिकिर्तिनाम् अन्य श्रनक्ष्मात्रका श्रीवर्षिक्षात्र । १०१० विवर्षेत्र । १०१ विवर्षे

मधीन मसिङ्गिन्यस्थामरावर्णकर्मामग्रारावरोण्मभेखाक्वनभो मर्वे भारते भारते भारते प्रकार अस्ति । भारते विश्व विश्व त्यात्र स्टिङ्गित्यस्था विष्ये । वास्ति विषये । वास्ति स्टिश्च विषये । विश्व विश्व विषये । विषये । विश्व विषये । विश्व विषये । वि

निवल्यः भूश्चर्मन (क्रामी क्रिक्न ग्राथ क्रिक्न मार्क्य भवाका क्रिक्न क्रिक्न

कालि विभागः अवलाक्ष्ण्या विकित्यार्थवाताक्षातेः कुणिक्षक्ष्णमाना प्रथान्य विकाल क्षास्त्र श्रीतिका विकाल किया क्रअण्यनक्रित्रण्यः व्योभिष्य रात्रेगाकियः । किमिन् क्रियान्यान क्रियेक् क्रियान्यान क्रियान्यान क्रियान्यान क्रियान्यान क्रियान क्रिय क्रीमत्रम्ञाः प्राव्यक्रम्यश्चार्गणीववाक्ष्मस्या रा . नेडिमार्गनमेर्गिन्य स्वाजिम्यम । विक्रानिर्य 439 क्षेत्रम्ताम्या । मीन्क्रियम्बर्गम्यम् नार्वेतियश्रक नेकामिनी वीवियाने मार्गिक क्रियामिक क्रुवाद्य (मार्क त्रीन्वीक्रयक्रुक्डीलम्बील्वमानिकीमिव निमानीनालनिक्रक्षिनालम्बिकाकीलम्बिकः निमिकः निर्मिकः निमिक्ष निक्मितिरं । भागिख्यानी लालिक भार्व्य अवन भागा १० । नेया एक निवाः नेया हाका कर ने विक्ताः - गर्भे अकिता (१म

जगोमन्द्रान्यवाच्याच्याने ने मुक्तिन क्ष्या नीनिर्देशन मूह्ममन्त्रे विचित्रमार्विवाद्यावनीविविक्तिः न निवानिकः वियाष्ट्राख्येयां इत्यान्त्रास्यो गुत्रियावीकि जःबाद्धावातम्जनस्थ्या । हण्यस्य याणेवभया शाह मन्त्रार नामि जि: पश्किलाम नाम्बन विवास वन मिन्य में क्रीनेवर्मियाः प्रभावतमामक्षात्र मण्यामा । प्रवामामिक्रीना क्ष्मण्याक्ष्म विक्रित् । स्थानिय प्रविद्याभामा निर्मा क्ष्मण्या । स्थानिय प्रविद्या । स्थानिय । स्यानिय । स्थानिय । स्यानिय । स्थानिय । निश्वाकः इतम्मलेन्त्राणील्यार्थिकः विभिन्न्यार्थयाम्यकातान्त्र भन्नेनः (हामानीनस्क्रमन्त्रेर्णिवक्ष्वीःक्रमन्त्रामीन सम्बन्धानिन सम्बन्धानि सम्बन्धानिन सम् सम्बन्धानिन सम्बन्धानिन सम्बन्धानिन सम्बन्धानिन सम्बन्धानिन सम्बन्धानिन सम्बन्धानिन सम्बन्धानिन सम्बन्धानिन सम

220

विभेष्याची जिल्की: १०३ व्यवकार्य में में भी विकास विकास विकास विभिन्न के कि अधिक अराष्ट्र वार्ति में विकास विकास

भाष्ट्राह्य गिर्माह भमाः भेर्यक्ष भाष्ट्र भाष्ट्र भाष्ट्र भिर्मेश के विश्व के स्वाह भाष्ट्र भ

भाः मान्यक्र में नी व्यवस्था में ने व्यवस्था में वाक्र भवा करियों के मान क्या निव्यक्त में निव्यक्त में निव्यक क्या कि वाक्ष क्य

अयः १६६ वर्गे कि विकार स्वाति स्वाति स्वाति विकार स्वाति स्वात

44W

-आत्माल गुर्भ । अस्तिनिक्तिक तिम् विकार अमेरिक दिली प्रतिसामा आत्राः । भिने अपिक तिस्ति विकार निमित्य विकार मिनि विकार वितार विकार व

अहमार्कक्रियमंक्रान (पन शेवस्थापक्षा वार्त्रम्सिक्शन (पन हं क्ष्मिक्षा शेविक्षा प्रतिक्षिक्ष क्षा विक्षा क्षित्र क्षित्र क्ष्मिक्ष क्षित्र क्

त्रेक्क (क्रेन अप्र स्वायाविक् प्रमाणि विक्रियमा अप्री क्रिक्च विक्रिक प्रमाणि विक्रिक विक्रि

हक्त म्हणावितः अद्वानिकत्मा द्वाप नाथाभारक्षक्र भारत्व वर्षा यूथे अति (मनानी: १९ । (मवाविकारिक विभाग नेक लिखन क्षत्र कारक द्वारक द्वार

वृधिकियण्यन् स्थालम्बाक्ष्यपिक्षिवार न्यम्भानानाकान्ने भाष्यप्रकृत्वामः १३० । किस्रेन (एवन उन्छान्ने अनिवस्य प्रवेश वर्ष्यसार करा अस्त्रेन किस्रिकि । प्राणाण्यामिति स्थेरतेम् अस्त्राचि विस्तिः सिद्धिः सिद्धिन विस्त्राच्या प्रमण्याम् । विस्त्राचि । अस्त्राचि । अस्त्राच । अस्त्राच । अस्त्राचि । अस्त्राच । अस

रा- ११ त्राक्ष क्र भेमः (मिलाई ब्रह्म क्रियोगी व्यापात विभागाका (मिनिता भवत्वती पृथ्वाम्यः क्रियोगी क

200

भेः अनुगिरिकातमात्रीक्षीवर्गाम्यम्यक्षामन्यस्थानम्यामनम्यत्काविवार्भयकः मणिखमयकः दिक्षमयक्षः एक्षिण्यक्षकः मणिखमयकः किष्णम्यकः विकासकः विकासकः विकासकः मणिकः मण्यक्षिकः भागान्यविवादः विकासकः व

मन्दर्भनातिभेः अख्यमानोष्टेन १ १८ विकास वस्ति । मन्दर्भनामा म् आर्थिन कि कि विकास वि

श्रीमिश्रीम् ११ ११ भी वाह्म वा

विकिन्वाकारियामिय मित्र व्यक्ति स्थापित स्थापित । १०० किम्प्रियोपास्त स्थापित रेकिन्य मित्र भागतिक देकिन्य विकास स्थापित स्थापित । १०० किम्प्रियोपास स्थापित स

वन्य प्रवासन्त्र विश्व विश्व विश्व क्ष्य क्ष्य

८०३

दूर्नाभाग्य अवभावत्याकार्षा व्यवक्षा मान्य विक्रिया स्वान्य विक्रिया है। देश के विक्रिया का विक्रिया के विक्रिय के विक्रिया के विक्रिया के विक्रिय के विक

भेषीभाद्यः भूकाविद्रिम् स्विति विधाणात्वीक्ष्यक्षकान्यात्त्वाद्वित्वि स्वति भूवाताः तिधाक्ष्यकात्वित्वाक्षिकाक्ष्यकाक्ष्यकात्विकाक्ष्यकाक्

(हार्गामाम्प्रियक्षीत्व व्यवसाय माने प्रविद्धित विभवनिष्ठ । क्ष्यां क्ष्यां विश्व माने व्यवस्थित व्यवस्थित विश्व विश्व विश्व क्ष्यां क्ष्य

शानानेश्वनिगेमावन्याची (यागेमायाक्वि नेव्यव अभिन्ना स्थाः विश्वन । विश्वन

कार्यः नकावनेत्वनअक्षेत्रकृत्यम् छ किङ्क्षेण्याभेक्षाव्यकाव्यकात्रोत्रमण्याः विश्वित्यक्षेण्यक्षिक्ष्यक्षेत्रका व्यक्षेत्रका विश्वित्यक्षेत्रका विष्ठका विश्वित्यक्षेत्रका विश्वित्यक्षेत्रका विश्वित्यक्षेत्रका विश्वित्यक्षेत्रका विश्वित्यक्षेत्रका विश्वित्यक्षेत्रका विश्वित्यक्षेत्रका विश्वित्यक्षेत्रका विश्वित्यक्षेत्रका विश्वित्यक्षेत्यक्षेत्रका विश्वेत्यक्षेत्रका विश्वेत्यक्षेत्रका विश्वेत्यक्षेत्यक्षेत्रका विश्वेत्यक्षेत्रका विश्वेत्यक्षेत्रका विश्वेत्यक्षेत्यक्षेत्रका विश्वेत्यक्षेत्रका विश्वेत्यक्षेत्रका विश्वेत्यक्षेत्यक्षेत्रका विश्वेत्यक्षेत्रका विश्वेत्यक्षेत्रका विश्वेत्यक्षेत्यक्षेत्रका विश्वेत्यक्षेत्रका विष्यक्षेत्रका विश्वेत्यक्षेत्रका व

जानिम्ह्याचीन्यन्तः पुंच्यमश्रीभेत्रं विक्रममश्रीभेत्रं विक्रममश्रीभेत्रं विक्रममश्रीभेत्रं विक्रममश्रीभेत्रं विक्रममश्रीभेत्रं विक्रममश्रीभेत्रं विक्रममश्रीभेत्रं विक्रममश्रीक्वाः विक्रमश्रीक्वाः विक्रमश्री

किलेख रुख्याकीविकाः अञ्चरवयदाः में किकार्यनेन १ किलोत्त क्रयार्विश्वार्थिता १० मिन्याल्य नकः मेरानि मुभेदावर्वा निः मूक् रहाकि हहाकि हहाकि रहाकि रहाकि रहा विकेष किल्यान क्रिका मिन्यान क्रिका मिन्यान क्रिका मिन्यान क्रिका क्रि

क्षे केराजनमाभरभग्रीज्तिम्हभर म् १० प्राम्न भीत्र में क्षेत्र मानीस्व क्षेत्र अयमार्यम्बरात् । श्राखक्ष्याय कियामाकोरिकामभीक्ति। ग्राष्ट्र म्यान्य स्थान्य कियान्य कियान्य विकास निकास विकास मानायास्त्र-ग्राम्थान्येनः गुनकारीयाम प्रश्नेमानिकाम् ग्रम्भान्याम् यास्य नाक्ष्यास्त्र श्री रखनाक्र भेर भेर का विदाय (ता कान् ।)। प्रधा वायभन्म ज्लाञ्चितिवाद्दिर रव्भनः । गुर्वानने देविश्राव्येत्वानान भिरुक्ताति । सभी अयस्य (त्वा कि मन्याः भार्यिनमाद्यः अभस्य विवाह (वाह्य) रि महानिशेव प्रमानिक प्रमानि 700 भाजायम्भव् भिवः १३० - गर्माव्य नेव्यवनकाः सामीकायाः प्रव्ययेः गरु प्रविधान श्वित्राः मते यथा वीर्धावयः ने -आम्ध्रः नन्ने बण्डाने (वक्ष्णेर्यम्मिक्सः ग्राम्याम्। ययग्रान् (रहिन् मळण्ड्यमनी वेताः न्यारहा दिकाणमञ्ज्ञि कि विक्रण्यामामा गुर्वे १ मनोवास्ति वस्त्रमयात भार्यक केलमा। यासिक्याक्वः च्याम्मण्याविवान वातेन्द्रात भार्यक वस्त्रमान्द्रात विक्रण्या विक्रण्या

म् श्वाकायात्रक्षस्र निक्तायेत्तर शिवाने कि याने वर्णा स्वाया स्वया स

एसक्र मिस्मिन् क्रिलें क्रिक्ट क्षेत्र मान्य महिल्ले क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक

(रेश्रात्त्रव्लिश्त्रक्रम्मानिम्(वेग्ममानाः वावन्ध्रम्भवेद्दाः नेषुने व्यानिकात्त्रः एनित्र मेट नर्व त्यान क्रमीयकात्रः।।

प्रतिक्रमें स्त्रीयकात्र प्रतिक्रमें स्त्रीय वाक्ष्में स्वर्ण क्रमें स्वर्

200

श्वित्रामिक । अद्यासिक । अप्रतिक । अप श्रीलेखाइत्स्थ्रनास्यार् । मञ्च क्यामेत्वीनामार्गथाश्रम्थेत्मित्रीः वित्याम् वित्याम्य वित्यानिक्ष्यम्य वित्यान मञ्जलिवीक्रम्यायाक्रम्बन्धिकिक्ष्णिक्षार्थाय्यवार्गियाच्याक्ष्यार्गियाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्या - जर्भवाक्त्रवामायग्रङ्क्यावनीनगा । ११ जिमिन मका यविष्येभेभाश्या बीक्या क्षात गिक्तियेशना भारतं अंखण्य (शेमार्थिकिशिक्त गितिक्न्य(भारतम्ब्रिंग) स्थ्रा -अवि गित्वान्क अभामातान्य सर्वित्वा । १० विभन मानिनेमर् एन र प्रतायाणी म्याच्यार् कर ने रिष्ठान क्य माना गर् प्रतिनियमित्र विभिर्दा एम मही इराम कर्नार वरीक्ष्ण्यर ए विनीयक्ष्मभूकम्थनेम् अनिष्ठेर्राध्यक्षेत्र शिविद्राभरको क्राभाकिः विनामित्रीक्रमेत्रिः सन विकारपाणा च प्रमिन्जियम् ए तो क्नाय तो स्वाया आप्रेष्णा वर्षा विवेद कारणा विभाग किसीम वार्ष्ण विभाग किसी वार्ष के ति विकारण के या कि स्वाया कि स्वया कि स्वाया कि स्वया कि स्वाया कि स्वया कि स्वाया कि स्वया कि स्वाया कि स्वाया कि स्वाया कि स्वाया कि स्वाया भ्यत्वस्त्रीतीः स्वीभार्यवी भ्रत्या किछ नेताना वाद्धा केष्ट्रः भ्रत्या क्ष्य कालोत्थः विभाव क्ष्यः भ्रत्या क्ष्यः विभाव क्ष्यं क्ष्यं विभाव क्ष्यं क्षयं क्ष्यं क्ष्यं

वारिकः प्रिक्षाम्यः स्वान्त्राभवाद्यात्राभागान्तः । विक्रिक्ष्य स्व क्ष्यात्राभागान्त्र । व्य भागानित्र विक्रिक्षाम्यः प्रिन्त्राः प्रत्राः प्रिन्त्राः प्रत्राः प्रत्राः प्रत्राः प्रत्राः प्रत्राः

अर्थितामः अर्थितिः भ्रत्नाति शृद्धामाम १०० मा श्वानित्वः तर्याय्थानि श्रतीयानित्ति १०० मेशावश्चित्र विकार निर्वान भ्रतीय क्षेत्र निर्वान के भाग्ये कि विकार के भाग्या का विकार के भाग्या के विकार के भाग्या कि विकार के भाग्या के विकार के भाग्या के विकार के भाग्या कि अर्थ के भाग्या कि अर्थ के भाग्या कि अर्थ के भाग्या के विकार के भाग्या के भाग्

अविवासनार प्रश्रेरियामानकार्तः भेकामनभिक्ति हिः प्रभाविक्षः मस्त्रेम् प्रश्रिति हिन्दि विद्याक्षिकः प्रभाविक्षः विद्याक्षिकः प्रभाविक्षः प्रभाविक्षः

मणान स्वताना प्रति शेर्ष ज्याना स्वताना भारति विषय प्रति । भवाव म्रामा (भेराका सर्वानी कि विषय सर्वानी कि विषय स्वतानी कि विष्य स्वतानी कि विषय स्वतानी स्वता

ण्यतिक्षमावमः वित्मास्थितित्वर्णामधीत्वेद्धाः पुत्रतीत्विकामधिरू एक्रेर्माव्यादाविद्धिकामिद्धाद्धिकः। प्राणिकामधिर्विद्धान्त्र । वित्रविद्धान्त्र । वित्रविद्धान्त्य । वित्रविद्धान्य । वित्रविद्धान्त्य । वित्रविद्धान्य । व

विक्काराजीभ्यक्रणाविष्ठाः भविष्ठा मनामिण्डामान्य भेजामिनिक्षेत्र स्वाप्य प्राप्त स्वाप्य मार्थित स्वाप्य स्वाप अह्य के प्रोप्त क्रिका न मिनिक्का मिनिक्का प्रमाण क्ष्य क्

よりり

जभकाः भक्तकाना महत्व कर्तका महत्व विकास महिता कर्ति । क्षिय स्थाद कर्ति । विकास कर्ति । विकास कर्ति । विकास कर अने के स्थाद कर्ति । विकास कर्

-शैनिग्नीन्त्राष्ट्र ह क्यारावमञ्ज्ञमार्तान्त्र त्य (मन्य्यं क्यारावन्त्र क्यारावन्य

यल्या ि अपि विश्व विश्व के स्वापित्य विश्व के स्वापित्य के स्वापित्य

500

मिलिक अस्थितः अस्ताओं अवस्थानः समिति। अनुक्र वाद्याय विभिन्न अस्थितः अस्थितः अभिति। विद्या भी विद्या भी निर्देश विद्या भी निर्देश के स्थान स्था

कर्यनिम्ह्यादिन १% एक अम्बद्धात्मार्गर्भित गर्मभानः भयान भेकीनक विद्यादिम्यम्बद्धाः नामभाद्धात्मे भनभाकाक विद्याद्वात्मे भनभाकाक विद्याद्वात्मे अन्तर्भात् । १० १ विद्याद्वात्मे अन्तर्भात् । १० १ विद्याद्वात्मे अन्तर्भात् । १० १ विद्याद्वात्मे अन्तर्भात्मे अस्ति । १० १ विद्याद्वात्मे । १० वि

स्वारमान्यकान्य्यविक्षान्य्वाक्ष्मत्यर्णविक्षेत्रः प्रम्हित्वकाममात्विक्ष्यक्ष्णेवानिक्षायः क्षिमकार्यक्ष्याक्ष्मान्यकाः ज्ञानेवनकाः जञानेवनकाः ज्ञानेवनकाः जञ्जानेवनकाः जञ्ञानेवनकाः जञ्जानेवनकाः जञानेवनकाः जञ्ञानेवनकाः जञानेवनकाः जञ्जानेवनकाः जञानेवनकाः जञ्जानवनकाः जञ्जानेवनकाः जञ्ञानेवनकाः जञ्जानेव

अञ्चलनायाम्प्रदेन अञ्चल अवेरीति स्वति । १०० क्ष्या कि स्वासि कित्वा वित्या कि कित्या महिला मिला कित्या कि कि व

म्यान्याक्यने। प्राप्त प्रम्मित्र प्रम्भित्र प्रम्मित्र प्रम्भित्र प्रम्भित्

ग्रिक्तिक्ति स्वित्व स्वित्र निविद्य कि ग्रिक्ति व प्रकार क्षेत्र क्ष

मात्र प्रिकृति का मान्य (तारि मिनो प्रति स्वात्त विश्व का मुने प्रति में का मिना का म

भारतभातात्मा (क्रिनिवर्गतमे क्रिनेशे क्रिक्शिक्ष क्रिक्शिक्

जनकार गर्यार अभाविति ग्राह्म म्रह्म म्रह्म के मार्थित क्षेत्र के मार्थित स्थान स्

म्मानिकारका निर्मातिका कर्ण विकास कर्ण विकास क्षेत्र क्षेत्

देि १६१ । यान्यामा ११० । धान्त त्याद्वाने भर १६ । आअवदे जिल्लान में त्या श्री अवस्थित । अध्यानिक भवात्व मिने त्या कि । अध्यानिक १०० । भवात्व मिने कि । अध्यानिक १०० । भवात्व भवात्व भवात्व । अध्यानिक १०० । भवात्व भवात्व भवात्व । अध्यानिक १०० । अध्

आयेथान्यानाश्चिमाध्यात्रेनश्क्रमञ्थ्रभग्रिश्वाहीण्याहीण्यानभानिवर्दिर्गयकिमातनश्क्रमण्यक्रमात्रे विभागातिक निर्दायनार्थ्यम् रेटिहाणात्रान् ।

्यामनमानश्वः मताः किष्नानावक्षित्वामा निवित्ति त्यामायभी दिश्वः च्याः श्वनक्र्यान् निवित्यात् मत्र विक्र्यमा विक्रियाः विक्रित्य विक्रियाः विक्रियः वि

भागीः स्विकिकीमार्निनाः । योगिनकनभद्दावी । १६११ तीक् दिनादिका । मिलाका कि १३० १भागाया नियम १३० । १८४ । स्वा नियम १३० । १४० । १४० । १३० । १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १४० | १

न्यानामिना किमाकानिय नेअवात के आप आर्ष खेव किस्नामिकानि कि नीना सामा कि वन मेरिक मनाना में कारनी ने विकास के कि क्षेत्राभवश्यभव्यभव्यक्षितिकां के क्षित्र क्षेत्र क्षे ्यागीमीनापत्रियम्जाप्क (यामाःर्यनम्भाः , पर्यास्त्रमाष्ट्रियाम्योष्ट्रस्थियाम्याण्याम्याम्याम्याम्याम्याम्याम् अगिरिवासाक्ष (वर्षेत् । ए गिरियोण्य मवलात्ने। मिरियोः अ (क्रिक्नास्य: नुनारम्।वनेन्यरमाक्राक्कीनेन्त्रभेक् क्रजी: गरिव्यिय॰ नि व्यागीण्य प्रवानक क्र्यरः प्राय (नाक्षाञ्चान् द्राम्कीनिक्याच्रम् विः नधी । हन्यूश्वामामिक्यो मि 280 दिन्यारीकारेक भर्मा (वेराति रिविर्मित्रीनाध्ययानमर्यनी यिनार्गा १नन्यति विर्मातिक मनन्यने न् मनेष्क माविश्वका कि महाममाग्नः महत्ववा क्रम्का भर्मक मामविभाग कि भर्मक क्ष्मिमानिको १९७ (आकाष्ट्रा विमान श्रीमान क्षिण क्षण क्षिण क्षिण क्षिण क्षेण क्षिण क्षिण क्षिण क्षिण क्षिण क्षिण क् निकाशवान महायद्दिया मिथिकान मेकिक वर्ष कार्या विकास मिथिक अन्या कि अन्या कि अन्या कि । विकास कि अन्या कि अन्य कि अन्या कि अन्य कि अन्या कि निमान का अवस्थान विविधिक विविधिक विविधिक के कि प्रति के विविधिक के विविधक के विविधिक के विविधक के विविधिक के विविधिक के विविधिक के विविधक के विविधिक के विविधक के विधक के विविधक के विधक के

(भ भिनः शिक्ष अनेर्द्र भनेकाः श्राह्मभारम् । गृनम् श्र्यात्रमात्र भ्राह्मभारम् । गृनम् श्राह्मभारम् । गृनम् श्राह्मभारम् । गृनम् श्राह्मभारम् । गृनम् श्राह्मभारम् । गृनम् । ग्राह्मभारम् । ग्राह्मभारम्

डिमेनसर्मत्रश्चित्रीक्रक्ट्याभ्यत्रम्भः अश्वक्षक्ष्यान् विकालिकः विभाविक्षिक्षेत्रकाक्ष्यविक्षित्रकाक्ष्यविक्षिक्षेत्रकाक्ष्यविक्षित्रकाक्ष्यविक्षित्रकाक्ष्यविक्षित्रकाक्ष्यविक्षित्रकाक्ष्यविक्षित्रकाक्ष्यविक्षित्रकाक्ष्यविक्षित्रकाक्ष्यविक्षित्रकाक्ष्यविक्षित्रकाक्ष्यविक्षित्रकाविक्षेत्रकाविक्य

गोमनिष्ठित्रामाः वृत्रक्विताः वृत्रक्विताः वृत्रक्विताः वृत्रक्वित्रक्षः वर्णने वर्षः वर्णने वर्षः वर्णने वर्षः वर्णने वर्षः वर्णने वर

बमानो अस्त्रिये तिः क्याक कृति म्या विश्व विश्व

- उद्भुशम्ब अविनेशान्य भरत्ति माञ्चाक प्रतिविद्या विक्रिशक्या ने मिल ने भर्ती क्रिकेश क्रिकेश

वेभक्तभीशासार्वितिविद्याः विकाभीश्विरा(तश्र्व्यम् विद्याः क्ष्य्यम् विकाभी विद्याः वि

भ्वानि भ्रिश्वान अन्य अन्य र्थिय विश्व भीय निकित प्रभागिक प्रियमित । भ्रियमित भिर्मान भिर्मान । भ्रियमित भ्रियमित । भ्रियमित भ्रियमित । भ्रियम

िक भिवनतः गर्भविष्ठ वः रूथेम्बूद्धानाम्बव निष्ठ मन्यून (मात्रन एक प्राचना मिनाविष्ठ भिवन मन्य । भिवनतः गर्भविष्ठ ने प्राचनिक प्राचन । भिवनतः भविष्ठ मन्य । भविष्ठ ने प्राचन । भविष्ठ ने

अस्ति अञ्जाक्त्रीत्रीतः विकाश मिना अस्ति अञ्चाना अस्ति अञ्चाना अस्ति अञ्चान विकाश मिना अस्ति अञ्चान विकाश मिना अस्ति अस

735

देशाहिलेह्मअध्येकविक्रमा १०० १ (मारोष्यवानो अनि दर्जार्मप्रवाभन्मा छिद्याविक श्री हिम्मिको दर्मनिहि १ द्रश्यानिहि भूयो दनेमा रिक्मिकि देखि । द्रश्यानिहि भूयो दनेमा रिक्मिकि । प्रवासी विक्रिक्मिकि । प्रवासी विक्रिक्मिकिक । प्रवासी विक्रि

'त्रमानाकमत्वाक्ष १३ १२(मर्जीवायमानाना वाखाभागे विमानीनवेगार्ने (समामिकाकिताकिताकिताकि । व्याका १९ १यक्षाक्र ११ १२(मर्जीवायमानाना वाखाभागे विमानीनविग्रीक ।

क्षवा(मोनमान्नाक द्वान्र भविद्धि मिठान् प्रमान्क भेण्यान्तिक काम्यान्ति । प्रमान्क प्रमान्क भविद्य प्रमान्क भविद्य प्रमान्क प्रमानक प्रमान्क प्रमानक प्रमान

भकामताल क्लीक्निन्या वा नाजिन्या विकास में विश्व का निवार क्षेत्र में विश्व के विकास के विश्व के विश्व

(त्रकार्ष प्रकार में विविद्या कार्य कार्य

780

च क्रितिनोगां अञ्चार विविध्या र रामस्य अञ्चार ने क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्र

व्यमभेनामकाः प्रिम्क् मवश्राक्षक्र विमान्त्र निवाल निवस्ति । विकि निवस्ति । विक निवस्

नुमार्थे नाथरः र जाएक र १८ विभावित्रोन मिमक्यार्यमानीययंतन भद्रमास्त्राक्षणिकि कि कि स्वाद्याक्षणिक विभावत्याक्षणिक विभावत्याक न्मामानवाण्मीर्थार्यमार्थरः ग्लातः मनाजिलाश्नीकृष्वात्मगेजानगरमः १४ विरुद्धमानीयनाणिकेनां पिमिन्निक्ष्य सन्मार्थराक्षकेष्वत्र विक्रिक्षित्र । (मार्थर्थकेष्ठ भर्गिष्ठानेष्ठ । भीत्र कृष्टिक्ष । भीत्र कृष्टिक्ष । स्था हर्ष ए का कि कर्मिवीक्र नाती गे क्रिम्यक्रम १२म कीचीकिंग भी की के करम्य कर्गा व मुझार भेर भने श्रामकेत्रस्यम्प्तर्ज्ञानः ननत्त्वमध्यभाष्टिकः रात्ननावि 288 वनीयमा १भर्वाल्य्यस्यायाल्यभ्रश्चर्मिक्राल भूज वातायेभवः निमाः क्ष्यक्रमदात्रेने । ११वये त्रायम् तानायम् तालकायम् तिम् विमाय स्कार्यकायम् । श्रीताष्ट्रय न्याकाशिकातामः नद्गीवमंशार्वः रिश्रीवनीमः कत्यन्य्विकारेनान्विकः विष्यादिती मैत्रेवक्रक शत्मभीऋगेन्स ममाभा ११ मध्यक्त रर्श्वमम् स्वामम् स्वामिक व्याममानिक भागानिक व्याम मिला मुभाम मका व सन्ति स्थाप स्वाप स्थाप स्था

अस्त्रीनः म्ह क्रिक्शिन्य वाम्याक्ष्मिक्ष्णित्र क्रिक्शिन्य क्रिक

मई (नार्य पाने नाहित्री नाण्य (क्या प्रे विधावयन भए पाने सात श्रक्षा व्या मारियो प्रथा का का निवाद का निवाद का का निवाद का निवाद

आर्नेनिक्रक्रास्त्रामिनिक्रिकार्गार्थिकेनार्थामिक विक्रिक्षेत्रम् विक्रिक्षेत्रम् । १०१ द्रीक्रापित्वेनिक्यास्यास्य विक्राप्त्रम् । १०१ महास्य विक्राप्तिक विक्रिक्षेत्रम् ।

दिन् १ अर्थित्र में १ अर्थिकार्य क्या विकास क्या विकास कार्य वा विकास कार्य का व्यविकार किल्ला की कार्य का विकास का विकास कार्य का विकास कार्य का विकास कार्य का विकास का विकास कार्य का विकास कार्य का विकास का विता का विकास का विकास का विकास का विकास का विकास का विकास का विकास

भावत्यानित्वत्यभाष्ट्रीकित्यानि १४० । अनीर्यासन्याभित्यात्रीक यमायार्थीक खाक्रक तिर्वादिका निजामित्रवात्यन्यः १३४ । यद्याप्राद्यक स्वितिर्वाद्यात्र अप्रयाप्राद्यक स्वितिर्वाद्यात्र अप्रयाप्राद्यक स्वितिर्वाद्यात्र अप्रयाप्त्र वित्र वित्र वित्र स्वाद्य क्षेत्र स्वतिर्वाद्य स्वति । वित्र वित्र स्वति वित्र स्वति वित्र स्वति । वित्र स्वति वित्र स्वति वित्र स्वति । वित्र स्वति वित्र स्वति । वित्र स्वति वित्र स्वति वित्र स्वति । वित्र स्वति वित्र स्वति । वित्र स्वति वित्र स्वति । वित्र स्वति

र्भाविक्यां निवत्व (व्रार्थित्वनः प्रम्यदे (तार्थिक व्यव स्थाप्ति व्यव स्थाप्ति । प्रमुदे (तार्थिक व्यव स्थाप्ति । प्रमुदे (तार्थिक व्यव स्थाप्ति । प्रमुदे (तार्थिक व्यव स्थाप्ति । प्रमुदे वार्थिक (त्याप्ति । प्रमुदे । प्रमुदे वार्थिक (त्याप्ति । प्रमुदे । प्रमुदे वार्थिक (त्याप्ति । प्रमुदे ।

मिनिक्यात्रामेष्ट्रिक्यात्रम्थात्रम्थात्रिकः १८०१वयात्रम्थ्रम् वित्तर् एत्यात्रव्यात्री विश्वर्णाकार्यात्रम् व

क्यात्केमन्भातार्थभमनाम १९ विदानम्दिकेमें १६ गृह्येन शक्यममन १९ १ अविद्याना विक्तान १५ १ कतिवागन समितिवर्दि । विक्ति स्था विका

(साक्रीश्रेमर्ताक्लीन्गे। ११ लिया विश्व का स्थानिक कि निर्मा कि विश्व का स्थानिक कि निर्मा कि स्थानिक कि निर्मा कि स्थानिक कि निर्मा कि स्थानिक कि स्थानि

280

भन्ययाम् व्यागेर्प्यतीलमात्रकः आर्थितः गुमदान्वाभाष्टमम्बिकः अमिक्दे विक्रिक्यम्यण्यम् अव्यवस्थितस्यम्यण्यम् १० । देन्नेनाम क्रेनेनाम क्

हिरीविमा १९ ७ (माशाविको (कोरम्बाकाइस्निकः व्याखानशो भेजानम्बाकानकः स्वर्गाकान् विमानिव्यामनास्य मन् स्वाधिक विकास कर्मा कामानिव्यामनास्य कर्मा क्ष्रिक विकास कर्मा कामानिव्यामना कर्मा क्ष्मा क्ष्म

त्यार्थे । १३१थीर्व शिर्वयम्भावन्त्र मेन म्र विमाने विद्यान वि

निष्ठि १०० पिउए द्याने व्याने प्राप्त के का कि का का के का कि अपने कि कि का कि का का का का का का का कि का क

व्यानिकारीयात्र विक्रिमीय्र स्थानिकार क्ष्य क्ष्य क्ष्य प्राप्त निक्ष निक्ष कार्य क्ष्य विक्र कार्य क्ष्य कार्य क्ष्य कार्य क्ष्य कार्य क्ष्य कार्य क्ष्य कार्य क

अण्यीक्ष्यक्ष्याचित्रक्ष्यानित्वर्थ्यतः । मर्क्वीमान्त्रेत्रमान्तर्थिः स्वामित्रमान्त्रभः भभमन्तार्थन्ति । कार्यिविविष्याः ग्रामित्रमान्ति । स्वाधित्रमान्य ।

आद्रीत्रामान्य्र(भोनेनेच्यामनेक्यामनविक्ताक्ष्मा कृष्मवर्यामामनविक्ताक्ष्मा वेद्र्य ग्राम्स् हर्रिनेक्व्यामनिक भक्षीत्राम्भित्रेष्ट्रिः र्व्यन हाळाच्येनिक्च्य १६ १०० ११ विखान्स्य विक्रोक्च्याम् हर्षित्रेक्व्यः प्रवाधिक्षा नेक्ष्मा कृष्य भाष्य विक्रा क्ष्य विक्रा क्ष्य विक्रा क्ष्य क्ष्य

विश्वतिभीत्राविज्ञात्र विश्वति निव्यत् विश्वति । अस्मान्य स्वित्य विश्वति । अस्मान्य । अस्मान्य विश्वति । अस्मान्य । अस्मान्य

रूननेनामक । प्रियाक्ष नियद्वास्त्री हार्यमा॰ हर्व र्डाईंग | स्वक्तायां अस्त्रायां एक मण्ये हर् विकार १ हे प्रमाजवर्गे विश्वा मिर्गायां भाविताल प्रमात्र म्याह मेश्वाह क्ष्र स्वनाता मणे क्षर | भ्यवहानात रहाता कार्य के स्वर्थ स्वयः । प्रमाजन स्व अन्यामन्गाण १ वर्मकानमात्मात्मेनमारुनमारुनमान्यानः ने - म्बू॰म्स्योनावाय्गेष्यम॰ प्राक्याक्यक्षित्क्रभाय ्वाश्रह्मित्भवन्यच्य गुज्ञाव्यावाकक्षर्गवाद्योगेः ज्यानेविश्वस्वितिः रुनाभयाभवाभितिः गनेशैष्यर्ग य्वेजामिम । (साम्यवाम् यूर्वियाण्यन्तारं निवामिना । विविधावान्याम् विविधावान्य विष्य विविधावान्य विविधावान्य विविधावायाम्य विविधावाय विविधावाय विष्य विविधावाय विविधावाय विविधावाय विविधावाय विषय विविधावाय विविधा ज्याश्वानाभानाभानाभ्यनीनान्द्रक्तिकमाण्य ग्राच्याविभेणोचयिममिष्यूं किर्मेय् - र्वारामम् र्वाय्यु माण्यम् वर्ष क्षामार अवर्षेत्र क्षामान कियात है।

मानिक स्थमः १४१ एवता वित्र मिन् विकास । १४ एवतः १४ मिन् भी वित्र प्रमानिक वित्र विद्या मिन् क्षेत्र विद्या मिन क्षेत्र विद्य मिन क्षेत्र विद्या मिन

व्यविद्यानिक स्वार्थित । त्रिक्ष के व्यव्यक निका के विद्यानिक के विद्

म्वताभेवतम १२१ १मिनमनिकान्य विकाल महाभक्षान्य महिन्द्र स्व कार्य महिन्द्र मिन्द्र महिन्द्र स्व कार्य कार कार्य का

क्छर्यम्नोतीत्र्यः गाविष् निक्यम्य नाकः वृष् सागि मुलाकिति - । नक्य व्यवस्थारीस्यम प्रभी अन्य वागेडक्र विया वयमा निल नमा नम प्रति व न त्राज श्राह्मानीचेश्रम क्रिन्मर्यहात्र इत्यान्त्रकात्र क्रिम्निक्यमान्य मन्द्रश्रम्भित्रम् । भूकिन्मित्रः मलाक्ष्रिश अनि(सक्तिमा विभेगेक्ज अपन नम् निर्मिकिक आर्ता निर्दः - । विगर्गम में स्नी निर्दित् सम् रामिक का यमिनक का ने स्थ अपन

जभशक्राकिभित्रक्षितियामी: न्नभित्तमिक्रिकिभेव ग्रेमभीन्यग्र इत्नेभावाकर जाक विश्वग्राः निभक्ष न्नभेवन्य नायभिर्भायोग्राज्यियवष्ट्रियो म्लोयि शिल्मियाधिमिक नर्यंभका श्रामपूर्शी मनभावी देना येमन् ने भाने भन्य मम्नयडेनामरण्डन्ययानियम्भ्ययनात् वियडेक लाक्ष्या क्छात अने वीव रूप: १३०। निक्षण भक्त मा ता क्र कृ ए सा ने भू रजार्ति भूषा: १० १० देश्न् विम्कण बक्क ने न (याप्र व मंबडे मने। इसिम् नीक्ष प्राविषकिश्यावयम् शिष्माः भभण्योष्टियुभ्याक न्दिनगेनिक्का । क्रिन्मयेमामक्वन नक्कानप्त : क्रिमिनक्यो क्रमण्याक्ष्यो येविम्मा । १६ । जिनमण मान्येक्ष्या -श्रीत्यम्बितानिकाने भ्रान्यावन्त्र्मिनिकियात्वामिताः न्यानिकितिकामानिकित्वाम्यम् वाधे क्या विकारणः ने स्वामानिक

म्यादास्वाम गृथः गर्भाम्यमनाध्यकियभिक्शिक भन्नाम न्याङ भन्निक एधनक त्यामिन भाषा उथा प्रविद्ध विश्व विश्व विश्व क्षानिकार्या भ्रम् अन्य विक्रिक्तमोयान्य भावभित् । १० १०वर्षित् हरे का भित्र मयनिक्नियानिक सः १ ने विवेभागने सुविवा । विवेधान निजा ग्यमिक् जिल्हाः व न्येनिक न्याविष्यभाः १८१ वमक्षणे अवाकान्निन कावकन किश 263 क्छ वंतित्र्यर्किनमन्न्यज्ञानिनिमाः । वर्षेत्रहानिनिनि विशेक विविधिक्ष लगाव में श्रीकार यात्र विकास कार किया : १११

च्छान्त्रभाष्ट्रप्रश्चित्र विष्याः प्रविक्रिक्त स्व क्ष्यान्य विष्या स्व विष्या स्व क्ष्यान्य क्ष्या स्व क्ष्य क्ष्

सन्माण्डमित्र्वित्रिक्षित्र निर्म्ञ्च (वर्ष्ण भमर्थका वाष्ट्र म्यान्य क्ष्या । भूमित्र प्रमान्य क्ष्या क्ष्य क्ष्य क्ष्या क्

मिनाश्विः । १० म्योनाइम्हिनाः । १० विशेष्य प्रत्याम् । १० विशेष्य प्रत्याम् । १० विशेष्य प्रत्याम । १० विशेष्य प्रत्य प्रत्याम । १० विशेष्य प्रत्याम । १० विशेष्य प्रत्य प

ત્લ્યું

ज्योश्वालोनिर्दः स्वाक्त्यम् प्रकृतं क्रिक्तं क

क्रिमे: निश्न विकास विकास क्रिक्स क्रि

क्रिक्ष भी भगा गर्कः अभका भगमा प्रश्न भग विद्या विषय प्रतास्य वेगिल्यः । असा नी जिल्ला विद्य अस्ति । अस्ति विद्य विद्या विद्य विद्या व

ति भिर्मा मिहामः मत्स् (म्यामरान् दिनः । विक्त्मीन (माः श्वादि विक्त्मीन (माः श्वादि विक्त्मीन (माः श्वादि विक्र्याः मामार्ग विक्त्मीन (माः श्वाद विक्र्याः मामार्ग विक्रयः मामार्ग विक्रयः मामार्ग विक्रयः भाष्ट्रा विक्रयः मामार्ग विक्रयः मामार्ग विक्रयः भाष्ट्रा विक्रयः मामार्ग विक्रयः भाष्ट्रा विक्रयः मामार्ग विक्रयः भाष्ट्रा विक्रयः भाष्ट्रा विक्रयः भाष्ट्रा विक्रयः मामार्ग विक्रयः मामार्ग विक्रयः भाष्ट्रा विक्रयः विक्रयः भाष्ट्रा विक

भुडिभेग्राखार्त्राचः देम्तील अवाव१- विद्रक्टिवकः - १११ रिवेक्णेश्य दिवेशिका ११ टिव्ह्हाग्र्वण्डमाक्त्रवर् किनामितः म्राचे म्हाम्यव्यवस्थाति । अव्यक्तिभावित्व (मावित्व अक्ति हिनः । १८ एता ने १० अन्य अन्य अन्य । ने वित्र भेता वित्र भीति । ने भीति । न भी भागितः क्रीसाना ग्रेथक्थाना भागावित के भागित भाग 768 र् प्रिक्षेत्राव्याम् । त्र नीक्षात्रक्ष्यात् । किल्यूक्यातेः । कर्निविद्याक्ष्याल्यात्रात्रात्राये अवेशमर्क् । रूप्रिति नः व्योगान भू अपन्य मिल विला पृत्र पेता भू समाधा मुंदिः आर्थी न मेनिर्ल प्रत्येवा । प्रत्येवा म्या वित्र विवाद हमाश्

अगोम्पड:जेशाधीन क्रममाधीन: द्वापन समाण्यन प्रति अन्य प्रति अन्य प्रति महाविष्ठ । विषय प्रति । विषय । विषय प्रति । विषय । विषय

हा बित्तितात्व प्रित्वे क्ष्रिक्ष निव्यार मध्ये प्रित्वे क्ष्रिक्ष निव्यार मध्ये प्रित्वे क्ष्रिक्ष क्ष्र क्ष्रिक्ष क्ष्र क्ष्रिक्ष क्ष्र क्ष्रिक्ष क्ष्र क

किः वर्गान्त्र श्ववप्र व्यवमार्क्तात्म निक्षा काष्म्र मा वर्ष वर्ष के वर्ष के

मीक्षार् िश्वित्रिक्षणामे क्रिकामे प्रश्वास्त्र में प्रश्वास्त्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र मार्थित क्षेत्र क् हिताज्यमः भगभाभाव । किर्कः ममद्र (अभाव विश्वेशिक) श्रामरान विशामियात्रियात्रमार्विक्यात्रमार्विक्री -ज्युक्क विश्वयामान्यः (मान्यगीय्मम्। म्याः न्नवत्ये ंश्यानण्डान के स्म मन्त्रनीक्रया म्डल्मेह्स्मास्लग्नानम्ब 266 नन् (अन्छन्मा १२ मञाचीत्रापिक भयूभावीनायां नायां । विभीनी भयू भीवित्रि असावा वा विभीवाः प्राः किनामम नेत्रपेन्यामार्यंतः गर्भात्त्रकूष्मार्वार्यंत्रायवार्वं स्ता गर्नेष्यमञ्जूष्मेनेर्गेत्रिक्तिक् रिवार्य गयुनस्थ्य र्याभ्यातिभावभद्रकाण्वियानिकाण्यम्भम्हत् २ शानीजिक्षायः । अग्नवामी व्याभावः रह्मात्रायम्भवी अवविकायः वर्षेणस्विकायम्भण्यः १३ विद्यानात् वसार्यः वस्ति। लेमाक्रालिमाधानामात्रिक्व १११ मणमभावकावन्थिन । हिलेबीमार्कः क्रूलमांत्रामाव्यक्तिः छिनेमीम् निकामान १५ । दिशाबककण्वत्यंति समिक्षामान १६।

उत्विनी गिर्फ्याम्बरीय लिया म्यानिक विका क्यानिक विकार विका

विष्य-गअर्थवारी विवाद निविद्यात त्याण्याच्या है । भारत्य पितिहें इन्हें क्ष्या मिनिविद्य अविदेश के कार्य कार कार्य कार्

360

भारताभाष्य के भारताभाष्य के कि विवाली यक्ति तर अध्यक्त भून कि विवाली सिंह ने के अधिक के अधिक के कि विवाली यक व भारत व्यवसाय कि विवाली यक कि कि विवाली कि विवाली विजय में कि कि कि के अधिक के अधिक के कि कि कि कि कि कि कि कि विक्किक्सात्तर व्यक्ताकिलीकर्मः विक्रमभारुभीविष्वम्निन्नेममिक्योग्यका व्यनिव्यक्तिनिम्सिन कार्यन्त्रभयात्राम्भेरिक १० विभिन्नविक्षेत्रीर्भे विनिम्सिन १८ विष्या मन्त्रमार्थ

उन्दर्शनात्वात्रीत्रीताहनः । विद्यात्रीत्रत्यात्र्वीत्रान्ययात्रात्रवात्रात्र । व्यात्रत्यात्र । व्यात्र विद्यात्र । विद्यात्

জীব্যাগিরানির্ত্ত প্র্তিত্বসূবেতি খৃৎ খুল্লিরিব গোস্থানিনাক্ত্মত্বাঞ্চাইতি খুল্লীরিব খ্বাধাক্তর্থাতন্সঃ খুল্লীবাধাক্তরজনত: শুব্ধন্স: ক্ষামন্স: শু

नीचरान्य्राचित्राचित्राच्याचित्राच्याच्याच्याच्याच्याच्याचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्र

वाक्षणेवस्कित्वाविद्य कातिकी के विकाश विकाश कर स्वाक्षणे का का के के कि वाक्षणे के वाक्

रुषेवाह । ज्ञान्यस्त विश्व क्षेत्र क्षाव क्षेत्र क्षाव क्षेत्र क्षाव क्षाव क्षेत्र क्

व्यक्ष्यायादिक्षेश्रीकृष्यिक्षिक्ष्या विक्र विक्रिया मन्त्री विक्रिया मन्त्री विक्रिया विक्रिय विक्रिया विक्रिय विक्रिय

देः प्राप्त विश्व म्हानि विश्व विश्

16%

क्षेत्रक्ष मण्योगिवत्मात्रम् विकृत् न विक्षा विक्षा विकास मान्य वि

अस्नीक्त्रास्त्वानकत्त्वार्क्कम्किक्किक्व १के विक्रम्मिन्नार्त्रातिनाविक्षेत्रकर्मः १२० १४०० व्यक्तिक्यार्थक १२० १६विवावार्थाक्किक्वः विवादिनः १२००० । १०००

विष्ठमण्य्रक्षमञ्चलमञ्चलमञ्चलमञ्चलमञ्चलकामेत्रकारमञ्चलकामेत्रकाम

(कामकराअस्वयकीर्गिविक प्रत्यावेनण्यीवातर् किमक्रिके मार्गक्त मिकिकोविवामा मामिलीक०-१०२ दिवायावापार्कावाणाः नमः विकास वमः विकास वितास विकास वितास विकास विकास

यमान्त्रेत्र (मिक्किनाः प्रवन्त्याचोनभन्दम् (ज क्षिम् क्ष्यं में क्षित्र क्ष्यं में क्ष्यं क्ष्यं में क्ष्यं

नामेन्द्रकार्तिः मभन्नेवान्याञ्चे व प्रमानिकारमानिका (का निध्यति निध्यति । विष्यति । विषय । विषय । विषय । विषय निव्यक्षेत्रः १२१ भन्ने प्रमान्य विषय । विषय निव्यक्षिति । विषय ।

तेष १४० विकालका विकालका विकालका काली ति अस्ति वाली ने विकालका के कि कि कि कि कि का काली कि कि का कि कि कि कि क

त्रीनारमञ्ज्यकः भन्ननाभाष्ट्रम् (रामेश्वान्यकिक्षेष्ट्रमण्डाकिक्षाण्डाक्ष्मण्डाक्ष्मण्डाक्ष्मण्डाक्ष्मण्डाक्षमण्डाक्ष्मण्डाक्ष्मण्डाक्षमण्डाकष्ट्रमण्डा

(वाइनेभार्थभेत्रीना(भरूवप्यः वाविदिवक्तभानिवन्य् (र्यम्प्रम् मित्र प्राविद्यक्तभानिवन्य (र्यम् मित्र प्राविद्यक्त प्राविद्यक प्रविद्यक प्राविद्यक प्राविद्यक प्राविद्यक प्राविद्यक प्राविद्यक प्रविद्यक प्राविद्यक प्राविद्यक प्रविद्यक प्राविद्यक प्रविद्यक प

200

नामिक नेद्रास्कृत्वा मृत्रात पूर्व अवक्तमत्रि त्या के अने व्यक्तात नात्माक । १३ विक्षां मृत्रात्वे वर्षा वेश विका विवास विका विवास के विकास विकास विवास विवा

(जिनियान्याक्रानी जिन्न किर्नित्न) प्यवस्थानित स्थान क्ष्मानिक प्रति क्षित्र क्षित्र क्ष्मानिक प्रति क्ष्मानिक प्रति क्ष्मानिक प्रति क्ष्मानिक क्ष्मानिक प्रति क्ष्मानिक क्षमानिक क्ष्मानिक क्षमानिक क्षमानिक क्ष्मानिक क्ष्मानिक क्ष्मानिक क्ष्मानिक क्ष्मानिक

नः ध्वाकाः राष्ट्रभीनाः भभामवः न्यपूर्वन्यम् जनामनकाकं महावर्गः ।भूबीद्रकावितृ जिन्नमामनम्यविष्ट्रभेन्यत् द्रीति जिन्नस् मण्योगितिनिष्ठायाः व्यवः विदः । विद्याने भद्याने

भूमनिनिन्द्यानिनिक्यानि

विमान्त्रात्वरम्भावत्वन्यान्त्रश्चित्रं (त्राभीनेख्यानं निकारीविजिधः किलावि प्रविक्तम्भानिम्भान्त्रभावयान्वर् विम्हल्खाः म् गिर्णिक्षेत्रभावत्वन्याः प्रविद्याविक्षित्रभाविभान्यानिन् वियव प्रविविद्यम्भानिक्षित्रभावत्वन्यः प्रविद्यम्भानः भावत्वाम्भान्त्रभावत्वामान्त्रभावत्वन्य विश्वाक्ष्यम्भावत्वः प्रविद्यम्भवः प्रविद्यम् प्रविद्यम् प्रविद्यम्भवः प्रविद्यम् प्रविद्यम्भवः प्रविद्यम्भवः प्रविद्यम् प्

(य्लारिन विभवावण्येक्वी एळळळा श्रेमा नीव श्रेमान स्वान भणा में स्वान भणी विक्रिक्यो क्या क्ष्या निवास के क्ष्ये क्

कः कृष्णिः कृष्ट तर्म्य त्या प्राप्त कि विष्य प्रभाविद्य र कर्णभागे वः अका श्रास्त कि क्रिया । ज्या करणभागि व के के वे विषय क्रियो विषय क्रिया प्रभाविद्य कर्ण कि क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया विषय क्रिया विषय क्रिया क्रया क्रिया क्र

क्ष्त्रं शिवित्र विक्र निर्मा श्रिके क्षिण क्ष्रे क्ष्र विक्षा क्ष्रे क्ष्र क

वन्यक्रमणावनकानिम्य्रीवर्तमा क्रीचेट्ड(मान निक्षिति छि: क्रिलो वि अगिनगीकश्रेनअम्पानः । विश्वाहित्र मन्याञ्चित्रनेयानिन्दाश्रियः गुलगाविन्दाश्रोकाविञ्चित्रभीवयिनः स्मत् । गुल् वन्यान्कामान्यभवन्ः वन्यत्रक्तं भवनक्रम्यार्क्मान (वावान्नवाताः म्यूलाम्यूलाविन्द्रज्ञिन्द्रप्य न्वेम्स्डन्यमकः लिम्यान वियाप्य मार्थिय एके लि निव न मुनहन जिनव म्यूमा व युक्ति विश्व किया जिन्य मार्थिय व मार्थिय व म्यूमिक व म्यूमिक व म्यूमा व युक्ति विश्व व मार्थिय व मार्थिय व म्यूमिक व म नम्नारिष्य वयमिवरामयाम् अतिविष्यं । न्य्यासमाः रामिजाकामिस्ने मध्यारामिक रुमन विस्वक प्रः ग्य प्रमा 3-52 स्तर्विवित्यने विः ने की निष्य कि नि निष्य कि न

मान्यंद्वीयक्षांश्रक्षेण्यंक्षाः प्रमादेवमाक्षाप्यक्षेणाप्यक्षमञ्जीनेग्व्यानश्चानश्चम्वान्यमान्यम् महत्वान्यम

ना॰ प्यामीर (याङ्गेमार्श्रण स्थित्या के वाधिक पाने प्राप्त प्राप्त के वाधिक प्राप्त के वाधिक प्राप्त के विश्व के वाधिक प्राप्त के विश्व क

्यावाय (का कार्य प्रात्ति विश्व के कार्य कार्य के कार के कार्य क

నాం

.

भक्दानी भने विकित्ता ना जनावानी जिल्ला माना कर वह नामका ने मना माना श्रीनी जिल्ला जनावानी किया माना के से भने के सम्मान के से भने किया के से सम्मान के सम्मान के से सम्मान के से सम्मान के से सम्मान के से सम्मान के सम्मान के से सम्मान के समान के सम्मान के सम्मान के समान के

मेलल का अर्थमानवानामिन १५ । लिहान भेथे देखियालक प्रशिवालिक प्रिक्ष में भेषामा प्रभागता विकि भाषाक महत्वा अस्पूर्वास्य । मार्यात्र भाषाक क

ाखज शार्ति वर्गेष्ट्र भाष्ठ विश्व दिन कि विश्व क्षेत्र कि विश्व क

328

प्रकारिक र्रेक अस्य मार्ग मार्ग कि । दे विद्योगियभाग सम्भाग समाय मार्ग विद्याल मिल्या कि निर्माण के प्रक्रिया मार्ग के विद्या के स्वाप के विद्या के स्वाप क





मुक्तव्यर्भभागिकाक्षां ना निभ्रतमूक्य: ना नगामाकाव्यीत्रताः गुकार्य न्यभाव्यनः ना ज्यागवाकक्षामाकक्षामाक्ष्यः मञ्चान णवे किम्अवर्श्वन् स्क्रियम् ।। कोगः क्रिनि : मार्कः भभन्यथे विद्यास्त्र व :कृष्ट्ये प्रधासामङ्करः नाडकाकाव् भश्छीमः म जवाजीममित्रक्षीं ने विश्वास्त्र ने विश्वास्त्र के विश्वास्त्र के विश्वास्त्र मित्र के विश्वास्त्र के विश्वस्त्र के विश्वस्त के विश्वस्त्र के विश्वस्त के विश्वस्त के विश्वस्त के विश्वस्त्र के विश्वस्त्र के विश्वस्त के विश्वस्त के विश्वस्त के विश्वस्त के विश्वस्त के विश्वस्त के वृद्यामानाज्ञयगद्भनमविजाः ।। अञ्चलपाधमिताकाविजीमः नत्माश्यक्षेत्रः क्ये पृद्धिन नामः (बात् अर्धामप्रस्तः ।। अङ्गिरिया महाना प्रदेशिय विक्षिण गाउरमाक्रिम्यमाञ्चामाञ्चामानाक्रमः वृज्ञत्मकाम्यामामकितिष्याक्ष्र्ता गाव्यक्रमेथात्रक्रम्यक्रम्यानकः ना म्र्लीयाननागृष्ट्रकः गज्ञवाजीनमविष् । ज्ञान्यावर्म्याजीनः निमः नर्वः निवम्याः । ज्ञान्या जीमन्यव्यव स्मानाका विद्यामाणिककातव्यः श्रीमण्डल्क्रायामाना किथार्कक भयार्मा १। द्वारा मान भाग प्राप्त विकार प्राप्त विकार के प्राप्त किया विकार के व अभिमात्मोणि ज्याया थाष्ट्रवाठ रमविव ने अर्गुक्त मिश्वामि लिएकां से लग्जामा ने रिज्याया वर्षे वाजा अधिमान्य में विश्व निव ना वर्ष प्राप्त ने विश्व प्त ने विश्व प्राप्त ने विश्व प्राप्त ने विश्व प्राप्त ने विश्व प्त ने विश्व प्राप्त ने विश्व प्राप्त ने विश्व प्राप्त ने विश्व प्त ने विश्व प्राप्त ने विश्व प्राप्त ने विश्व प्राप्त ने विश्व प्त ने विश्व ने विश्व प्राप्त ने विश्व ने विश त्मकातामिष्ठक्ष्य मराव्ने । जागक्रामि ममार्क्षक्रिय वाक्ष्मिय ना ना उठ स्वाक्ष्यामामवाके उर्वत्र मामार्क्षक्र त्ममामितायोगयगमित्रते गार्थाय लिख्य माठा कि युक्त अरम्मू क्रिक्ट गारिडाडर्क्य यामा मठयन् एम्प किमान गेथाव मामा अवस त्रा भाग निष्ठावभान्मा ना नजात निर्मेम जांग्रास्त्र मायु विभाग्य ने विश्व या श्रीमाय विश्व या विश्व ना महायु व জদ্বাে ॥ নির্সামার্থি প্রিত্তাক্তর কাতি কাঙ্গাক সাম্প্রত ॥ নির্সামণ র পরি তামি রশাদ্বাম্ব বনে মত ॥ বেদকাস্বরাত ॥ সর্জনকে প্রথমে স্থিমা

क्रायक्षिक्षं विद्या महिला के निर्मा के निर्माण महिला क्रिक्ष महिला क्रिक्ष महिला महिला क्रिक्ष निर्माण के क्रिक्ष महिला क्रिक्ष महिला क्रिक्ष महिला क्रिक्ष महिला क्रिक्ष महिला क्रिक्ष महिला क्रिक्ष क्रिक्

भामगृर गढ मूळा: ११ विम्भागिष्ठा छि छि छि ए मार्था विश्व शिक्षेत्र छ । अष्ट्रीम त्याम विश्व विम्न के विम्न के विश्व के व

क्षित्र । क्ष्रे उत्यापामां प्रमान्य विश्व ॥ अर्ड्ड नीज्य महात क्ष्रिमां मुख्यी । आङ्का क्ष्रिमां विश्व महिना महिना । विश्व प्रमान क्ष्रिमां क्ष

कवर मयेथ्वम् विलाणनः ॥ ४वन् गाम्यव्यमाप्रथ्यक्षाः मुलाम मर् ॥ अक्षा मन्त्री गास्त्री । ठाव वित्र । अयुव ने मन् जा ना ना कार्षाक्ष ने के भी कि ना प्रथम ना प्रथमित । या विष्या प्रश्ले कि निर्मा कि विष्या कि विषया कि विष्या कि विष्या कि विषया कि विष्या कि विषया कि विषया कि विषया कि विषया कि विषया कि विषया कि विष्या कि विषया कि विषया कि विषया कि विषया कि विषया कि विषया कि विष्या कि विषया क

किया अशिमात्या अश्वत्र प्रमान्त्र न्था श्वार प्रमानित्र प्रमानित्र प्रमानित्र क्षिति भे अप्यानि अश्वार प्रमानित क्षित्र कार्मा विष्ठ कार्म कार्मा विष्ठ कार्मा व

भागत्त्रत्त्रश्चातात्र्वत्वाणि । श्रिक्षश्च भगोनग्मः नाष्ठक र्षः नियोज्यार् । अभागातात्वा ननः क्रांचात्रम् रूप्येक् रूप्येक् रूप्येक् रूप्येक् ना क्रांकान्यात्र्वात् । अभागात्रात्र्वात् । विभागात्र विभागात्र । अभागात्र विभागात्र । अभागात्र विभागात्र । अभागात्र ।

उर्वायम्भू मात्र विवास व



जलकाणिमृद्धिनेः भवीनाक्षायम्भञ्चाका । युम्कमृद्धिनेः अविभविताकुकालिकनेश-धिकिन्मिकनेभवितानेभविद्योग्रहे । अवसान्भावपर क्षेत्रमर्शिष्ठमम्लाता मेर्क्तिविणामिनम्बद्धानिष्ठम्। वर्षाच्याम्बद्धानायकविक्षाचित्रम्भायाः । अपन्यादिविचारिपाक्षिण क्ष्र अन्यम । द्रिक्षणके बहार अभ्यामिक । ज्ञान विकास प्रे अभ्याभवाषात । मिलिक्ष १ विश्वताप्रत्मावन गर्भामन कि क्षिण । अनेत्वकार्गण्येत्र अन्यानिव विनयंत्र । वस्तु विभागण्याकः नर्गाकारियावमा भाषायायायायायायायात्राकाराकाराविक्रियाप्रकराह अर्ण्यकाण्यगरिकासिम्सानासायाजेनजान । विनानम्मानिमेनामण्याचि हुणाणात्रिक्षण । विस्वण्याच्य स्रेराप्येणस्रविद्यसियावराज्य। स्थान वक्त वारामणीविक्त भण्ण भू अने १ नव करे के किया वस्त रहा श्रुव के लिए विक्त वारामण के विक्त कि मामाज्याति मिनिक वा । असमाजना स्वापालिक प्राप्ति । एक श्रिक । एक श्रिक मिनिक स्वाप्ति । विकास श्री भी विकास विकास । मानग्रह्मकानगानगान्। अवस्थानामानम् व विश्व द्वावमयो के यह । मर्थमण्यकागार्थामानिय एथ्रं व । उच्यायाच्या म्हार्था मन्यक्रावाग्रमान । कुक्राणमभीत्वर्यान क्रम्मर्थाच्यक मात्राविभात । मिक्वान यक्राच्यक में क्रियान क्रिय

श्रुला थिए निम्न वार्य ने विन्न विन्न । विनास ने निम्न स्था क्षा कि वार्य ने विन्न विन्न विन्न विनास ने विनास न सानायक्षाप्रमान्यक्ष्रभाषाक्ष्यां स्विता विभिन्नेताम् भागासान्य स्वाताम् भागास्य । स्वाताम् स्वाताम् स्वाताम् त्रेक्त जितनी मात्रेड वर्ग रे में भारति सिन्छ भारति वर्ग के निम्नो मात्रा किया मात्रा किया किया किया किया किया माविमाणिक्रमोक्टर। भूतर विनित्त भया सवस्य महाविमाल्यः - १ भूवरणिक्षक मण्यात्र महावाषात्र । भिषावासात्र समाविमालया भागाविमालया । तिकित्मास्यास्य प्रमास्य प्रमास्य । अने स्मासी मासासी यो मालन रामान मान्यतामा मान्यता के नाम मिन्या । प्रमाद राह । प्रमादन । उपाविश्व श्राप्यक्षणाय श्रिकारी एतिया । उदाचार्या तसूरवाय क्रामिक्तिका । मिल्डाम् किम्पा करिक मिया भिरः न्त्रावात्र श्रेकाशाक्याः । यमात्रिन त्र्या पुत्र कि विक्राह्यः ग्रयग्रम् विक्रितंका भेरमम्राजितः। ग्रथाविक्रिकेणिमकेण्याः प्रविक्रिकेणिमकेण्याः प्रविक्रिकेणिमकेण्याः प्रविक्रिकेणिमकेण्याः शामक्रांत्रिकार भ्यामशाप्तर गर्ग शिक्या वर्ष अन्या जाति प्रविधिकिकिक्योवस्थात्रस्थात्रम् विष्याचित्राचित्रकार्यस्थात्रम् । विक्यात्मर्गर्यस्थात् । विक्यात्मर्गर्यस्था अनिनारस्थानभाषान्त्रमित्रकृतिर् विद्याप्यास्थाम्। अभिनामानिकाम्योक्तिमान्त्रम् । विद्यामानिकाम त्वातीर्गात्यः। भिन्नुवर्श्विष्ठभविष्ठभविष्ठाप्रभोगितिर्गः । भारति । विश्वानिर्गः । विश्वानिर्ग

इन्मिल्लि

भिर्म्मामानी प्रवासामाना के प्रविद्या विकार प्रवास कार्य प्रकार के प्रवास के विकार निर्माण के निर् व्याप्रजालिकिक सालायाकार्यक । वम् श्राप्त अयरिषी ययर मारा राज्यान । जन्मा नाष्ट्रमा विद्वारा मानि मारा में श्रम विश्ववास्थिता। मिनिया। मर्यय गणाना वह विमिनि मरमा । विम र भानेयुक्त कार्य क्रमावव्यव । मुखानी जिन्दे विक्रिका वापनी वा क्राविका महान्य निर्वाया कि उत्ति निर्वाप प्रमान पानियुका रह में नाम के अर्थ मार्थ । अया के कि मनायां ह अभवीिक जित्राण्यया । अष्ट्यानी वामारेवाण प्रमान्मरा मुखि या करिष्यक्र सम्मामी क्रिजी जांच्यक्त कर के समर्थ निव प्रतिस्था माल खनवाधारकवरवालावीम विश्वाल । यामारा विषया है मार्विम्या न्यादिक बाठ १ श्रीका श्रीक मराश्रीक मकाय गा प्राप्त में निय अल्डाल त्रायण्याय । एवं कि हो ते लिप मात्रार श्रेष्ठातिक वार्गतः । श्राणित्र म्हमवाय प्रते । हात्र के कार्य श्रेष्ठा के विषय भीमा मसीयोवः गामकायाणे निमयाम्ममाशास्त्राम् मनिमयम। कानिस्नमाणिकानानाने मद्राप्रमाशाया । प्रविद्धिः वाठ । यथाविविधिषाप्र नापराम राशिकालिक। तार्मार तरेक जीव दीनः सर्वे भागिकालिक । वार्मार वित्रो मुख्य स्वी वार्मार वित्रो प्रमान वित्र वित्रो के वित्र वित् <u>्रशीगशलवंडवाड १ रालव्यक्रा मार्थास्था मर्थिर्वावपर्छ पा। मरीमार्डा मार्था मार्था मिर्गाय के वाला पर्गाय के प्र</u> दिए मन- । वा भेगा विक्रण मुग्न विक्रिया में प्रतिक प्रति । जा कि विक्रम मा गर्वा है जा कि मन्य क्रिया ने विक्रम क्षीचित्र वण्ण वामका वास्त्र किन ग्रामकाल मूरवन्त्रेषी । अर्था क्ष्म किना गांग्युक मक्ता प्राम्भावा । भीवन्त्र क्षा प्राम प्राम । भीवन्त्र क्षा प्राम प्राम । भीवन्त्र क्षा प्राम प्राम प्राम । भवन्त्र क्षा प्राम प्राम प्राम प्राम । भवन्त्र क्षा प्राम प्राम प्राम प्राम । भवन्त्र क्षा प्राम प्राम प्राम प्राम प्राम प्राम । भवन्त्र क्षा प्राम प् नियार्थ। नगिमिथाउन्यम्यांकनविष्यु वाकविष्ये । देलुका मक्त्यन भागम्य विविष्य क्षा । श्रामा मक्तिया मन्ये भूना -देशिक्षीमहानामेनार महाप्रवाता महाभार्थाता महाभार ।। विकास देशिय - इनीह । रिहासार्य मानी विकास के बार के का का का ना निक्र कि हु । निव गाउँ निव्याहिता किला । प्राचित्र मानिवाम अन्हर् -शावयार्गमनक्षमनमायण्यकामिवापिति । मगुनानिकामी म्मिन्न मान् मत्विक्षिण । भिक्रवाह । तिव मिरिष्टि विक्राण प्रमाणिममाठव ॥ जानामानग्राभेमन मन पेरिवय नेमम -रिक्यण्नकपाछन । प्रभाणमानामासक्वरमापनम्भग्रास्वे व ा याज्यामिए अयार् प्रयामियानियानि । नारामान विमानका मनानण्यवानिकाले । श्रीयानकामकामकिएमिन्यनिकारोः वय । भागोववानकामन मवनामकि विकार । जाने कामे वेत्र स्थान र लियान भवमानव । अशासानिकमहत्र मानायक्ष मेमानाय । जनामानाक मना एमक आमानाक विक्तित्य । जनमानाक मना मान वर्गामान । जामाश्रावश्रमां भागा क्रियां के । अमानिक प्रायां क्रियां के प्रायां के विकास । जामानिक प्रायां के प

अथिकालिकः। बन्नालिक्र ममार्ग्यक्त यपामित्रा प्रवालकात् । कतिकालिक्षति । क्षेत्रा मन्याने मार्ग्या । क्ष्रणानिक्र वित्रा व विन्त्रवर्ग निक्तालामितावना न्या श्रीतिक र क्रिय । न्या नि कि सममाम्ही वामामार् नेवी । किन प्रशिक्त माना हुना नक विराणीत । कुलिलिवनगान्थनावापाकुमान भूष्टः । प्रभान । प्रमान । प्रभान । प्रमान । प्रम ग्राट् मनागाला क्यात्क जर्भनान श्रन्थे। विश्वाद्य प्रात्निन्दी राज वर्षः। नावपदवाठ । भूगाप्त्र मारिभान प्रमास अर्थन्छन । उवारा वाने ना कार्य का वाशिय के मुख्य था। भर्त भव में मासा कारक महात्रामा मस्तिमार्गमार्गन । क्रिनिक्त का भवा मुनामम निवास का भवा मुनामार्ग निवास मान्य राम्भिक । ६िक मूर्वायास्त्र गामन । भिरुष्याह । वित्त भूभा मामेर स्वाया । यथा वित्य भूभा मामेर स्वाया । यथा वित्य भूभा वित्य । यथा वित्य भूभा वित्य । यथा वित्य । यथा वित्य । विद्या ।

भिकाशास्त्र मा अक्षावराणि त्याज्ञानमा राम्म निर्माण क्षेत्र का मान्य का मान उच्चा वितित्व विकालियां के वित्र विकास के वित्र महिन्द्र ! अवाम्मानम् । अवान्य मान्य मानिकार्य मानिकार्य । अस्मिन्निक मानिकार्य । अस्य मानिकार्य । अस्य मानिकार । अस्य मानिकार्य । अस्य म्बार्याचे । हामाश्रामिक्य च्या महाराष्ट्रिया महाराष्ट्रिया श्राणिकिकाण्यावातका पक्षिणे विष्ठ विष्ठ अभिश्रामश्रामका प्राणिक मभागः । भिरंदरम् । नज्यशंकान पूरान्यावाविष्णिकम् । विमाल-मामण्यामा अपायन अविक्रित । प्रतिम्न प्रकृत प्रक्रिक विक्रिकाचन ह श्रीग्रांत्रवाश्र्विक्वाक्रिक्वाक्रिक्षाक्ष्मिक ॥ मन्त्राठ ॥ यात्र्या तिवस्तावन्त्रत्रत्वत्रत्वत्रत्व विश्वनात्त्व विभाष्ट्राचान्त्रत्यत् विमानाजः॥ विभवनवीक्षा प्रशास्त्रम् अधिकार्त्रनः भूतः सिर्वेदीविनेस्तर्काः। अवानायवेठ । अवाक्षेत्रका विश्वास्त्रिम विभिक्ति मार्गिक विश्वास्त्रिक विश्वास विष्यास विष्यास विष्यास विष्यास विष्यास विष्यास विष्यास विष्यास विष्यास विष्या अर्वाभाषान्त्रवर विम्नानिक विभागिक कि महालिया । अवस्थान मामजावना । माना विमान कि महिला निक्षित का महिला निक्ष जित्तक राष्ट्रका नमा अपनि मार्क । निवन में कि तम में कि के नाम के मिन कर रिव के मान मार्थ मान मार्थ में विकन में कि नाम में मान मार्थ मार्थ मान मार्थ मान मार्थ मान मार्थ मान मार्थ मा भाषान्थी विजायकार्म । शक्तायामिकार्त्रविशिव्यम्बर्गम् । यामकार्येशिकाम्मिनाश्चामिकार् । भागात्रावनाया विकास मान्याने जाने वीर । प्रायण्डन नामा विकास कार्या । वास्त्र मार्थ प्रायम । वास्त्र । वास्त्र

नियां भेग का विक्रियों या नाम मार्थ । अपार्य नामिश्रय या नाम श्रेमों अधिय स्थान मान मारा प्राप्त विक्रा विक्र नाक्तरान्सिक्ष्यकामस्य । अज्ञान्सिक्स्त्विनिक्षिण अभाविक्तन नामानिक्रियक्ष्यक्ष्यक्षित । अवतिकामियाकिक्षित्र विक्रम् विखान है अर्था महिला मान्यविष्य मूझा विषय । अनी मान्य महा विषय महिला । अनी कान महिला मिना निर्मा के प्रति । अनी कान महिला मिना निर्मा के प्रति । अनी कान महिला मिना निर्मा के प्रति । श्मीतात्था राजात्वर । नवासर विवणस्य मना मण्यक्षिणा विकण अगानिक जीताम्बारित है भोति कार्या व वहरू ने तेत हित्य प्रयोगी नेया क रमश्रकात। मानामार्गमन मूखा विनामान म्या । इहिल । मन्याही -अमालामान मन्द्रीयालागा छित्र प्रमानिष्ठ । ४० सम्म सम्बन्धिय ने वाकाविकारिक ॥ शिक्यवाह ॥ नेवाद गोक्य विवास वाका काम विमामित भे यक्र मारामित्र व श्री हो निर्मा निर्म भागरार्त्रान । मकविश्वालिमामामामामा उपप्रति । मन्ताह। प्र हर असाम असाम कि वानिया जिसे वाठम । सम्राम्भव गायि विस्तात. यात्रियात्रमाण्यम् भावति द्वानिक । स्वाह्मस्रविणा (प्रवानिक माल्योव । स्वाह्मस्य । स्वाह्मस्य मान्या । स्वाह्मस्य । स्वाह् मुलग्राकाम्य । यमकाताष्ठ मना क्षावाका का का का वा वा वा माया के वा भारत के बाम का वा वा वा वा वा वा वा वा वा व मिल्लिक्रिक्षानाकान मन्त्रिक्त असार् लिकेल्य वृत्र गांत्रिक्षान्य मन्त्र । स्विक्षिक्ष स्व विक्रिक्ष स्व विक्रिक्स स्व विक्रिक्ष स्व विक्र स्व विक्रिक्ष स्व विक्र स्व विक्रिक्ष स्व विक्रिक्ष स्व विक्रिक्ष स्व विक्रिक्ष स्व विक क्षित्र वार्षिक विकास मन्त्रा में एक मात्रा वार्षिक विकास क्षेत्र वर्षानवाशास्त्रामा निर्मातिका । जाम विकित्ति प्राप्ति । महिल्या । महिल्या । महिल्या । महिल्या । महिल्या । जाम विकित्ति । जाम विकित्ति । महिल्या । महिल्या । महिल्या । महिल्या । जाम विकित्ति । जाम विकत्ति । जाम विकति । ज

मन्त्रविधानाशिविष्णां विष्णां मलीला मास् अञ्चामाजिक अपनि मम् ठम् नाक्षिश । भीकान भागमा मन्त्र । १ मामाज महान महान महान महान माने । १ मामाज म अविशानिकायाश्वत्रया निगमना निमिन्निकारे। विमुक्ततानी विविधारि महिना हुउ के का विमिन्निकार । भव वित्ता क्टां अफ़िक्मिराजीव रवाववी ए। का प्रण्यामिकी प्रमणवाहि व्यागेरक्टा । प्रम्वाह व नविभिन्निक्शाप्त में कि विश्व विश्व । में कि अराजाना मूर्यो । श्रूमाकरी इमार अमी मामा माना निर्मित वे " गीधक्रक भारतावाका स्थापिक वित्रम्य स्थापिक में कार्यकार्यामानिक्यानकामियाम्। लक्ष्याहः। त्यारा भिकडवां के गाः कि बामलिय विभिन्न मुने का मेरा स्वात्रमा । त्रीय अवनिमानिकाम्बाना ने क्रिका । नात्रका । श्रवण श्रवता माना नी जीवाता हमा। स्मान के खियो मियो से मि भरामार्थ । सामग्रावयण्यातिनी असम्भाव । स्थानिक स्वाप अत्य मालवी विश्वीसिङ्गिया । रिमानवासि त्रम्सा मशाविका वीका निर्मा विकास के वस्त्रवी वात्यीयात्र मश्राविकात्मय माञ्जानाचिका । नीनाकार्याद्वा प्रविकामात्रका । ज्ञानिका महाविकामात्रका । ज्ञानिका प्रविकामात्रका । ज्ञानिका प्रविकामात्रका । ज्ञानिका । ज्ञान अवार मिला प्रशास के के विष्य के विषय क अवगाजा अपातिरा अधिका ना माह्यां ना ना गाठहारेन (मान्द्रमध्योगने । स्थापने निवास निव अस्ताता प्रतिया व प्रकामना । यामाहन भ्यामा नवा उत्थायकः लि-।अखाखेरा

वास् उर्भेकाशालकरात्र्यार विकृति । उत्तर्क्यार विक्रियमाञ्चालय वा । श्रेलमानि मफ्जानं वा विक्रामित्र मिल्यार । श्रिक्वार । अवारिका त्रियंत्मिरात्रेक्षण्याक्षेत्रवित्र । वेरणक्षित्रयण्याणियण्याक्ष्याक्ष्याः । कार्यात्रियाण्याम् रूपक्षाकार्यात्र वार्यात्रियाण्याम् जाणिक व्यंती काल । व्यापार त्याव विम्या मारा त्या विम्या मारा विस्था मारा विम्या मारा विम् महाकीताविम्यावर् केल्लानी काम्यानिका काम्यिका निकानिका अमा । महमानी मन्याना देशमध्यमाकाता । अतियोग महापाता क्रास्थानमंत्रेष्ट्या विगम्बनातंत्र वानात्त्र विक्रास्थर् द्वा -1व "मभीब्रामा क्षेत्र महमालय नायम । व्यक्त रिपी वर ही " ता भी विव्यक्ष । इस्ट्रेश्वरणाद्वाराहम्बार्म् राज्यायेवा । इस्प्रमान कामाग्राम्नारम्भारमार्थान्यम् । महाजीमार्थान्ववाम्थमान् क्मान निकालका मान्यी। श्यादेशमण्मश्मामश्चाम । । । । व्यक्तिगणितारिक्षेष्ठनमञ्जूण। अवग्रममाजायवण्यज्ञानकान्जान सिक्नमाठनारका । हतात्वात्रात्र कार्याद् नामकश श्विमाना विवशास्त्र एवर । अर्था विश्वाय विश्व विष्य विषय विष्य विष वानवड जिल्ला के मानव विकास का निर्माय का माना की नाम करते । विवास माना के मान में के मान का माने के मान के मान

मर्द्रिम्लोश्चपावसार्थेव । शामक मराभवार्माद्र मामुज ग्राध्यम्भात । रत्यामामश्चापव अवार्णम्म क्वान्त्रिम । नगकणामाम वर्मरमाध्यमसम् । अभाग मूर्वप्रकाली मर्मासार्गास्त्रा माना । अभेगु म्मो नावणा कि विम् प्रमास्य । असे भागार् वर्ग वास्य अतिशाक्त विश्व विश्व विशेष विश्व विष क्रिजाना नी विव्हिजी जी मका भी नी ने मुस्सक भी मिति द्वारम्य अध्मयास्थायां याचा मान श्रेष्ठ भागितां । भागे । अभिज्ञा ्वाधानमीवश्रम्म हान्याभानन्त्रीभान विविधानम् लाङ्का वन्यमा । प्रमानिक शेर् भ्रविष्यमारु म्मिन्यम जा अर्वापहिनः १ हाथार्थयाणिमार्जीवा विज्वीयस्थ्याजान भार्यः माह्य अत्यासिममाभावः । को नी पत्नी अतिको पद्याविका म मून्य हमार्गवरमा मन विभावनामा में वास्त्रिय में भारती भरावरा देश में विभावनामा में विभावनामामा में विभावनामा में विभावनामा में विभावनामा में विभावनामा में विभावनामामा में विभावनामा म

श्रुवारम्मविविद्यमा । श्रुवम्बर्माविवान पर सम्मान्यवार हरूको । श्राहार्विव्यामाणिनाधिकाना । बाल ग्रेट । बामवर मूलिनिकानी । वामवर मूलिनिकानी । विचार । उसार्यन में जुले ज्ञान का जो कर अविकास । आर्थ माने विचार में में के विचार के कि में से कि में में के क गोन्नाला नाड्य त्यात्यात्राहणि मुन्धी ।। त्राशः भवित्र त्याणा नित्वत्यान्य । श्रमहात्राम् वाविषे वा महत्व व्याना वा वार्षि उन्मद्भाभावतारमणामवनम्याय । वात्रवाद्यप्रमान्त्यप्रभावताय्य माक्षाविष्ट्रियो । व्यवस्थाय । विवयस्थाय विवयस्थाय मादेशाते रेम्प्रमाठावर | यामाठिमारि। प्राक्षमावमायम् विकाल के । जामागामाथका कि रमका गाण्ड स्वना हेव । मार्कि एक गाणु व मुहनू में रिया है। मन् मन् भारत कर कर कर मार्च मार्च । त्राचन विकास गायुन्छ ए श्रीवन अभगति । श्रीवन अपि जिल्ला निर्मा के अपि है। वहा कात्रिक खेत्ररम्भावन महामाने वित्र उन्न विश्वास वेत्ररमा विश्वास विश्वास विकिश्वामाया कि के विकासीया के उत्तर है । भाषा देश विकास के मक्तिमामिकिक मिल्लिकि मिल्लिकिक मिल् भारतयाण्यश्चाम भारति । श्रेक्षाण्या प्रमाने अमाना महाम प्रमान के अमाना वा प्रमान विश्वा । भ्राव द्वारा विश्वा बगकाविधिति। वर्णात्मात्राक्षात्र प्राप्ता माना माना माना विश्वास विश्व अर्भागतिमार्भाविमार्भाव किर्मात्व । अप्रिशामवद्याव । भविष्यु मालामान्य मालामान्य । अवर्भवामिक ।

अश्रीतिव प्रवाले कि अलेक्ट्रान भागेक कर निमाध्यवस्था भूति: भूष्या विश्व असी भूति भूता भूता भूता भूता विश्व विश्व भागाकिनियात्वर्णाः स्वात्मेव विकिथ्यः म्यम्(भामकिकाः) अस्तिभात्य श्रहाविताः प्रमानोवर्गाः मक्त्रात्म नामावर्गान अम्बना १क्टाविमार कर्क में क्टाविद्वाने द्वा कर कर वर्गनाण्या वर्ग त्यकः प्रस्वे (गः यहाकाः । वरिविध प्रमा (नाकि जावल शिक्भे केन: कामने प्राचन (मप्यन माम) नावायने जिन्न विक् छ भवने ना नि थ्या विकास भने छि किंग भारता नक्ष्य का क्रिन्ति हिल के कि भगे या दि असे हैं। यो किंग्या मिक्त त्वार निवाद क्या के प्राचित्र के निवा निवत्र के रम्भादिनग्रिक न्भर्नासार्मिक्तिसारीक मारियोग यः क्रिये भारतियात्राहिकातिक क्रिये क्रिये (वागीनः भाकः त्यायम् विमायव गृद्धाः वास्ति हाम्यायाय व्यविशातिः गुर्वस्थायायायायायायाः

श्रावकान्यार्वियरः गिक्तिकानेस्विदिवनाका ममत्त्रकः ग्रामिकिकार्याम् । भिक्तार्थाना भिक्रिकार्याना भिक्रिकार्यान्य भशाशामिककानवियोवम्: एउद्योगिनियात्वनाव्यं मुक्तवियो पित्र प्रितिस्था भित्र प्रमिश्वा भित्र प्रमिश्वा भी अवागिमानभ॰ अरु रूखनी आभ (यार्थ 5: १ कार्य हिन् निराकार्भभाग्भभाग्यार्थर्थर्वकः भागिमभानः सिर्द्धन्त्रक मार्थनगर्भनः प्रकामिन्राम्ग्रित्राक मृश्या व्यक्तिक का भारत्या भव्यनेकने निक्तिण क्यानिकारी नीनयायकार एम (मन व रंगका । मीका निम्द्रम् तीर्या नाममा रिकाणिमहरीनावी कियानकी वितानेता निका म्बाकान्य्रभागेना निष्ट्या राष्ट्रक्य (मार्ग कर्ना थ लायक ग्यामेळा असने क्या श्रिक्ता वानन ह प्रामार्क महाने नारी लागवारी वित्माक्ति । कार्क त्र यही वित्माक्ति । वित्माक्ति वित्माकिति । वित्माकिति

-(वार्याभी रकता नेक्यान भागेतः । पृथ्विके विश्व क्या पृथ्वीन का विनाय है । एया भी वश्य भाग विश्व विश्व का भी कतः । न्यनांक जन्मार्मितियान्य मण्मेम् भारत्येव श्रानेका मण्येक मानमः नृष्याप्य हेन्न मानव स्वाय नी श्रान कुन्द्र क्र कर्य स्थितिका निक्ष का मिनी के म्योक्ष तः १ रर्ना श्रेक करो। जिल्ह्या मनवक्ता श्रे दा द्वार भया नीस्रिनीलिक प्रीक्तिविवादन म्याभाशिक्वा प्रवाण श्राकाभवातन (भादिकः भिशाक्त प्रकृतक स्पृथ्वे व्यान्ह्यर्वाजामा भरावन भवानमाः अथुना विदेशक स्ममण्याले विवास के द्वामा निम्म किन्न के प्रति के प्रति

मानिवि १यम् भाः रावर (वा यान्व शक्ष्य । प्रशाला विश्व विश्व प्रशाला प्रशाला । प्रशाला विश्व विश् क्रिनीस्याक्ति निगः भुभार्यस्थितं स्वयात्रभूत्रीनन विधियत किल् (या: प्रकार्य) प्रमान विद्या प्रिण भाभगान वर मुक्क क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट का अमेश्वरार्थे (वार्य में क्रानि मानिक क्री विद्या श्रात्म ह लिद्वनानिक मिने अध्याधी अधिक बि, विषेत्र । रेजिने व्यक्त अक्षित्र कि कि भी भी मह कि नामा कि विषेत्र विकित्त विकित्र कि विकित्त कि कि विकित्त कि कि विकित्त कि कि विकित्त कि विकित कि विकित्त कि विकित कि विकित कि विकित्त कि विकित कि वि विकित कि वि

वाक्षा खान्कायः । जिक्कांत्रकः व्यक्ष महास्थ्यान्वेवणाव्यव वारतः एवा अष्ट्यवलाः गृह्याने श्रीहि उर्ज्याः राज्यानः विवश्न मन् क्या गृहाति । क्या (वर्गः दिन श्री क्रक्यानि वर्षाक्षिः भूशाक्ष्यः वायश्चः क्यावनात्रेः मान्याना वर्षान् दिन्त्रेनः - जगीतभी मूर्यः नाजागी असेतीमी: मिक्ती अर्जने ने अववकामः मियमदः (नोमान: कना न द्यापः ग्यामीकः) श्रुकः श्रेषेकः मेर्पविष् मिन्निः । त्वृः अषः मनंव्ये ज्याद्रश्चीवाम्बीवाम्यव्याद्रशः प्रभेश्वर्माय विश्वः नियमः निवनः ननः नवः श्रुषंदीरु मिवानीरः (क्रमध्ये ज्याप्रेस्यादर्भः ज्याप्रवादिन् नेवः ज्याप्रायः विश्वर् वानिक्षिर्धीं माला वक्षी के विकासिक प्रतासिक वार्मिक के मान का नाम के मान के नाम के मान के नाम के ना भिक्त गार्थित्र भी शिवासी वेदन भी । पर्तार्थिव वेदन भी । पर्तार्थिव विषय स्थानित । स्थानित में प्रवास के प्रा

हम्यानी । इसायि। इस द्र्या या (तेया काणि) गर् (काष्ट्र दिक्तियान श्रारी कवकः विवस्ते प्रमायनः श्र भेयायाः प्रम क्षेनाम् ज्याक्ष वर्ष हो द्वाक्ष देशा भवः विषक् । विष्यः स्थिति दिश्वी विक्री विक्र मानार्व का मानी स्वीमनर्थनव वयः प्रभावयः में क्री केंद्रक्षी हिर्वेवाणे (प्रवाक्यः प्रकेवित मूक्ष्यायः अने स्थारः अन्तरः में क्री केंद्रका में क्रिक्योः श्रुवी स्वित्वाः मुखाकः कृतिकः दिन्दि विश्वत्या विश्वत्या स्वित्व विश्वत्या स्वित्व विश्वत्या स्वित्व विश्वत्या म्बीहिः क्योत्रेः स्विध्विनिय् यामामः विविहिन वितिः वार्गः कुर्ध्य म्विविक्येनः स्वीद्यिन स्वित्ववर्ष्ट्यायाः (नामः (नामक्य (कारिको व्यन् रेव्याप्येनाया क्यवया प्रवयाक विद्या विश्वका विद्या विद्या विद्या स्कािकः सक्तिकारा मिन्नेकोरा देवः पुरेः पित्यामे विस्मादिन प्रिकाचा व्यवक्ति । प्रिकाचा वर्षे वर्षा वाचित्र हाया भण्या । भण्या एः अद्देश का का विलिया । भाविति मुख विजिया मा अवित । अवित स्वाया दि अवि इ शास्या मन्देनामाध्यकः चिक्य श्रम्बाया व्यक्तिक अक्तिक श्रम् । विचिः विक्यामनाया गर्भेन राः स्थान्यवामान्यकार्यार्थां मान्यतः मान्यतार्थितिना प्रयानिक्यित्यः विकितीर्म्यात्रयानिकायात्रोष्ट्रः भीत्याः नहीं एका प्राप्त्र ने अर्जन्य प्रविधायान्य निमान्य विभान्य विभाव्यक्षित्र । विकित्यक्षित्र विभाव्यक्ष स्वया क जनामज्यका प्रेमे वहार ने जातिरः मेजानिरंक म्लोभानायाः गर्थापिरं गर्थापिरंक वाम प्रायाणक्रमका उन्न

जा है। यो यो देव अधियकः म्यायां वारा निम्न ने ति निमाण । विम । वार्या मी ते न्या ह व योगा के व निम्न ने ने ने नाम र कुन राहि में विशेष में कि कि कि कि कि कि कि विशेष विशेष में विशेष में कि विशेष के विशेष के विशेष के विशेष वारियू उ० भू मे वि वि कर का नाम अनि विभावान की शि निक्स के भू वह निकास में आ हिया । नाका वारि वभायतिक मन्ने व वाविक्तामक मार्मिया व ने मन्य क्रिक्ति के मन्या का वाकि ना निर्मात मक्षित्रिति उ पर के का मान्या के मह की वे के मह मरे मिल के कि रणेरात्रकर्णमारक्त माहि विकासि के का माहि ना के न जयाजिलिविरुक्त-मना इं इयु र नित्रा अश्वर दि । द्विर प्रा निषर्वात्रयात्री स्वीक्षा

रागिनिमोक्तार् । (त्रभंभानमं किस य ति हवरो॰ विश्वभान किसान यम्भिया निश्च वववंग्यस्व । वर्षाणा किया किसान विश्वभाग विष्यभाग विश्वभाग विश्व S. S. अयक्षप्रमान नाम निर्देशका नाम क्षेत्र क्षित्र क्षित्र क्षेत्र जनर जारि जात अभिरम्यिने काना यामि नेपूर्य विया ओदेना भजन विमो जा अध्यक विनामकन मनक्षिनाम त्मादिनी केषिक्षिनाम बर्ग क्लिअनियानदेनाम विजायलव्यने क Ella. हानर्वयुर्वयाकाभाष्य हान्छ शायवाक्ष प्रदेष्य वाक्ष वित्रमाना हिन अनमी नाद्ये क्या क्रिम्मा विद्यु क्रिया कि एक निवास क्रिया के अवदेना वाध्व करे क्रिया के क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क

में विदे: अव्य

म्बानल मुन् जि मुन्ति वह कार जान कार कार कार कार के कार कर्म अस्मान अनुना निकार असान क्षेत्र नितालिक राजि प्रतिवर्ष हत्वभावे धार्य भवः योग विश्व अवस्ति । योग विष्व अवस्ति । योग विश्व अवस्ति । योग विष्व अवस्ति । योग विष्व अवस्ति । योग विष्व अवस्ति । योग विष्व जामाड ः श्रुला हानाम् हिन् व्यात्रान्तिना निकास । क्रायेस प्रकास न्या किलायः जिन्ति मार्गा मार्गाण क्रिया क्रिको क्रिके क्रिके क्रिकेट जाराई अवस्ता वय्यानामा वर्ष निकाला वर्षानामा है। ते एक निकाला के निकाला के निकाला के निकाल के निकाल के निकाल के ण्डि प्रजिनक्ति यार्ष अवये भागवार्ष है। । विस्मानि प्राणे के उसे नियापः नि । अठ अवनिमान यार्ष केने निर्देश जिल निर्देश कि । विस्मानि । विस्मान अभिनक्षनशृत्ती अभिन्छ। ब्रेंगी वभिविद् के विभिना शिन करनविता अभिन वार्वनिष्ठिना कनित्रिक जानिक देन। अकार साथ अधिन करनिक विभेत्र अपनि अपनि करनिक भारक्षाक्तिः हमका यह me वः ॥ १३॥

क्छाद्विक्तः नार्गे दशायाक्वायमार्विक्षक यमिक्ष्याः नयेल (यातक्त्री नियानिक्वाया भावकानिक निर्वादिक विकायमार्थाय भरा वान्ध्य (वयह - गुक्क न भारत भेनाय हिमाया मिनीवर ने भीवर गर्म मिनावाय ने हेवाह गवा था वार्ष वर्ष विकास मिनीव किराय है । विकास में विकास के विहीर्किना प म्मिन् देशां निस् भवर्षन ना विहादी यर अहिन अववहास द्रांतर याक वर्षने व वाग ना अधिक विहाद में हर दीनान जिल्ला होता है। विहाद में अववहास देश हर विहास प्राप्त के विहास के विहास प्राप्त के विहास प्राप्त के विहास प्राप्त के विहास प्राप्त के विहास के विहास प्राप्त के विहास क शन्ति (वर्श्वायम्बर्गाः ११ कि स्वायाः

त्रित्रोखरू व्यक्तिक क्यल्क्यक्याक्र्याक्र्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्य

-नाउत्पर्क का भेजरम्

(खाःरुमि विशासिक प्राक्षः (माम किन्यम मिन्नि मिन्नि प्राप्ति किन्य प्रमित् प्राप्ति किन्य प्रमित् किन्य प्रमित किन्य किन्य प्रमित किन्य किन्य

ereachtet entition of property of property of the property of

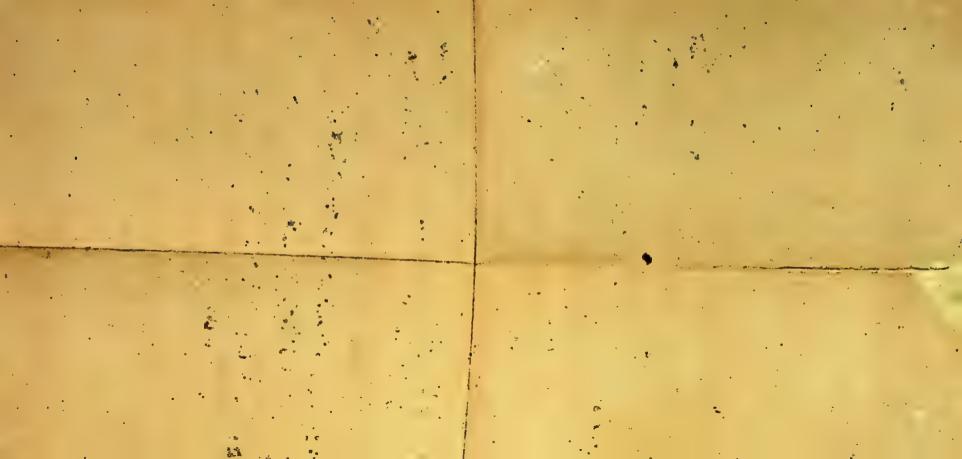
्रितिहारिक कर के के के के कि का का का का

ाल्याम् क्राच्यार) खाय) ह

मन्तियक जामाळा निर्माणका में किन्द्यामानका वास्तित । यमाणा निस्ति । क्रिका कि का निस्ति । वेष्यामानका विस्ति । नाकिन्मसम्बद्धा हिंदी प्राचा का मिलाका कि विक्ति के निक्ति के निक् क्षानावम् भिन् । अतिवानि विभागाशाए मन रव नृज्ञ गुर्वतः । इनामानि ममा साधानि निवन्न विभागानि मिन्निक व्यक्ति नामे देने आयान विकास माना वा ति । विकास । विकास क्वाह । मृग्निएम मगानांका प्रयानांचित्तां विष्ठ । महीक्व गपण्डल -अन्तर्भागहर्मन् अयप्रदेशकात्माणिक्राञ्चाक्राक्ष्यान्त्रः १ अवेर रण्यार में मां याका वार्षित मही प्रार्थ में वी । म्मारम्बद मां भी क्रियामी किश्नाची । इंडर्जी मादेशमञ्ज्ञात्र म्यायान्त्र ना । अन्द्रिया वित्रा जिल्ला ने श्रेष्ट्र वित्र यानिकः। विश्वा में निकासिक वानगामध्यम्मार्गता । भाषात्रविष् नेज्ञामानिम्लीस्वनम्य अन्। अरेशाम्याः भिवन् निम्नू न्वी हिंच स्थायहः। उद्धाया प्राम्याम् वामगडावामोनित्वमीर । जन्मजीमकामानिक्षप्रमानिका । अभागावाजीमक्या क्रव्यक्ष्य त्यामरात् । मानावाजीमक्या क्रव्यक्ष का गालका प्राणालिक। महित्र मुश्राम्भावता विकित्र महाक्ष्मण । बच्चु श्रामा महामा महित्र है। श्री प्राणालिक महित्र प्राणालिक महित्र । बच्चु श्री प्राणालिक महित्र । श्री प्राणालिक के प्राणा



-হীহ্য कका । हरें वासूर क्या क्या तर । विवाद मार्टि न्याकाः केन्द्रधारायन्त्राक्षतः। १ व्यास्त्रभारक्षाः ह मच क्रेट के न्यासर इंशक्टरें ता सलबेर इंशक्ट्र उताः । इत्योगिजितियानि स्थात्वार क्याताः क्याताः करः। नामः किकटे अपसमिति हिर्माणे : म्याधनः ALTERNA . मानिकानकामकामिक । अन्यवस्त्रीय विस्तर्भन क्यार्थ । त्याकात्म क्षाक्रमार्थकार त्या कि को श्वामिकरार्। माड्यः मान्याक्रियात्मार न्ताया अस्तर्हाः । स्थित कर्ताः अस्ति अत्र धाता । क (स्थित । अस्तिकः अस्ति। युर्वे अप क्रिक्किक्यूमात्रे तर् मिन्द्रियार्थित्रम् १० दिस्याः । राज्याः द्वित्रम् । ्रहिल्म क मेन्द्रिकार महिला महिला करा अवक गांतु रस्मा क्रिक्ट में महिल्दे । यहार कार्यहर गमाकारी विश्वास्ति के निम्हित्यमा भारती! वहार अवद्भाषाः। कृत्रमापानिमामन अवद् रेडियारीकः नि





म्यायमः क्ष्युकारण्या १: ४०५वः १०५वः स्थितः स्थितः भीत्यक्षाः शर्वतः स्थितः स्थितः त्यायभः भगः राष्ट्रा अध्या नियम् भाषात्रयः

यम् अत्र हमाः मिन जस्य मर्स्रात्वाः । वर्षयाया स्वसार्ण्डव निर्मात निर्मान कि । १०० वर्षायम् याद्यात स्वाधिक स्वाधिक

ग्रमीमार्ष्यविक्षान्। ग्रमारीमाउभानभाभ कानरीमामिकाः विकारीमाक्ष्य (विकारीमाक्ष्य) । विकारीमाक्ष्य (विकारीमार्थ मार्का (मार्थ) ग्रमार्क (भारतीका भाषा का भाषा का भाषा भाषा । भाषा श्रामिका कि व्यवस्था के भाषा । भाषा । भाषा व प्रभा ग्रमार्थिता भाषित्र के निक्षण में विकार विकार । विकारी ता निव्योशिमार्भ वास्त्र व्यवस्थिताः भाषा । भाषा । विकार विश्व विकार के विकार के निक्षण के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त विकार विकार विकार व

वामना विवर्गामनी विवानवाकितिका मुक्ति क्षिणिक समान क्रिक्तिकेशियः व

लो वर्गः भ्यामत्त्रजाभूतामम् विभेतवक आभाश्च रुखः कानभूता ने।

किर्क्नम्लानिना न्यारम् क्रम प्रम्यविक्रिक्तिर्गाणा प्रमा क्रिने क्रिने क्रिने क्रिने क्रिने क्रिने क्रिने क्रम

क्षित्रं अस्तरं विशासन्तरं विशासन्तरं (भरा । (कान अक्ता ि में एक माक्यीवय त्या देखा । किय्येत्यत পিত দেবান সন্ত একি আদ-মাত্স ছিজ্ত প্রাত্ত গুলোক কাত্র প্রামাত্র প্রামাত্র প্রামাত্র প্রামাত্র বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব भव्भा के रामालाकाका (हार्यवाभव वामा का भ्यामिक अले क्या पिक के मिना मने वर वर्ष पर रामिलाकान्यालीभ्रम्ब्राक्षक (माजान प्रतेनः । क्षिण हिः भक्तन यसि श्रके श्रमा २०० विख्याकिष्ट ाजीरमा अवक्रालभाष्म ने ने भामित मतिनेत् रूच राम का ने कि कि कि भन्द्भिन भन्या अस्तितिक्तितिक्ति । ने माध्य निवस्य विभाव दि प्रभाव कि श्रीक निर्वात कि माहका (कर्मवार्का अभेशक वार्क्या कर्मा कर्म कर्म अवता छ (वर्

いっととい बाठः रुध्य रुप्ता मानद्र मञ्जा क्र रात रहामतेमण्या भातानि भग्न । एवं अर्थकः रूपमेलाव (वं रात्र व म्याञ्चिभवंकी तिश्र मर्थि श्ख्य भयरकारि । रशेकाना के अश्रुकानी अञ्चल विख्यति भः न ३॥ (गामित्रमे अन्याव मार्व मार्व के किर्वकाव: क्यांनी मानि मानि मार्वा विस्टि र्रान् । अवन्तिमार्य मान्य मिलकारिकार्याः महारीनाम्बिक्यान्यात्मे शिकाना व वाद्य मिलकार्यात्मे भिक्याना व वाद्य मिलकार्याः महारीनाम्बिक्यान्यात्मे भिक्याना व वाद्य ने म

न्यभ किन किना १ में इवर में निर्माति । विर्माति । विरम्भिति । विरम निया मिया विक्रण (तारि भी विक्रण किया निया क्षेत्र क्

नाकारकाशिकिनिक्ति लीभग्यकितिकाः पृत्रात्वकः लिगिरिकाः रूपा जले अध्योगककात् (यक्ति। (म्यास्तितिकावाजाविकोस्यानभाम्रः निकाल्यक्षकायानाः विमान्ने विवाः स्रुगः। १० । स्मिलाक्षोत्रमे भारत्य दात्र क्रिक्स मिल्ड द्या व्यक्तिका का का भारत केल मनाविक्लेको मेंने का भी नव्यम्बिक्यव्याम्ब्रव्यारिकव्यक्षिणार्मक विष्:-१३ । निर्म्भाष्ट्रीय वर्ष्य ने क्ष्मान पार्मः । बार्श्वामः इंभावास्यः अभावस्य विश्वारं । निहत्त्रम् स्वति । विश्वारं । विकार मान्य कार्यामे श्री स्वार मान्य क्ष्रिक स्व क्ष्रिक स्व क्ष्रिक स्व क्ष्रिक क्ष

क्ष ने ने बारक

श्रिक्ष भित्र भित्य भित्र भित

श्ववानात्म ।

at the said was the said of भीनीयन भेनी जाना क्ष्मानी प्राचन के स्व मुल्लेन त्या विश्व कि विश्व कि के देख हैं ने के क्ष्य में श्रुप्त के की दिनः । कार्यास्त्र स्तर



